الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾

जो रब सारे जहान का उस का कोई शरीक नहीं मुझे येही हुक्म हुवा है और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं[340]

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ

तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के सिवा और रब चाहूं हालां कि वोह हर चीज़ का रब है[341] और जो कोई कुछ कमाए वोह

اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ

उसी के ज़िम्मे है और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी[342] फिर तुम्हें अपने रब की त़रफ़ फिरना है[343]

فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ

वोह तुम्हें बता देगा जिस में इख़्तिलाफ़ करते थे और वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें

الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَاۤ

नाइब किया[344] और तुम में एक को दूसरे पर दरजों बुलन्दी दी[345] कि तुम्हें आज़्माए[346] उस चीज़ में जो

ع ٢٠ النصف

اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾ ع

तुम्हें अ़ता की बेशक तुम्हारे रब को अ़ज़ाब करते देर नहीं लगती और बेशक वोह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।

اٰيَاتُهَا ٢٠٦ ﴿٧ سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ ٣٩﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

सूरए आ'राफ़ मक्किय्या है, इस में दो सो छ[6] आयतें और चौबीस रुकूअ़ हैं[1]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला

340 : "अव्वलिय्यत" या तो इस ए'तिबार से है कि अम्बिया का इस्लाम उन की उम्मत पर मुक़द्दम होता है या इस ए'तिबार से कि सय्यिदे आलम ﷺ अव्वले मख़्लूक़ात हैं तो ज़रूर अव्वलुल मुस्लिमीन हुए। **341 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार ने नबिय्ये करीम ﷺ से कहा था कि आप हमारे दीन की त़रफ़ लौट आइये और हमारे मा'बूदों की इबादत कीजिये। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वलीद बिन मुग़ीरा कहता था कि मेरा रस्ता इख़्तियार करो इस में अगर कुछ गुनाह है तो मेरी गरदन पर, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि वोह रस्ता बात़िल है ख़ुदा शनास किस त़रह़ गवारा कर सकता है कि **अल्लाह** के सिवा किसी और को रब बताए और येह भी बात़िल है कि किसी का गुनाह दूसरा उठा सके। **342 :** हर शख़्स अपने गुनाह में माख़ूज़ (पकड़ा हुवा) होगा दूसरे के गुनाह में नहीं। **343 :** रोज़े क़ियामत **344 :** क्यूं कि सय्यिदे आ़लम ﷺ ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं आप के बा'द कोई नबी नहीं और आप की उम्मत आख़िरुल उमम है इस लिये इन को ज़मीन में पहलों का ख़लीफ़ा किया कि इस के मालिक हों और इस में तसर्रुफ़ करें। **345 :** शक्लो सूरत में, ह़ुस्नो जमाल में, रिज़्क़ो माल में, इल्मो अ़क़्ल में, क़ुव्वतो कमाल में **346 :** या'नी आज़्माइश में डाले कि तुम ने'मत व जाहो माल पा कर कैसे शुक्र गुज़ार रहते हो और बाहम एक दूसरे के साथ किस क़िस्म के सुलूक करते हो। **1 :** येह सूरत मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई और एक रिवायत में है कि येह सूरत मक्किय्या है सिवा पांच आयतों के जिन में से पहली "وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِیْ" है। इस सूरत में दो सो छ[6] आयतें और चौबीस रुकूअ़ हैं और तीन हज़ार तीन सो पच्चीस कलिमे और चौदह हज़ार दस ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

الٓمّٓصٓ ۚ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ

ऐ महबूब एक किताब तुम्हारी तरफ़ उतारी गई तो तुम्हारा जी इस से न रुके[2]

لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ اِتَّبِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ

इस लिये कि तुम इस से डर सुनाओ और मुसल्मानों को नसीहत ऐ लोगो उस पर चलो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास

رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَكَمْ

से उतरा[3] और उसे छोड़ कर हाकिमों के पीछे न जाओ बहुत ही कम समझते हो और कितनी

مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾ فَمَا

ही बस्तियां हम ने हलाक कीं[4] तो उन पर हमारा अज़ाब रात में आया या जब वोह दो पहर को सोते थे[5] तो उन

كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَاۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾

के मुंह से कुछ न निकला जब हमारा अज़ाब उन पर आया मगर येही बोले कि हम ज़ालिम थे[6]

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ

तो बेशक ज़रूर हमें पूछना है उन से जिन के पास रसूल गए[7] और बेशक ज़रूर हमें पूछना है रसूलों से[8] तो ज़रूर हम उन को

عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ٍالْحَقُّ ۚ فَمَنْ

बता देंगे[9] अपने इल्म से और हम कुछ ग़ाइब न थे और उस दिन तोल ज़रूर होनी है[10] तो जिन

2 : ब ई ख़याल कि शायद लोग न मानें और इस से ए'राज़ करें और इस की तक्ज़ीब के दरपै हों। **3 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़, जिस में हिदायत व नूर का बयान है। ज़ज्जाज ने कहा कि इत्तिबाअ़ करो क़ुरआन का और उस चीज़ का जो नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم लाए क्यूं कि येह सब **अल्लाह** का नाज़िल किया हुवा है जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया : مَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ...الاٰيه या'नी जो कुछ रसूल तुम्हारे पास लाएं उसे अख़्ज़ (क़बूल) करो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं उस से बाज़ रहो। **4 :** अब हुक्मे इलाही का इत्तिबाअ़ तर्क करने और उस से ए'राज़ करने के नताइज पिछली क़ौमों के हालात में दिखाए जाते हैं। **5 :** मा'ना येह हैं कि हमारा अज़ाब ऐसे वक़्त आया जब कि उन्हें ख़याल भी न था या तो रात का वक़्त था और वोह आराम की नींद सोते थे या दिन में क़ैलूला का वक़्त था और वोह मसरूफ़े राहत थे न अज़ाब के नुज़ूल की कोई निशानी थी न क़रीना कि पहले से आगाह होते अचानक आ गया। इस से कुफ़्फ़ार को मुतनब्बेह किया जाता है कि वोह अस्बाबे अम्नो राहत पर मग़रूर न हों अज़ाबे इलाही जब आता है तो दफ़्अ़तन आ जाता है। **6 :** अज़ाब आने पर उन्हों ने अपने जुर्म का ए'तिराफ़ किया और उस वक़्त ए'तिराफ़ भी फ़ाएदा नहीं देता। **7 :** कि उन्हों ने रसूलों की दा'वत का क्या जवाब दिया और उन के हुक्म की क्या ता'मील की। **8 :** कि उन्हों ने अपनी उम्मतों को हमारे पयाम पहुंचाए और उन उम्मतों ने उन्हें क्या जवाब दिया। **9 :** रसूलों को भी और उन की उम्मतों को भी कि उन्हों ने दुन्या में क्या किया। **10 :** इस तरह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक मीज़ान क़ाइम फ़रमाएगा जिस का हर एक पल्ला इतनी वुस्अ़त रखेगा जैसी मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान वुस्अ़त है। इब्ने जूज़ी ने कहा कि हदीस में आया है कि हज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में मीज़ान देखने की दरख़्वास्त की जब मीज़ान दिखाई गई और आप ने उस के पल्लों की वुस्अ़त देखी तो अ़र्ज़ किया : या रब ! किस का मक़्दूर है कि इन को नेकियों से भर सके। इर्शाद हुवा कि ऐ दावूद मैं जब अपने बन्दों से राज़ी होता हूं तो एक खजूर से इस को भर देता हूं या'नी थोड़ी नेकी भी मक़्बूल हो जाए तो फ़ज़्ले इलाही से इतनी बढ़ जाती है कि मीज़ान को भर दे।

www.dawateislami.net

ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ

के पल्ले भारी हुए[11] वोही मुराद को पहुंचे और जिन के पल्ले हलके हुए[12]

فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ وَ

तो वोही हैं जिन्हों ने अपनी जान घाटे में डाली उन ज़ियादतियों का बदला जो हमारी आयतों पर करते थे[13] और

لَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا مَّا

बेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में जमाव [ठिकाना] दिया और तुम्हारे लिये इस में ज़िन्दगी के अस्बाब बनाए[14] बहुत ही कम

تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ ع وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ ع ٨

शुक्र करते हो[15] और बेशक हम ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक़्शे बनाए फिर हम ने मलाएका से फ़रमाया कि

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾

आदम को सज्दा करो तो वोह सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस येह सज्दे वालों में न हुवा

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ

फ़रमाया किस चीज़ ने तुझे रोका कि तू ने सज्दा न किया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया था[16] बोला मैं उस से बेहतर हूं तू ने मुझे

مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ

आग से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया[17] फ़रमाया तो यहां से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहां

تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ

रह कर ग़ुरूर करे निकल[18] तू है ज़िल्लत वालों में[19] बोला मुझे फ़ुरसत दे उस दिन तक कि

11 : नेकियां ज़ियादा हुईं **12 :** और उन में कोई नेकी न हुई, येह कुफ़्फ़ार का हाल होगा जो ईमान से महरूम हैं और इस वज्ह से उन का कोई अमल मक़्बूल नहीं। **13 :** कि उन को छोड़ते थे झुटलाते थे और उन की इताअ़त से मुंह मोड़ते थे। **14 :** और अपने फ़ज़्ल से तुम्हें राहतें दीं बा वुजूद इस के तुम **15 :** शुक्र की हक़ीक़त ने'मत का तसव्वुर और उस का इज़्हार है और ना शुक्री ने'मत को भूल जाना और उस को छुपाना। **16 मस्अला :** इस से साबित होता है कि अम्र वुजूब के लिये होता है और सज्दा न करने का सबब दरयाफ़्त फ़रमाना तौबीख़ के लिये है और इस लिये कि शैतान की मुआनदत (दुश्मनी) और उस का कुफ़्र व किब्र और अपनी अस्ल पर मुफ़्तख़िर (फ़ख़्र करने वाला) होना और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के अस्ल की तहक़ीर करना ज़ाहिर हो जाए। **17 :** इस से उस की मुराद येह थी कि आग मिट्टी से अफ़्ज़लो आ'ला है तो जिस की अस्ल आग होगी वोह उस से अफ़्ज़ल होगा जिस की अस्ल मिट्टी हो और उस ख़बीस का येह ख़याल ग़लत व बातिल है क्यूं कि अफ़्ज़ल वोह है जिसे मालिको मौला फ़ज़ीलत दे, फ़ज़ीलत का मदार अस्ल व जौहर पर नहीं बल्कि मालिक की इताअ़त व फ़रमां बरदारी पर है और आग का मिट्टी से अफ़्ज़ल होना येह भी सहीह नहीं क्यूं कि आग में तैश व तेज़ी और तरफ़्फ़ोअ़ (ऊपर की तरफ़ उठना) है येह सबब इस्तिक्बार (तकब्बुर व ग़ुरूर पैदा करने) का होता है और मिट्टी से वक़ार, हिल्मो हया व सब्र हासिल होते हैं मिट्टी से मुल्क आबाद होते हैं, आग से हलाक, मिट्टी अमानत दार है जो चीज़ उस में रखी जाए उस को महफ़ूज़ रखे और बढ़ाए, आग फ़ना कर देती है, बा वुजूद इस के लुत्फ़ येह है कि मिट्टी आग को बुझा देती है और आग मिट्टी को फ़ना नहीं कर सकती, इलावा बरीं हमाक़त व शक़ावत इब्लीस की येह कि उस ने नस्स के मौजूद होते हुए इस के मुक़ाबिल क़ियास किया और जो क़ियास कि नस्स के ख़िलाफ़ हो वोह ज़रूर मरदूद। **18 :** जन्नत से कि येह जगह इताअ़त व तवाज़ोअ़ वालों की है मुन्किर व सरकश की नहीं। **19 :** कि इन्सान तेरी मज़म्मत करेगा और हर ज़बान

www.dawateislami.net

يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ

लोग उठाए जाएं फ़रमाया तुझे मोहलत है[20] बोला तो क़सम इस की कि तू ने मुझे गुमराह किया

لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ

मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उन की ताक में बैठूंगा[21] फिर ज़रूर मैं उन के पास आऊंगा

اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ

उन के आगे और पीछे और दाहने और बाएं से[22] और तू उन में

اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ

अक्सर को शुक्र गुज़ार न पाएगा[23] फ़रमाया यहां से निकल जा रद किया गया रांदा (धुत्कारा) हुवा ज़रूर जो

تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ

उन में से तेरे कहे पर चला मैं तुम सब से जहन्नम भर दूंगा[24] और ऐ आदम तू और

اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ

तेरा जोड़ा[25] जन्नत में रहो तो उस में से जहां चाहो खाओ और उस पेड़ के पास न जाना

فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا

कि हद से बढ़ने वालों में होगे फिर शैतान ने उन के जी (दिल) में ख़तरा डाला कि उन पर खोल दे

مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ

उन की शर्म की चीज़ें[26] जो उन से छुपी थीं[27] और बोला तुम्हें तुम्हारे रब ने इस

तुझ पर ला'नत करेगी और येही तकब्बुर वाले का अन्जाम है। **20 :** और मुद्दत इस मोहलत की सूरए हिज्र में बयान फ़रमाई गई ''اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ○ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ'' (तो तू मोहलत वालों में है उस जाने हुए वक़्त के दिन तक) और येह वक़्त नफ़्ख़ए ऊला का है जब सब लोग मर जाएंगे शैतान ने मुर्दों के ज़िन्दा होने के वक़्त तक की मोहलत चाही थी और उस से उस का मत़लब येह था कि मौत की सख़्ती से बच जाए येह क़बूल न हुवा और नफ़्ख़ए ऊला तक की मोहलत दी गई। **21 :** कि बनी आदम के दिल में वस्वसे डालूं और उन्हें बात़िल की त़रफ़ माइल करूं, गुनाहों की रग़बत दिलाऊं, तेरी इत़ाअ़त और इबादत से रोकूं और गुमराही में डालूं। **22 :** या'नी चारों त़रफ़ से उन्हें घेर कर राहे रास्त से रोकूंगा। **23 :** चूंकि शैत़ान बनी आदम को गुमराह करने और मुब्तलाए शहवात व क़बाएह़ करने में अपनी इन्तिहाई सई ख़र्च करने का अ़ज़्म कर चुका था इस लिये उसे गुमान था कि वोह बनी आदम को बहका लेगा। उन्हें फ़रेब दे कर ख़ुदावन्दे आ़लम की ने'मतों के शुक्र और उस की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी से रोक देगा। **24 :** तुझ को भी और तेरी ज़ुर्रिय्यत को भी और तेरी इत़ाअ़त करने वाले आदमियों को भी सब को जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा। शैत़ान को जन्नत से निकाल देने के बा'द ह़ज़रते आदम को ख़ित़ाब फ़रमाया जो आगे आता है। **25 :** या'नी ह़ज़रते ह़व्वा **26 :** या'नी ऐसा वस्वसा डाला कि जिस का नतीजा येह हो कि वोह दोनों आपस में एक दूसरे के सामने बरह्ना हो जाएं। इस आयत से येह मस्अला साबित हुवा कि वोह जिस्म जिस को औ़रत कहते हैं उस का छुपाना ज़रूरी और खोलना मन्अ़ है और येह भी साबित हुवा कि इस का खोलना हमेशा से अ़क़्ल के नज़्दीक मज़्मूम और त़बीअ़तों को ना गवार रहा है। **27 :** इस से मा'लूम हुवा कि इन दोनों साह़िबों ने अब तक एक दूसरे का सत्र न देखा था।

www.dawateislami.net

الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَقَاسَمَهُمَاۤ

पेड़ से इसी लिये मन्अ़ फ़रमाया है कि कहीं तुम दो फ़िरिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले[28] और उन से क़सम खाई

اِنِّیْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِیْنَ ﴿۲۱﴾ۙ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ

कि मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूं तो उतार लाया उन्हें फ़रेब से[29] फिर जब उन्हों ने वोह पेड़ चखा

بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا یَخْصِفٰنِ عَلَیْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَ

उन पर उन की शर्म की चीज़ें खुल गईं[30] और अपने बदन पर जन्नत के पत्ते चिपटाने लगे और

نَادٰىهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ

उन्हें उन के रब ने फ़रमाया क्या मैं ने तुम्हें उस पेड़ से मन्अ़ न किया और न फ़रमाया था कि

الشَّیْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۲۲﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ۟ وَاِنْ لَّمْ

शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है दोनों ने अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे हम ने अपना आप बुरा किया तो अगर तू

تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۲۳﴾ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ

हमें न बख़्शे और हम पर रह़्म न करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुए फ़रमाया उतरो[31] तुम में एक

لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِیْنٍ ﴿۲۴﴾ قَالَ

दूसरे का दुश्मन और तुम्हें ज़मीन में एक वक़्त तक ठहरना और बरत्ना है फ़रमाया

فِیْهَا تَحْیَوْنَ وَفِیْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿۲۵﴾ یٰبَنِیْۤ اٰدَمَ قَدْ ع ۲ ۱۵ ۹

उसी में जियोगे और उसी में मरोगे और उसी में से उठाए जाओगे[32] ऐ आदम की औलाद बेशक

اَنْزَلْنَا عَلَیْكُمْ لِبَاسًا یُّوَارِیْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِیْشًا ؕ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ

हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक लिबास वोह उतारा कि तुम्हारी शर्म की चीज़ें छुपाए और एक वोह कि तुम्हारी आराइश हो[33] और परहेज़ गारी का लिबास

28 : कि जन्नत में रहो और कभी न मरो। **29 :** मा'ना येह हैं कि इब्लीस मल्ऊ़न ने झूटी क़सम खा कर ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को धोका दिया और पहला झूटी क़सम खाने वाला इब्लीस ही है, ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को गुमान भी न था कि कोई अल्लाह की क़सम खा कर झूट बोल सकता है इस लिये आप ने उस की बात का ए'तिबार किया। **30 :** और जन्नती लिबास जिस्म से जुदा हो गए और उन में एक दूसरे से अपना बदन छुपा न सका, उस वक़्त तक इन साह़िबों में से किसी ने ख़ुद भी अपना सत्र न देखा था और न उस वक़्त तक उन्हें इस की ह़ाजत पेश आई थी। **31 :** ऐ आदम व ह़व्वा ! मअ़ अपनी ज़ुर्रिय्यत के जो तुम में है **32 :** रोज़े क़ियामत ह़िसाब के लिये। **33 :** या'नी एक लिबास तो वोह है जिस से बदन छुपाया जाए और सत्र किया जाए और एक लिबास वोह है जिस से ज़ीनत हो और येह भी ग़रज़ सह़ीह़ है।

www.dawateislami.net

ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۲۶﴾ يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ

वोह सब से भला[34] येह अल्लाह की निशानियों में से है कि कहीं वोह नसीह़त मानें ऐ आदम की औलाद[35]

لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَاۤ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا

ख़बरदार तुम्हें शैत़ान फ़ितने में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बिहिश्त से निकाला उतरवा दिये उन

لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ

के लिबास कि उन की शर्म की चीज़ें उन्हें नज़र पड़ीं बेशक वोह और उस का कुम्बा तुम्हें वहां से देखते हैं कि

لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۷﴾

तुम उन्हें नहीं देखते[36] बेशक हम ने शैत़ानों को उन का दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَاۤ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ

और जब कोई बे ह़याई करें[37] तो कहते हैं हम ने इस पर अपने बाप दादा को पाया और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया[38]

قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾

तुम फ़रमाओ बेशक अल्लाह बे ह़याई का हुक्म नहीं देता क्या अल्लाह पर वोह बात लगाते हो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۫ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ

तुम फ़रमाओ मेरे रब ने इन्साफ़ का हुक्म दिया है और अपने मुंह सीधे करो हर नमाज़ के वक़्त और उस की इबादत करो

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿۲۹﴾ ؕ فَرِيْقًا هَدٰى

निरे [ख़ालिस] उस के बन्दे हो कर जैसे उस ने तुम्हारा आग़ाज़ किया वैसे ही पलटोगे[39] एक फ़िर्क़े को राह दिखाई[40]

34 : परहेज़ गारी का लिबास ईमान, ह़या, नेक ख़स्लतें, नेक अ़मल हैं येह बेशक लिबासे ज़ीनत से अफ़्ज़ल व बेहतर हैं। **35 :** शैत़ान की कय्यादी (मक्कारी) और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ उस की अ़दावत का बयान फ़रमा कर बनी आदम को मुतनब्बेह और होशियार किया जाता है कि वोह शैत़ान के वस्वसे और इ़ग़वा (बहकावे) और उस की मक्कारियों से बचते रहें, जो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ ऐसी फ़रेब कारी कर चुका है वोह उन की औलाद के साथ कब दर गुज़र करने वाला है। **36 :** अल्लाह तआ़ला ने जिन्नों को ऐसा इदराक दिया है कि वोह इन्सानों को देखते हैं और इन्सानों को ऐसा इदराक नहीं मिला कि वोह जिन्नों को देख सकें। ह़दीस शरीफ़ में है कि शैत़ान इन्सान के जिस्म में ख़ून की राहों में पैर (समा) जाता है। ह़ज़रते जुन्नून رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया कि अगर शैत़ान ऐसा है कि वोह तुम्हें देखता है तुम उसे नहीं देख सकते तो तुम ऐसे से मदद चाहो जो उस को देखता हो और वोह उसे न देख सके या'नी अल्लाह करीम सत्तार रहीम ग़फ़्फ़ार से मदद चाहो। **37 :** और कोई क़बीह़ फ़े'ल या गुनाह उन से सादिर हो जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग मर्द व औ़रत नंगे हो कर का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ करते थे। अ़त़ा का क़ौल है कि बे ह़याई शिर्क है और ह़क़ीक़त येह है कि हर क़बीह़ फ़े'ल और तमाम मआ़सी व कबाइर इस में दाख़िल हैं अगर्चे येह आयत ख़ास नंगे हो कर त़वाफ़ करने के बारे में आई हो। जब कुफ़्फ़ार की ऐसी बे ह़याई के कामों पर उन की मज़म्मत की गई तो इस पर उन्हों ने जो कहा वोह आगे आता है। **38 :** कुफ़्फ़ार ने अपने अफ़्आ़ले क़बीह़ा के दो उ़ज़्र बयान किये एक तो येह कि उन्हों ने अपने बाप दादा को येही फ़े'ल करते पाया लिहाज़ा उन की इत्तिबाअ़ में येह भी करते हैं येह तो जाहिल बदकार की तक़्लीद हुई और येह किसी साह़िबे अ़क़्ल के नज़्दीक जाइज़ नहीं। तक़्लीद की जाती है अहले इ़ल्मो तक़्वा की न कि जाहिल गुमराह की। दूसरा

www.dawateislami.net

وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ

और एक फ़िर्क़े की गुमराही साबित हुई[41] उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों

دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۳۰﴾ يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ

को वाली बनाया[42] और समझते येह हैं कि वोह राह पर हैं ऐ आदम की औलाद अपनी ज़ीनत लो

عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

जब मस्जिद में जाओ[43] और खाओ और पियो[44] और ह़द से न बढ़ो बेशक ह़द से बढ़ने वाले

الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْۤ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ ع ۳

उसे पसन्द नहीं तुम फ़रमाओ किस ने ह़राम की अल्लाह की वोह ज़ीनत जो उस ने अपने बन्दों के लिये निकाली[45] और पाक

مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ

रिज़्क़[46] तुम फ़रमाओ कि वोह ईमान वालों के लिये है दुन्या में और क़ियामत में तो ख़ास

الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۳۲﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ

उन्हीं की है हम यूंही मुफ़स्सल आयतें बयान करते हैं[47] इल्म वालों के लिये[48] तुम फ़रमाओ मेरे

उज़्र उन का येह था कि अल्लाह ने उन्हें इन अफ़्आल का हुक्म दिया है येह महज़ इफ़्तिरा व बोहतान था। चुनान्चे अल्लाह तबारक व तआ़ला रद फ़रमाता है **39 :** या'नी जैसे उस ने तुम्हें नीस्त से हस्त किया ऐसे ही बा'दे मौत ज़िन्दा फ़रमाएगा, येह उख़्वी ज़िन्दगी का इन्कार करने वालों पर हुज्जत है और इस से येह भी मुस्तफ़ाद होता है कि जब उसी की त़रफ़ पलटना है और वोह आ'माल की जज़ा देगा तो त़ाआ़त व इबादात को उस के लिये ख़ालिस करना ज़रूरी है। **40 :** ईमान व मा'रिफ़त की और उन्हें त़ाअ़त व इबादत की तौफ़ीक़ दी। **41 :** वोह कुफ़्फ़ार हैं **42 :** उन की इत़ाअ़त की, उन के कहे पर चले, उन के हुक्म से कुफ़्र व मआ़सी को इख़्तियार किया। **43 :** या'नी लिबासे ज़ीनत और एक क़ौल येह है कि कंघी करना, ख़ुश्बू लगाना दाख़िले ज़ीनत है। **मस्अला :** और सुन्नत येह है कि आदमी बेहतर हैअत के साथ नमाज़ के लिये ह़ाज़िर हो क्यूं कि नमाज़ में रब से मुनाजात है तो इस के लिये ज़ीनत करना, इज़ार लगाना मुस्तह़ब जैसा कि सत्रे औ़रत वाजिब है। **शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में दिन में मर्द और रात में औ़रतें नंगे हो कर त़वाफ़ करते थे। इस आयते करीमा में सत्र छुपाने और कपड़े पहनने का हुक्म दिया गया और इस में दलील है कि सत्रे औ़रत नमाज़ व त़वाफ़ और हर ह़ाल में वाजिब है। **44 शाने नुज़ूल :** कलबी का क़ौल है कि बनी आ़मिर ज़मानए ह़ज में अपनी ख़ूराक बहुत ही कम कर देते थे और गोश्त और चिक्नाई तो बिल्कुल खाते ही न थे और इस को ह़ज की ता'ज़ीम जानते थे, मुसल्मानों ने उन्हें देख कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** हमें ऐसा करने का ज़ियादा ह़क़ है इस पर येह नाज़िल हुवा कि खाओ और पियो गोश्त हो ख़्वाह चिक्नाई हो और इसराफ़ न करो और वोह येह है कि सेर हो चुकने के बा'द भी खाते रहो या ह़राम की परवाह न करो और येह भी इसराफ़ है कि जो चीज़ अल्लाह तआ़ला ने ह़राम नहीं की उस को ह़राम कर लो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : खा जो चाहे और पहन जो चाहे इसराफ़ और तकब्बुर से बचता रह। **मस्अला :** आयत में दलील है कि खाने और पीने की तमाम चीज़ें ह़लाल हैं सिवाए उन के जिन पर शरीअ़त में दलीले ह़ुरमत क़ाइम हो क्यूं कि येह क़ाइदा मुक़र्ररा मुसल्लमा है कि अस्ल तमाम अश्या में इबाह़त है मगर जिस पर शारेअ़ ने मुमानअ़त फ़रमाई हो और उस की ह़ुरमत दलीले मुस्तक़िल से साबित हो। **45 :** ख़्वाह लिबास हो या और सामाने ज़ीनत **46 :** और खाने पीने की लज़ीज़ चीज़ें। **मस्अला :** आयत अपने उ़मूम पर है हर खाने की चीज़ इस में दाख़िल है कि जिस की ह़ुरमत पर नस्स वारिद न हुई हो। (خازن) तो जो लोग तोशए ग्यारहवीं शरीफ़, मीलाद शरीफ़, बुज़ुर्गों की फ़ातिह़ा, उ़र्स, मजालिसे शहादत वग़ैरा की शीरीनी, सबील के शरबत को मम्नूअ़ कहते हैं वोह इस आयत के ख़िलाफ़ कर के गुनहगार होते हैं और इस को मम्नूअ़ कहना अपनी राय को दीन में दाख़िल करना है और येही बिद्अ़त व ज़लालत है। **47 :** जिन से ह़लाल व ह़राम के अह़काम मा'लूम हों। **48 :** जो येह जानते हैं कि अल्लाह "وَاحِدٌ لَا شَرِیْکَ لَہٗ" है वोह जो ह़राम करे वोही ह़राम है।

www.dawateislami.net

رَبِّیَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْیَ بِغَیْرِ الْحَقِّ

रब ने तो बे ह़याइयां ह़राम फ़रमाई हैं[49] जो उन में खुली हैं और जो छुपी और गुनाह और नाह़क़ ज़ियादती

وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ یُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا

और येह[50] कि अल्लाह का शरीक करो जिस की उस ने सनद न उतारी और येह[51] कि अल्लाह पर वोह बात कहो जिस

لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا یَسْتَاْخِرُوْنَ

का इ़ल्म नहीं रखते और हर गुरोह का एक वा'दा है[52] तो जब उन का वा'दा आएगा एक घड़ी न

سَاعَةً وَّلَا یَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۳۴﴾ یٰبَنِیْۤ اٰدَمَ اِمَّا یَاْتِیَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ

पीछे हो न आगे ऐ आदम की औलाद अगर तुम्हारे पास तुम में के रसूल आएं[53]

یَقُصُّوْنَ عَلَیْكُمْ اٰیٰتِیْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ

मेरी आयतें पढ़ते तो जो परहेज़ गारी करे[54] और संवरे[55] तो उस पर न कुछ ख़ौफ़ और न

یَحْزَنُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَالَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَاۤ اُولٰٓىٕكَ

कुछ ग़म और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं और उन के मुक़ाबिल तकब्बुर किया वोह

اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۳۶﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى

दोज़ख़ी हैं उन्हें उस में हमेशा रहना तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिस ने

اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖ ؕ اُولٰٓىٕكَ یَنَالُهُمْ نَصِیْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ

अल्लाह पर झूट बांधा या उस की आयतें झुटलाईं उन्हें उन के नसीब का लिखा पहुंचेगा[56]

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا یَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْۤا اَیْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ

यहां तक कि जब उन के पास हमारे भेजे हुए[57] उन की जान निकालने आएं तो उन से कहते हैं कहां हैं वोह जिन को तुम

49 : येह ख़ित़ाब मुश्रिकीन से है जो बरह्ना हो कर ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करते थे और अल्लाह तआ़ला की ह़लाल की हुई पाक चीज़ों को ह़राम कर लेते थे, उन से फ़रमाया जाता है कि अल्लाह ने येह चीज़ें ह़राम नहीं कीं और उन से अपने बन्दों को नहीं रोका, जिन चीज़ों को उस ने ह़राम फ़रमाया वोह येह हैं जो अल्लाह तआ़ला बयान फ़रमाता है, उन में से बे ह़याइयां हैं जो खुली हुई हों या छुपी हुई क़ौली हों या फ़े'ली। **50 :** ह़राम किया **51 :** ह़राम किया **52 :** वक़्ते मुअ़य्यन जिस पर मोहलत ख़त्म हो जाती है। **53 :** मुफ़स्सिरीन के इस में दो क़ौल हैं **: एक** तो येह कि रुसुल से तमाम मुर्सलीन मुराद हैं। **दूसरा** येह कि ख़ास सय्यिदे आ़लम ख़ातमुल अम्बिया صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मुराद हैं जो तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बनाए गए हैं और सीग़ए जम्अ़ ता'ज़ीम के लिये है। **54 :** मम्नूआ़त से बचे **55 :** त़ाअ़ात व इ़बादात बजा लाए **56 :** या'नी जितनी उ़म्र और रोज़ी अल्लाह ने उन के लिये लिख दी है उन को पहुंचेगी। **57 :** मलकुल मौत और उन के आ'वान (दूसरे मददगार फ़िरिश्ते) उन लोगों की उ़म्रें और रोज़ियां पूरी होने के बा'द।

www.dawateislami.net

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَ شَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

अल्लाह के सिवा पूजते थे कहते हैं वोह हम से गुम गए[58] और अपनी जानों पर आप गवाही देते हैं कि वोह

كٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾ قَالَ ادْخُلُوْا فِیْۤ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ

काफ़िर थे **अल्लाह** उन से[59] फ़रमाता है कि तुम से पहले जो और जमाअ़तें जिन्न और आदमियों की

وَ الْاِنْسِ فِی النَّارِ ؕ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ؕ حَتّٰۤى اِذَا

आग में गईं उन्हीं में जाओ जब एक गुरोह[60] दाख़िल होता है दूसरे पर ला'नत करता है[61] यहां तक कि जब

ادَّارَكُوْا فِیْهَا جَمِیْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰۤؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا

सब उस में जा पड़े तो पिछले पहलों को कहेंगे[62] ऐ रब हमारे उन्हों ने हम को बहकाया था

فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ؕ۬ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾

तो उन्हें आग का दूना (दुगना) अ़ज़ाब दे फ़रमाएगा सब को दूना है[63] मगर तुम्हें ख़बर नहीं[64]

وَ قَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَیْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا

और पहले पिछलों से कहेंगे तो तुम कुछ हम से अच्छे न रहे[65] तो चखो

ع ۴ ۸ ۱۱ الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۳۹﴾ ع اِنَّ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا

अ़ज़ाब बदला अपने किये का[66] वोह जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं

وَ اسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَ لَا یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ

और उन के मुक़ाबिल तकब्बुर किया उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे[67] और न वोह जन्नत में दाख़िल हों

حَتّٰى یَلِجَ الْجَمَلُ فِیْ سَمِّ الْخِیَاطِ ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۴۰﴾

जब तक सूई के नाके ऊंट न दाख़िल हो[68] और मुजरिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं[69]

58 : उन का कहीं नामो निशान ही नहीं **59 :** उन काफ़िरों से रोज़े क़ियामत **60 :** दोज़ख़ में **61 :** जो उस के दीन पर था तो मुश्रिक मुश्रिकों पर ला'नत करेंगे और यहूद यहूदियों पर और नसारा नसारा पर **62 :** या'नी पहलों की निस्बत **अल्लाह** तआ़ला से कहेंगे **63 :** क्यूं कि पहले ख़ुद भी गुमराह हुए और उन्हों ने दूसरों को भी गुमराह किया और पिछले भी ऐसे ही हैं कि ख़ुद गुमराह हुए और गुमराहों का ही इत्तिबाअ़ करते रहे। **64 :** कि तुम में से हर फ़रीक़ के लिये कैसा अ़ज़ाब है। **65 :** कुफ़्रो ज़लाल में दोनों बराबर हैं। **66 :** कुफ़्र का और आ'माले ख़बीसा का। **67 :** न उन के आ'माल के लिये न उन की अरवाह़ के लिये क्यूं कि उन के आ'माल व अरवाह़ दोनों ख़बीस हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार की अरवाह़ के लिये आस्मान के दरवाज़े नहीं खोले जाते और मोमिनीन की अरवाह़ के लिये खोले जाते हैं। इब्ने जुरैज ने कहा कि आस्मान के दरवाज़े न काफ़िरों के आ'माल के लिये खोले जाएं न अरवाह़ के लिये या'नी न ज़िन्दगी में उन का अ़मल ही आस्मान पर जा सकता है न बा'दे मौत रूह़। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि आस्मान के दरवाज़े न खोले जाने के येह मा'ना हैं कि वोह ख़ैरो बरकत और रह़मत के नुज़ूल से मह़रूम रहते हैं। **68 :** और येह

www.dawateislami.net

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى

उन्हें आग ही बिछोना और आग ही ओढ़ना[70] और ज़ालिमों को हम ऐसा ही

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا

बदला देते हैं और वोह जो ईमान लाए और ताक़त भर अच्छे काम किये हम किसी पर ताक़त से ज़ियादा

وُسْعَهَاۤ ؗ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَنَزَعْنَا مَا

बोझ नहीं रखते वोह जन्नत वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना और हम ने उन के

فِىْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ

सीनों में से कीने खींच लिये[71] उन के नीचे नहरें बहेंगी और कहेंगे[72] सब ख़ूबियां अल्लाह को

الَّذِىْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۗ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِىَ لَوْلَاۤ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ

जिस ने हमें उस की राह दिखाई[73] और हम राह न पाते अगर अल्लाह न दिखाता बेशक

جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ؕ وَنُوْدُوْۤا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا

हमारे रब के रसूल हक़ लाए[74] और निदा हुई कि येह जन्नत तुम्हें मीरास मिली[75]

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ

सिला तुम्हारे आ'माल का और जन्नत वालों ने दोज़ख़ वालों को पुकारा कि

الثلث

وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ؕ قَالُوْا

हमें तो मिल गया जो सच्चा वा'दा हम से हमारे रब ने किया था[76] तो क्या तुम ने भी पाया जो तुम्हारे रब ने[77] सच्चा वा'दा तुम्हें दिया था बोले

मुहाल तो कुफ़्फ़ार का जन्नत में दाख़िल होना मुहाल क्यूं कि मुहाल पर जो मौक़ूफ़ हो वोह मुहाल होता है, इस से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार का जन्नत से महरूम रहना क़त्ई है। **69 :** मुजरिमीन से यहां कुफ़्फ़ार मुराद हैं क्यूं कि ऊपर इन की सिफ़त में आयाते इलाहिय्यह की तक्ज़ीब और उन से तकब्बुर करने का बयान हो चुका है। **70 :** या'नी ऊपर नीचे हर तरफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है। **71 :** जो दुन्या में उन के दरमियान थे और तबीअतें साफ़ कर दी गईं और उन में आपस में न बाक़ी रही मगर महब्बत व मुवद्दत (प्यार)। हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि येह हम अहले बद्र के हक़ में नाज़िल हुवा और येह भी आप से मरवी है कि आप ने फ़रमाया : मुझे उम्मीद है कि मैं और उस्मान और तल्हा और ज़ुबैर उन में से हों जिन के हक़ में अल्लाह तआला ने "وَنَزَعْنَا مَا فِىْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ" फ़रमाया। हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा के इस इर्शाद ने रिफ़्ज़ (राफ़िज़िय्यों के अक़ीदे) की बेख़ो बुन्याद का क़ल्अ क़म्अ कर दिया। **72 :** मोमिनीन जन्नत में दाख़िल होते वक़्त **73 :** और हमें ऐसे अमल की तौफ़ीक़ दी जिस का येह अज्रो सवाब है और हम पर फ़ज़्लो रहमत फ़रमाई और अपने करम से अज़ाबे जहन्नम से महफ़ूज़ किया। **74 :** और जो उन्हों ने हमें दुन्या में सवाब की ख़बरें दीं वोह सब हम ने इयां देख लीं, उन की हिदायत हमारे लिये कमाले लुत्फ़ो करम था। **75 :** मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है : जब जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे एक निदा करने वाला पुकारेगा तुम्हारे लिये ज़िन्दगानी है कभी न मरोगे, तुम्हारे लिये तन्दुरुस्ती है कभी बीमार न होगे, तुम्हारे लिये ऐश है कभी तंगहाल न होगे। जन्नत को मीरास फ़रमाया गया इस में इशारा है कि वोह महज़ अल्लाह के फ़ज़्ल से हासिल हुई। **76 :** और रसूलों ने फ़रमाया था कि ईमान व ताअत पर अज्रो सवाब पाओगे। **77 :** कुफ़्र व ना फ़रमानी पर अज़ाब का।

www.dawateislami.net

نَعَمۡ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَیۡنَهُمۡ اَنۡ لَّعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَی الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۴۴﴾ۙ الَّذِیۡنَ

हां और बीच में मुनादी ने पुकार दिया कि अल्लाह की ला'नत ज़ालिमों पर जो

یَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ وَ یَبۡغُوۡنَهَا عِوَجًا ۚ وَ هُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ

अल्लाह की राह से रोकते हैं[78] और उसे कजी चाहते हैं[79] और आख़िरत का

كٰفِرُوۡنَ ﴿۴۵﴾ۘ وَ بَیۡنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَ عَلَی الۡاَعۡرَافِ رِجَالٌ یَّعۡرِفُوۡنَ

وقف لازم

इन्कार रखते हैं और जन्नत व दोज़ख़ के बीच में एक पर्दा है[80] और आ'राफ़ पर कुछ मर्द होंगे[81] कि दोनों फ़रीक़ को

كُلًّۢا بِسِیۡمٰهُمۡ ۚ وَ نَادَوۡا اَصۡحٰبَ الۡجَنَّةِ اَنۡ سَلٰمٌ عَلَیۡكُمۡ ۟ لَمۡ

उन की पेशानियों से पहचानेंगे[82] और वोह जन्नतियों को पुकारेंगे कि सलाम तुम पर येह[83]

یَدۡخُلُوۡهَا وَ هُمۡ یَطۡمَعُوۡنَ ﴿۴۶﴾ وَ اِذَا صُرِفَتۡ اَبۡصَارُهُمۡ تِلۡقَآءَ اَصۡحٰبِ

जन्नत में न गए और इस की तृमअ़ रखते हैं और जब उन की[84] आंखें दोज़ख़ियों की तृरफ़

النَّارِ ۙ قَالُوۡا رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا مَعَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۴۷﴾٪ وَ نَادٰۤی اَصۡحٰبُ

फिरेंगी कहेंगे ऐ हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न कर और आ'राफ़ वाले

الۡاَعۡرَافِ رِجَالًا یَّعۡرِفُوۡنَهُمۡ بِسِیۡمٰهُمۡ قَالُوۡا مَاۤ اَغۡنٰی عَنۡكُمۡ جَمۡعُكُمۡ

कुछ मर्दों को[85] पुकारेंगे जिन्हें उन की पेशानी से पहचानते हैं कहेंगे तुम्हें क्या काम आया तुम्हारा जथ्था

78 : और लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से मन्अ़ करते हैं। **79 :** या'नी येह चाहते हैं कि दीने इलाही को बदल दें और जो तृरीक़ा अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है उस में तग़य्युर डाल दें। (خازن) **80 :** जिस को आ'राफ़ कहते हैं। **81 :** येह किस तृबके के होंगे इस में बहुत मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं : एक क़ौल तो येह है कि येह वोह लोग होंगे जिन की नेकियां और बदियां बराबर हों वोह आ'राफ़ पर ठहरे रहेंगे जब अहले जन्नत की तृरफ़ देखेंगे तो उन्हें सलाम करेंगे और दोज़ख़ियों की तृरफ़ देखेंगे तो कहेंगे या रब ! हमें ज़ालिम क़ौम के साथ न कर। आख़िर कार जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे, एक क़ौल येह है कि जो लोग जिहाद में शहीद हुए मगर उन के वालिदैन उन से नाराज़ थे वोह आ'राफ़ में ठहराए जाएंगे, एक क़ौल येह है : जो लोग ऐसे हैं कि उन के वालिदैन में से एक उन से राज़ी हो, एक नाराज़ वोह आ'राफ़ में रखे जाएंगे। इन अक़्वाल से मा'लूम होता है कि अहले आ'राफ़ का मर्तबा अहले जन्नत से कम है। मुजाहिद का क़ौल येह है : आ'राफ़ में सुलहा, फ़ुक़रा, उ़लमा होंगे और उन का वहां क़ियाम इस लिये होगा कि दूसरे उन के फ़ज़्लो शरफ़ को देखें। और एक क़ौल येह है कि आ'राफ़ में अम्बिया होंगे और वोह इस मकाने आ़ली में तमाम अहले क़ियामत पर मुमताज़ किये जाएंगे और उन की फ़ज़ीलत और रुत्बए आ़लिया का इज़्हार किया जाएगा ताकि जन्नती और दोज़ख़ी उन को देखें और वोह उन सब के अह़वाल और सवाब व अ़ज़ाब के मिक़्दार व अह़वाल का मुआयना करें। इन क़ौलों पर अस्ह़ाबे आ'राफ़ जन्नतियों में से अफ़्ज़ल लोग होंगे क्यूं कि वोह बाक़ियों से मर्तबे में आ'ला हैं। इन तमाम अक़्वाल में कुछ तनाक़ुज़ (टकराव) नहीं है इस लिये कि येह हो सकता है कि हर तृबक़े के लोग आ'राफ़ में ठहराए जाएं और हर एक के ठहराने की हिक्मत जुदागाना हो। **82 :** दोनों फ़रीक़ से जन्नती और दोज़ख़ी मुराद हैं, जन्नतियों के चेहरे सफ़ेद और तरो ताज़ा होंगे और दोज़ख़ियों के चेहरे सियाह और आंखें नीली, येही उन की अ़लामतें हैं। **83 :** आ'राफ़ वाले अभी तक **84 :** आ'राफ़ वालों की **85 :** कुफ़्फ़ार में से

www.dawateislami.net

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ

और वोह जो तुम ग़ुरूर करते थे[86] क्या येह हैं वोह लोग[87] जिन पर तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह उन को अपनी रह़मत कुछ

بِرَحْمَةٍ ؕ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿۴۹﴾

न करेगा[88] उन से तो कहा गया कि जन्नत में जाओ न तुम को अन्देशा न कुछ ग़म

وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ

और दोज़ख़ी बिहिश्तियों को पुकारेंगे कि हमें अपने पानी का कुछ फ़ैज़ दो

اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۵۰﴾ۙ

या उस खाने का जो अल्लाह ने तुम्हें दिया[89] कहेंगे बेशक अल्लाह ने इन दोनों को काफ़िरों पर ह़राम किया है

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ

जिन्हों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया[90] और दुन्या की ज़ीस्त ने उन्हें फ़रेब दिया[91]

فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا

तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे जैसा उन्हों ने उस दिन के मिलने का ख़याल छोड़ा था और जैसा हमारी आयतों से

يَجْحَدُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً

इन्कार करते थे और बेशक हम उन के पास एक किताब लाए[92] जिसे हम ने एक बड़े इल्म से मुफ़स्सल किया हिदायत व रह़मत

لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ

ईमान वालों के लिये काहे की राह देखते हैं मगर उस की, कि इस किताब का कहा हुवा अन्जाम सामने आए जिस दिन इस का बताया अन्जाम वाक़ेअ़ होगा[93]

يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ

बोल उठेंगे वोह जो इसे पहले से भुलाए बैठे थे[94] कि बेशक हमारे रब के रसूल ह़क़ लाए थे

86 : और अहले आ'राफ़ ग़रीब मुसल्मानों की त़रफ़ इशारा कर के कुफ़्फ़ार से कहेंगे **87 :** जिन को तुम दुन्या में ह़क़ीर समझते थे और **88 :** अब देख लो कि जन्नत के दाइमी ऐशो राह़त में किस इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ हैं। **89 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि जब आ'राफ़ वाले जन्नत में चले जाएंगे तो दोज़ख़ियों को भी त़मअ़ दामनगीर होगी और वोह अ़र्ज़ करेंगे : या रब ! जन्नत में हमारे रिश्तेदार हैं इजाज़त फ़रमा कि हम उन्हें देखें उन से बात करें, इजाज़त दी जाएगी तो वोह अपने रिश्तेदारों को जन्नत की ने'मतों में देखेंगे और पहचानेंगे लेकिन अहले जन्नत उन दोज़ख़ी रिश्तेदारों को न पहचानेंगे क्यूं कि दोज़ख़ियों के मुंह काले होंगे, सूरतें बिगड़ गई होंगी तो वोह जन्नतियों को नाम ले ले कर पुकारेंगे कोई अपने बाप को पुकारेगा, कोई भाई को और कहेगा मैं जल गया मुझ पर पानी डालो और तुम्हें अल्लाह ने दिया है खाने को दो, इस पर अहले जन्नत **90 :** कि ह़लाल व ह़राम में अपनी हवाए नफ़्स के ताबेअ़ हुए, जब ईमान की त़रफ़ उन्हें दा'वत दी गई मस्ख़रगी करने लगे। **91 :** उस की लज़्ज़तों में आख़िरत को भूल गए। **92 :** क़ुरआन शरीफ़ **93 :** और वोह रोज़े क़ियामत है। **94 :** न उस पर ईमान लाते थे न उस के मुत़ाबिक़ अ़मल

www.dawateislami.net

فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا

तो हैं कोई हमारे सिफ़ारिशी जो हमारी शफ़ाअ़त करें या हम वापस भेजे जाएं कि पहले कामों के ख़िलाफ़

نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۵۳﴾ ع ۶ ۳

काम करें[95] बेशक उन्हों ने अपनी जानें नुक़्सान में डालीं और उन से खोए गए जो बोहतान उठाते थे[96]

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिस ने आस्मान और ज़मीन[97] छ[6] दिन में बनाए[98] फिर

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۘ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ

अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइ़क़ है[99] रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उस के पीछे लगा आता है और सूरज

وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ

और चांद और तारों को बनाया सब उस के हुक्म के दबे हुए सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना बड़ी बरकत

اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۴﴾ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

वाला है अल्लाह रब सारे जहान का अपने रब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक ह़द से बढ़ने वाले

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۵۵﴾ ۚ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ

उसे पसन्द नहीं[100] और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ[101] इस के संवरने के बा'द[102] और उस से दुआ करो

करते थे। **95 :** या'नी बजाए कुफ़्र के ईमान लाएं और बजाए मा'सियत और ना फ़रमानी के ता़अ़त और फ़रमां बरदारी इख़्तियार करें मगर न उन्हें शफ़ाअ़त मुयस्सर आएगी न दुन्या में वापस भेजे जाएंगे। **96 :** और झूट बकते थे कि बुत ख़ुदा के शरीक हैं और अपने पुजारियों की शफ़ाअ़त करेंगे अब आख़िरत में उन्हें मा'लूम हो गया कि उन के येह दा'वे झूटे थे। **97 :** मअ़ उन तमाम चीज़ों के जो इन के दरमियान हैं जैसा कि दूसरी आयत में वारिद हुवा : ''وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ''। **98 :** छ[6] दिन से दुन्या के छ[6] दिनों की मिक़्दार मुराद है क्यूं कि येह दिन तो उस वक़्त थे नहीं, आफ़्ताब ही न था जिस से दिन होता और अल्लाह तआ़ला क़ादिर था कि एक लम्ह़े में या इस से कम में पैदा फ़रमाता लेकिन इतने अ़र्से में उन की पैदाइश फ़रमाना ब तक़ाज़ाए ह़िक्मत है और इस से बन्दों को अपने कामों में तदरीज इख़्तियार करने का सबक़ मिलता है। **99 :** येह इस्तवा मुतशाबहात में से है हम इस पर ईमान लाते हैं कि अल्लाह की इस से जो मुराद है ह़क़ है। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि इस्तवा मा'लूम है और इस की कैफ़िय्यत मज्हूल और इस पर ईमान लाना वाजिब। ह़ज़रते मुर्तजिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया : या इस के मा'ना येह हैं कि आफ़रीनिश (काएनात) का ख़ातिमा अ़र्श पर जा ठहरा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَسْرَارِ كِتَابِهٖ। **100 :** दुआ अल्लाह तआ़ला से ख़ैर त़लब करने को कहते हैं और येह दाख़िले इबादत है क्यूं कि दुआ करने वाला अपने आप को आ़जिज़ व मोह़ताज और अपने परवर्दगार को ह़क़ीक़ी क़ादिर व ह़ाजत रवा ए'तिक़ाद करता है, इसी लिये ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा : "اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ" (या'नी दुआ इबादत का मग़्ज़ है) तज़र्रोअ़ से इज़्हारे इज्ज़ व ख़ुशूअ़ मुराद है और अदब दुआ में येह है कि आहिस्ता हो। ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का क़ौल है कि आहिस्ता दुआ करना अ़लानिया दुआ करने से सत्तर दरजे ज़ियादा अफ़्ज़ल है। **मस्अला :** इस में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है कि इबादात में इज़्हार अफ़्ज़ल है या इख़्फ़ा, बा'ज़ कहते हैं कि इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है क्यूं कि वोह रिया से बहुत दूर है, बा'ज़ कहते हैं कि इज़्हार अफ़्ज़ल है इस लिये कि इस से दूसरों को रग़्बते इबादत पैदा होती है। तिरमिज़ी ने कहा कि अगर आदमी अपने नफ़्स पर रिया का अन्देशा रखता हो तो उस के लिये इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है और अगर क़ल्ब साफ़ हो अन्देशए रिया न हो तो इज़्हार अफ़्ज़ल है। बा'ज़ ह़ज़रात येह फ़रमाते हैं कि फ़र्ज़ इबादतों में इज़्हार अफ़्ज़ल है, नमाज़ फ़र्ज़ मस्जिद ही में बेहतर है और ज़कात

www.dawateislami.net

خَوْفًا وَّ طَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَ هُوَ

डरते और तृमअ् करते बेशक **अल्लाह** की रहमत नेकों से क़रीब है और वोही है

الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَقَلَّتْ

कि हवाएं भेजता है उस की रहमत के आगे मुज़्दा सुनाती[103] यहां तक कि जब उठा लाएं

سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ

भारी बादल हम ने उसे किसी मुर्दा शहर की तरफ़ चलाया[104] फिर उस से पानी उतारा फिर उस से

مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾

तृरह तृरह के फल निकाले इसी तृरह हम मुर्दों को निकालेंगे[105] कहीं तुम नसीहत मानो

وَ الْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَ الَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ

और जो अच्छी ज़मीन है उस का सब्ज़ा **अल्लाह** के हुक्म से निकलता है[106] और जो ख़राब है उस में नहीं निकलता

اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿۵۸﴾ ع لَقَدْ اَرْسَلْنَا ع ٧ ٥ ١٤

मगर थोड़ा ब मुश्किल[107] हम यूंही तृरह तृरह से आयतें बयान करते हैं[108] उन के लिये जो एहसान मानें बेशक हम ने

نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ

नूह को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा[109] तो उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** को पूजो[110] उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं[111]

का इज़्हार कर के देना ही अफ़्ज़ल है और नफ़्ल इबादात में ख़्वाह वोह नमाज़ हो या सदक़ा वग़ैरा उन में इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है। दुआ में हद से बढ़ना कई तृरह होता है उस में से एक येह भी है कि बहुत बुलन्द आवाज़ से चीख़े। **101 :** कुफ़्रो मा'सियत व ज़ुल्म कर के **102 :** अम्बिया के तशरीफ़ लाने, हक़ की दा'वत फ़रमाने, अह़काम बयान करने, अ़द्ल क़ाइम फ़रमाने के बा'द। **103 :** बारिश का। और रहमत से यहां मींह मुराद है। **104 :** जहां बारिश न हुई थी सब्ज़ा न जमा था। **105 :** या'नी जिस तृरह मुर्दा ज़मीन को वीरानी के बा'द ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाता और उस को सर सब्ज़ और शादाब फ़रमाता है और उस में खेती दरख़्त फल फूल पैदा करता है ऐसे ही मुर्दों को क़ब्रों से ज़िन्दा कर के उठाएगा क्यूं कि जो ख़ुश्क लकड़ी से तरो ताज़ा फल पैदा करने पर क़ादिर है उसे मुर्दों का ज़िन्दा करना क्या बईद है, क़ुदरत की येह निशानी देख लेने के बा'द आ़क़िल, सलीमुल ह़वास को मुर्दों के ज़िन्दा किये जाने में कुछ तरद्दुद बाक़ी नहीं रहता। **106 :** येह मोमिन की मिसाल है जिस तृरह उ़म्दा ज़मीन पानी से नफ़्अ़ पाती है और उस में फूल फल पैदा होते हैं इसी तृरह जब मोमिन के दिल पर क़ुरआनी अन्वार की बारिश होती है तो वोह उस से नफ़्अ़ पाता है ईमान लाता है ताआ़त व इबादात से फलता फूलता है। **107 :** येह काफ़िर की मिसाल है कि जैसे ख़राब ज़मीन बारिश से नफ़्अ़ नहीं पाती ऐसे ही काफ़िर क़ुरआने पाक से मुन्तफ़ेअ़ (फ़ाएदा ह़ासिल करने वाला) नहीं होता। **108 :** जो तौह़ीद व ईमान पर हुज्जत व बुरहान हैं। **109 :** ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के वालिद का नाम लमक है वोह मुतवश्शिलख़ के वोह अख़्नूख़ عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रज़न्द हैं अख़्नूख़ ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम है, ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चालीस या पचास साल की उ़म्र में नुबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाए गए। आयाते बाला में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने दलाइले क़ुदरत व ग़राइबे सन्अ़त बयान फ़रमाए जिन से उस की तौह़ीद व रबूबिय्यत साबित होती है और मरने के बा'द उठने और ज़िन्दा होने की सिह़्ह़त पर दलाइले क़ातेआ़ क़ाइम किये इस के बा'द अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाता है और उन के उन मुआ़मलात का जो उन्हीं उम्मतों के साथ पेश आए। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि फ़क़त् आप ही की क़ौम ने क़बूले ह़क़ से ए'राज़ नहीं किया बल्कि पहली उम्मतें भी ए'राज़ करती रहीं और अम्बिया की तक्ज़ीब करने वालों का

www.dawateislami.net

اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۵۹﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا

बेशक मुझे तुम पर बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है[112] उस की क़ौम के सरदार बोले बेशक हम

لَنَرٰىكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۶۰﴾ قَالَ یٰقَوْمِ لَیْسَ بِیْ ضَلٰلَةٌ وَّ لٰكِنِّیْ

तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं कहा ऐ मेरी क़ौम मुझ में गुमराही कुछ नहीं

رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۱﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّیْ وَ اَنْصَحُ لَكُمْ

मैं तो रब्बुल आ़लमीन का रसूल हूं तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता और तुम्हारा भला चाहता

وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۲﴾ اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ

और मैं अल्लाह की त़रफ़ से वोह इ़ल्म रखता हूं जो तुम नहीं रखते और क्या तुम्हें इस का अचम्भा (तअ़ज्जुब) हुवा कि तुम्हारे पास

رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِیُنْذِرَكُمْ وَ لِتَتَّقُوْا وَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۶۳﴾

तुम्हारे रब की त़रफ़ से एक नसीह़त आई तुम में के एक मर्द की मा'रिफ़त[113] कि वोह तुम्हें डराए और तुम डरो और कहीं तुम पर रह़म हो

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَیْنٰهُ وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗ فِی الْفُلْكِ وَ اَغْرَقْنَا الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا

तो उन्हों ने उसे[114] झुटलाया तो हम ने उसे और जो[115] उस के साथ कश्ती में थे नजात दी और अपनी आयतें झुटलाने वालों को

بِاٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِیْنَ ﴿۶۴﴾ ع وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ ع ۸ ۱۵

डुबो दिया बेशक वोह अन्धा गुरौह था[116] और आ़द की त़रफ़[117] उन की बिरादरी से हूद को भेजा[118] कहा

یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۶۵﴾ قَالَ

ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बन्दगी करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं[119] उस

अन्जाम दुन्या में हलाक और आख़िरत में अ़ज़ाबे अ़ज़ीम है, इस से ज़ाहिर है कि अम्बिया की तक्ज़ीब करने वाले ग़ज़बे इलाही के सज़ावार होते हैं जो शख़्स सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करेगा उस का भी येही अन्जाम होगा। अम्बिया के इन तज़्किरों में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत की ज़बर दस्त दलील है क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मी थे फिर आप का इन वाक़िआ़त को तफ़्सीलन बयान फ़रमाना बिल ख़ुसूस ऐसे मुल्क में जहां अहले किताब के उ़लमा ब कसरत मौजूद थे और सरगर्मे मुख़ालफ़त भी थे ज़रा सी बात पाते तो बहुत शोर मचाते वहां हुज़ूर का इन वाक़िआ़त को बयान फ़रमाना और अहले किताब का साकित व ह़ैरान रह जाना सरीह़ दलील है कि आप नबिय्ये बरह़क़ हैं और परवर्दगारे आ़लम ने आप पर उ़लूम के दरवाज़े खोल दिये हैं। **110 :** वोही मुस्तह़िक़े इ़बादत है **111 :** तो उस के सिवा किसी को न पूजो। **112 :** रोज़े क़ियामत का या रोज़े तूफ़ान का अगर तुम मेरी नसीह़त क़बूल न करो और राहे रास्त पर न आओ। **113 :** जिस को तुम ख़ूब जानते और उस के नसब को पहचानते हो **114 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को **115 :** उन पर ईमान लाए और **116 :** जिसे ह़क़ नज़र न आता था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि उन के दिल अन्धे थे, नूरे मा'रिफ़त से उन को बहरा न था। **117 :** यहां आ़दे ऊला मुराद है येह ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम है और आ़दे सानिया ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम है उसी को समूद कहते हैं, इन दोनों के दरमियान सो बरस का फ़ासिला है। (جمل) **118 :** हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने **119 :** अल्लाह के अ़ज़ाब का।

www.dawateislami.net

الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّ اِنَّا لَنَظُنُّكَ

की क़ौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें बे वुक़ूफ़ समझते हैं और बेशक हम तुम्हें झूटों

مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۶۶﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّ لٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ

में गुमान करते हैं[120] कहा ऐ मेरी क़ौम मुझे बे वुक़ूफ़ी से क्या अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) मैं तो परवर्दगारे

رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۶۷﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ اَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿۶۸﴾

आ़लम का रसूल हूं तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता हूं और तुम्हारा मो'तमद ख़ैर ख़्वाह हूं[121]

اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ

और क्या तुम्हें इस का अचम्भा (तअ़ज्जुब) हुवा कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से एक नसीह़त आई तुम में के एक मर्द की मा'रिफ़त कि वोह तुम्हें डराए

وَ اذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ زَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ

और याद करो जब उस ने तुम्हें क़ौमे नूह़ का जा नशीन किया[122] और तुम्हारे बदन का फैलाव

بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۶۹﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ

बढ़ाया[123] तो अल्लाह की ने'मतें याद करो[124] कि कहीं तुम्हारा भला हो बोले क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो[125] कि

اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَ نَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ

हम एक अल्लाह को पूजें और जो[126] हमारे बाप दादा पूजते थे उन्हें छोड़ दें तो लाओ[127] जिस का हमें वा'दा दे रहे हो अगर

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّ غَضَبٌ ؕ

सच्चे हो कहा[128] ज़रूर तुम पर तुम्हारे रब का अ़ज़ाब और ग़ज़ब पड़ गया[129]

120 : या'नी रिसालत के दा'वे में सच्चा नहीं जानते। **121 :** कुफ़्फ़ार का ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की जनाब में येह गुस्ताख़ाना कलाम कि तुम्हें बे वुक़ूफ़ समझते हैं झूटा गुमान करते हैं इन्तिहा दरजे की बे अदबी और कमीनगी थी और वोह मुस्तह़िक़ इस बात के थे कि उन्हें सख़्त तरीन जवाब दिया जाता मगर आप ने अपने अख़्लाक़ो अदब और शाने ह़िल्म से जो जवाब दिया उस में शाने मुक़ाबला ही न पैदा होने दी और उन की जहालत से चश्म पोशी फ़रमाई। इस से दुन्या को सबक़ मिलता है कि सुफ़हा (बे वुक़ूफ़) और बद ख़िसाल (बुरे) लोगों से इस त़रह़ मुख़ात़बा (कलाम) करना चाहिये। مَعَ هٰذا (इस के साथ) आप ने अपनी रिसालत और ख़ैर ख़्वाही व अमानत का ज़िक्र फ़रमाया। इस से येह मस्अला मा'लूम हुवा कि अहले इ़ल्मो कमाल को ज़रूरत के मौक़अ़ पर अपने मन्सबो कमाल का इज़्हार जाइज़ है। **122 :** येह उस का कितना बड़ा एह़सान है **123 :** और बहुत ज़ियादा क़ुव्वत व त़ूले क़ामत इ़नायत किया **124 :** और ऐसे मुन्इ़म (ने'मत अ़त़ा फ़रमाने वाले) पर ईमान लाओ और त़ाआ़त व इ़बादात बजा ला कर उस के एह़सान की शुक्र गुज़ारी करो **125 :** या'नी अपने इ़बादत ख़ाने से। ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام अपनी क़ौम की बस्ती से अ़लाह़दा एक तन्हाई के मक़ाम में इ़बादत किया करते थे, जब आप के पास वह़्य आती तो क़ौम के पास आ कर सुना देते। **126 :** बुत **127 :** वोह अ़ज़ाब **128 :** ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने **129 :** और तुम्हारी सरकशी से तुम पर अ़ज़ाब आना वाजिब व लाज़िम हो गया।

www.dawateislami.net

اَتُجَادِلُوْنَنِیْ فِیْۤ اَسْمَآءٍ سَمَّیْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا

क्या मुझ से ख़ाली उन नामों में झगड़ रहे हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये[130] अल्लाह ने उन की कोई

مِنْ سُلْطٰنٍؕ فَانْتَظِرُوْۤا اِنِّیْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِیْنَ ﴿۷۱﴾ فَاَنْجَیْنٰهُ

सनद न उतारी तो रास्ता देखो[131] मैं भी तुम्हारे साथ देखता हूं तो हम ने उसे और उस

وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَ قَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ مَا

के साथ वालों को[132] अपनी एक बड़ी रहमत फ़रमा कर नजात दी[133] और जो हमारी आयतें झुटलाते[134] थे उन की जड़ काट दी[135] और वोह

كَانُوْا مُؤْمِنِیْنَ ﴿۷۲﴾ وَ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًاؕ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا

ईमान वाले न थे और समूद की तरफ़[136] उन की बिरादरी से सालेह को भेजा कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को

وقف لازم ع

130 : और उन्हें पूजने लगे और मा'बूद मानने लगे बा वुजूदे कि इन की कुछ हक़ीक़त ही नहीं है और उलूहिय्यत के मा'ना से क़त्अन ख़ाली व आरी हैं। **131 :** अज़ाबे इलाही का **132 :** जो उन के मुत्तबेअ थे और उन पर ईमान लाए थे **133 :** उस अज़ाब से जो क़ौमे हूद पर उतरा। **134 :** और हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब करते **135 :** और इस तरह हलाक कर दिया कि उन में एक भी न बचा। मुख़्तसर वाक़िआ येह है कि क़ौमे आद अहक़ाफ़ में रहती थी जो उमान व हज़्रमौत के दरमियान अलाक़ए यमन में एक रेगिस्तान है, इन्हों ने ज़मीन को फ़िस्क़ से भर दिया था और दुन्या की क़ौमों को अपनी जफ़ाकारियों से अपने ज़ोरे क़ुव्वत के ज़ो'म में पामाल कर डाला था, येह लोग बुत परस्त थे उन के एक बुत का नाम सुदाअ, एक का सुमूद, एक का हबाअ था। अल्लाह तआला ने इन में हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام को मब्ऊस फ़रमाया, आप ने उन्हें तौहीद का हुक्म दिया शिर्क व बुत परस्ती और ज़ुल्मो जफ़ाकारी की मुमानअत की, इस पर वोह लोग मुन्किर हुए आप की तक्ज़ीब करने लगे और कहने लगे : हम से ज़ियादा ज़ोर आवर कौन है, चन्द आदमी उन में से हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए वोह थोड़े थे और अपना ईमान छुपाए रहते थे, उन मोमिनीन में से एक शख़्स का नाम मरसद इब्ने सा'द बिन उफ़ैर था वोह अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे, जब क़ौम ने सरकशी की और अपने नबी हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और ज़मीन में फ़साद किया और सितम गारियों में ज़ियादती की और बड़ी मज़बूत इमारतें बनाईं मा'लूम होता था कि उन्हें गुमान है कि वोह दुन्या में हमेशा ही रहेंगे, जब उन की नौबत यहां तक पहुंची तो अल्लाह तआला ने बारिश रोक दी तीन साल बारिश न हुई अब वोह बहुत मुसीबत में मुब्तला हुए और उस ज़माने में दस्तूर येह था कि जब कोई बला या मुसीबत नाज़िल होती थी तो लोग बैतुल्लाहिल हराम में हाज़िर हो कर अल्लाह तआला से उस के दफ़्अ की दुआ करते थे, इसी लिये उन लोगों ने एक वफ़्द बैतुल्लाह को रवाना किया उस वफ़्द में क़ील बिन अनज़ा और नईम बिन हज़्ज़ाल और मरसद बिन सा'द थे येह वोही साहिब हैं जो हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए थे और अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे, उस ज़माने में मक्कए मुकर्रमा में अमालीक़ की सुकूनत थी और इन लोगों का सरदार मुआविया बिन बक्र था इस शख़्स का नानिहाल क़ौमे आद में था इसी अलाक़े (तअल्लुक़) से येह वफ़्द मक्कए मुकर्रमा के हवाली (गिर्दो नवाह) में मुआविया बिन बक्र के यहां मुक़ीम हुवा, उस ने इन लोगों का बहुत इक्राम किया निहायत ख़ातिरो मदारात की, येह लोग वहां शराब पीते और बांदियों का नाच देखते थे, इस तरह इन्हों ने ऐशो नशात में एक महीना बसर किया मुआविया को ख़याल आया कि येह लोग तो राहत में पड़ गए और क़ौम की मुसीबत को भूल गए जो वहां गिरिफ़्तारे बला है मगर मुआविया बिन बक्र को येह ख़याल भी था कि अगर वोह इन लोगों से कुछ कहे तो शायद वोह येह ख़याल करें कि अब इस को मेज़बानी गिरां गुज़रने लगी है इस लिये उस ने गाने वाली बांदी को ऐसे अश्आर दिये जिन में क़ौमे आद की हाजत का तज़्किरा था, जब बांदी ने वोह नज़्म गाई तो उन लोगों को याद आया कि हम उस क़ौम की मुसीबत की फ़रियाद करने के लिये मक्कए मुकर्रमा भेजे गए हैं, अब उन्हें ख़याल हुवा कि हरम शरीफ़ में दाख़िल हो कर क़ौम के लिये पानी बरसने की दुआ करें, उस वक़्त मरसद बिन सा'द ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! तुम्हारी दुआ से पानी न बरसेगा लेकिन अगर तुम अपने नबी की इताअत करो और अल्लाह तआला से तौबा करो तो बारिश होगी और उस वक़्त मरसद ने अपने इस्लाम का इज़्हार कर दिया, उन लोगों ने मरसद को छोड़ दिया और ख़ुद मक्कए मुकर्रमा जा कर दुआ की, अल्लाह तआला ने तीन अब्र (बादल) भेजे एक सफ़ेद एक सुर्ख़ एक सियाह और आस्मान से निदा हुई कि ऐ क़ील ! अपने और अपनी क़ौम के लिये इन में से एक अब्र इख़्तियार कर। उस ने अब्रे सियाह को इख़्तियार किया ब ई ख़याल कि इस से बहुत पानी बरसेगा। चुनान्चे वोह अब्र क़ौमे आद की तरफ़ चला और वोह लोग उस को देख कर बहुत ख़ुश हुए, मगर उस में से एक हवा चली वोह इस शिद्दत की थी कि ऊंटों और आदमियों को उड़ा उड़ा कर कहीं से कहीं ले जाती थी, येह देख कर वोह लोग घरों में दाख़िल हुए और अपने दरवाज़े बन्द कर लिये मगर हवा की तेज़ी से बच न सके उस ने दरवाज़े भी उखेड़ दिये और उन लोगों को हलाक भी कर दिया और क़ुदरते इलाही से सियाह परिन्दे नुमूदार हुए जिन्हों ने उन की लाशों को उठा कर समुन्दर में फेंक दिया, हज़रते हूद मोमिनीन को ले कर क़ौम से जुदा हो गए थे इस लिये वोह सलामत रहे, क़ौम के हलाक होने

www.dawateislami.net

اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ هٰذِهٖ

पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से[137] रोशन दलील आई[138] येह

نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ

अल्लाह का नाक़ा है[139] तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए और इसे बुराई से हाथ न लगाओ[140]

فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾ وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ

कि तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब आ लेगा और याद करो[141] जब तुम को आ़द का जा नशीन

عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ

किया और मुल्क में जगह दी कि नर्म ज़मीन में महल बनाते हो[142] और पहाड़ों में

الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ

मकान तराशते हो[143] तो अल्लाह की ने'मतें याद करो[144] और ज़मीन में फ़साद मचाते

مُفْسِدِيْنَ ﴿۷۴﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ

न फिरो उस की क़ौम के तकब्बुर वाले कमज़ोर

اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ

मुसल्मानों से बोले क्या तुम जानते हो कि सालेह़ अपने रब के रसूल हैं

قَالُوْۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۷۵﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا

बोले वोह जो कुछ ले कर भेजे गए हम उस पर ईमान रखते हैं[145] मुतकब्बिर बोले जिस

بِالَّذِيْۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ

पर तुम ईमान लाए हमें उस से इन्कार है पस[146] नाक़ा की कूचें (क़दम) काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की

के बा'द ईमानदारों को साथ ले कर मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाए और आख़िर उ़म्र शरीफ़ तक वहीं अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करते रहे। **136 :** जो हिजाज़ व शाम के दरमियान सर ज़मीने हिज्र में रहते थे। **137 :** मेरे सिदक़े नुबुव्वत पर **138 :** जिस का बयान येह है कि **139 :** जो न किसी पीठ में रहा न किसी पेट में, न किसी नर से पैदा हुवा न मादा से, न ह़म्ल में रहा न इस की ख़िल्क़त तदरीजन (दरजा ब दरजा पैदाइश) कमाल को पहुंची, बल्कि त़रीक़ए आ़दिया के ख़िलाफ़ वोह पहाड़ के एक पथ्थर से दफ़्अ़तन पैदा हुवा, इस की येह पैदाइश मो'जिज़ा है, फिर वोह एक दिन पानी पीता है और तमाम क़बीलए समूद एक दिन। येह भी मो'जिज़ा है कि एक नाक़ा एक क़बीले के बराबर पी जाए इस के इ़लावा उस के पीने के रोज़ उस का दूध दोहा जाता था और वोह इतना होता था कि तमाम क़बीले को काफ़ी हो और पानी के क़ाइम मक़ाम हो जाए येह भी मो'जिज़ा और तमाम वुहूश व ह़ैवानात उस की बारी के रोज़ पानी पीने से बाज़ रहते थे येह भी मो'जिज़ा। इतने मो'जिज़ात ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام के सिदक़े नुबुव्वत की ज़बर दस्त हुज्जतें हैं। **140 :** न मारो न हकाओ अगर ऐसा किया तो येही नतीजा होगा **141 :** ऐ क़ौमे समूद ! **142 :** मौसिमे गरमा में आराम करने के लिये **143 :** मौसिमे सरमा के लिये **144 :** और उस का शुक्र बजा लाओ। **145 :** उन के दीन को क़बूल करते हैं उन की रिसालत को मानते हैं। **146 :** क़ौमे समूद ने

www.dawateislami.net

وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۷۷﴾

और बोले ऐ सालेह़ हम पर ले आओ[147] जिस का तुम वा'दा दे रहे हो अगर तुम रसूल हो

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۷۸﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ

तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने आ लिया तो सुब्ह़ को अपने घरों में औंधे रह गए तो सालेह़ ने उन से मुंह फेरा[148]

وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّاۤ

और कहा ऐ मेरी क़ौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम

تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿۷۹﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ

ख़ैर ख़्वाहों के ग़रज़ी [पसन्द करने वाले] ही नहीं और लूत़ को भेजा[149] जब उस ने अपनी क़ौम से कहा क्या वोह बे ह़याई करते हो

مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۰﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ

जो तुम से पहले जहान में किसी ने न की तुम तो मर्दों के पास

شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿۸۱﴾ وَمَا كَانَ

शह़वत से जाते हो[150] औ़रतें छोड़ कर बल्कि तुम लोग ह़द से गुज़र गए[151] और उस की

جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ

क़ौम का कुछ जवाब न था मगर येही कहना कि इन[152] को अपनी बस्ती से निकाल दो येह

147 : वोह अ़ज़ाब **148 :** जब कि उन्हों ने सरकशी की। मन्क़ूल है कि उन लोगों ने चहार शम्बा (बुध) को नाक़ा की कूंचें काटी थीं तो ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि तुम इस के बा'द तीन रोज़ ज़िन्दा रहोगे पहले रोज़ तुम्हारे सब के चेहरे ज़र्द हो जाएंगे दूसरे रोज़ सुर्ख़ तीसरे रोज़ सियाह चौथे रोज़ अ़ज़ाब आएगा। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और यक शम्बा (इतवार) को दोपहर के क़रीब आस्मान से एक होलनाक आवाज़ आई जिस से उन लोगों के दिल फट गए और सब हलाक हो गए। **149 :** जो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के भतीजे हैं, आप अहले सदूम की त़रफ़ भेजे गए और जब आप के चचा ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने शाम की त़रफ़ हिजरत की तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने सर ज़मीने फ़िलिस्त़ीन में नुज़ूल फ़रमाया और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام उर्दुन में उतरे **अल्लाह** तआ़ला ने आप को अहले सदूम की त़रफ़ मब्ऊ़स किया आप उन लोगों को दीने ह़क़ की दा'वत देते थे और फ़े'ले बद से रोकते थे जैसा कि आयत शरीफ़ में ज़िक्र आता है। **150 :** या'नी उन के साथ बद फ़े'ली करते हो **151 :** कि ह़लाल को छोड़ कर ह़राम में मुब्तला हुए और ऐसे ख़बीस फ़े'ल का इरतिकाब किया। इन्सान को शह़वत बक़ाए नस्ल और दुन्या की आबादी के लिये दी गई है और औ़रतें महल्ले शह़वत व मौज़ए़ नस्ल बनाई गई हैं कि उन से ब त़रीक़ए़ मा'रूफ़ ह़स्बे इजाज़ते शरअ़ औलाद ह़ासिल की जाए, जब आदमियों ने औ़रतों को छोड़ कर उन का काम मर्दों से लेना चाहा तो वोह ह़द से गुज़र गए और उन्हों ने इस क़ुव्वत के मक़्सदे सह़ीह़ को फ़ौत कर दिया क्यूं कि मर्द को न ह़म्ल रहता है न वोह बच्चा जनता है, तो इस के साथ मश्ग़ूल होना सिवाए शैत़ानियत के और क्या है। उ़लमाए सियर व अख़्बार का बयान है कि क़ौमे लूत़ की बस्तियां निहायत सर सब्ज़ो शादाब थीं और वहां ग़ल्ले और फल ब कसरत पैदा होते थे ज़मीन का दूसरा ख़ित्त़ा उस का मिस्ल न था इस लिये जा बजा से लोग यहां आते थे और उन्हें परेशान करते थे, ऐसे वक़्त में इब्लीसे लईन एक बूढ़े की सूरत में नुमूदार हुवा और उन से कहने लगा कि अगर तुम मेहमानों की इस कसरत से नजात चाहते हो तो जब वोह लोग आएं तो उन के साथ बद फ़े'ली करो, इस त़रह़ येह फ़े'ले बद उन्हों ने शैत़ान से सीखा और उन में राइज हुवा। **152 :** या'नी ह़ज़रते लूत़ और उन के मुत्तबिईन।

www.dawateislami.net

اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ

लोग तो पाकीज़गी चाहते हैं[153] तो हम ने उसे[154] और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औरत वोह रह जाने

الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

वालों में हुई[155] और हम ने उन पर एक मींह बरसाया[156] तो देखो कैसा अन्जाम हुवा

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ ع وَ اِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا ع ١٠ ١٢ ١٧

मुजरिमों का[157] और मद्यन की तरफ़ उन की बिरादरी से शुऐब को भेजा[158] कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की इबादत

اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا

करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रोशन दलील आई[159] तो

الْكَيْلَ وَ الْمِيْزَانَ وَ لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَ لَا تُفْسِدُوْا فِى

नाप और तोल पूरी करो और लोगों की चीज़ें घटा कर न दो[160] और ज़मीन में

الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ ۚ وَ

इन्तिज़ाम के बा'द फ़साद न फैलाओ येह तुम्हारा भला है अगर ईमान लाओ और

لَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ

हर रास्ते पर यूं न बैठो कि राहगीरों को डराओ और अल्लाह की राह से उन्हें रोको[161] जो

اٰمَنَ بِهٖ وَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَ اذْكُرُوْۤا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۪

उस पर ईमान लाए और इस में कजी चाहो (टेढ़ा रास्ता ढूंडो) और याद करो जब तुम थोड़े थे उस ने तुम्हें बढ़ा दिया[162]

وَ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَ اِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ

और देखो[163] फ़सादियों का कैसा अन्जाम हुवा और अगर तुम में एक गुरोह

153 : और पाकीज़गी ही अच्छी होती है वोही क़ाबिले मद्ह है लेकिन उस क़ौम का ज़ौक़ इतना ख़राब हो गया था कि उन्हों ने इस सिफ़ते मद्ह को ऐब क़रार दिया। **154 :** या'नी हज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام को **155 :** वोह काफ़िरा थी और उस क़ौम से महब्बत रखती थी। **156 :** अजीब तरह का जिस में ऐसे पथ्थर बरसे कि गन्धक और आग से मुरक्कब थे। एक क़ौल येह है कि बस्ती में रहने वाले जो वहां मुक़ीम थे वोह तो ज़मीन में धंसा दिये गए और जो सफ़र में थे वोह उस बारिश से हलाक किये गए। **157 :** मुजाहिद ने कहा कि हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल हुए और उन्हों ने अपना बाज़ू क़ौमे लूत की बस्तियों के नीचे डाल कर उस ख़ित्ते को उखाड़ लिया और आस्मान के क़रीब पहुंच कर उस को औंधा कर के गिरा दिया इस के बा'द पथ्थरों की बारिश की गई। **158 :** हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने **159 :** जिस से मेरी नुबुव्वत व रिसालत यक़ीनी तौर पर साबित होती है, इस दलील से मो'जिज़ा मुराद है। **160 :** उन के हक़ दियानत दारी के साथ पूरे पूरे अदा करो। **161 :** और दीन का इत्तिबाअ करने में लोगों के लिये सद्दे राह (रुकावट) न बनो। **162 :** तुम्हारी ता'दाद ज़ियादा

www.dawateislami.net

اٰمَنُوْا بِالَّذِیْۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَ طَآىٕفَةٌ لَّمْ یُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى

उस पर ईमान लाया जो मैं ले कर भेजा गया और एक गुरौह ने न माना[164] तो ठहरे रहो यहां तक कि

یَحْكُمَ اللّٰهُ بَیْنَنَا ۚ وَ هُوَ خَیْرُ الْحٰكِمِیْنَ ۝۸۷

अल्लाह हम में फ़ैसला करे[165] और अल्लाह का फ़ैसला सब से बेहतर[166]

कर दी तो उस की ने'मत का शुक्र करो और ईमान लाओ। **163 :** ब निगाहे इ़ब्रत पिछली उम्मतों के अह़वाल और गुज़रे हुए ज़मानों में सरकशी करने वालों के अन्जाम व मआल देखो और सोचो **164 :** या'नी अगर तुम मेरी रिसालत में इख़्तिलाफ़ कर के दो फ़िर्क़े हो गए एक फ़िर्क़े ने माना और एक मुन्किर हुवा **165 :** कि तस्दीक़ करने वाले ईमानदारों को इ़ज़्ज़त दे और उन की मदद फ़रमाए और झुटलाने वाले मुन्किरीन को हलाक करे और उन्हें अ़ज़ाब दे। **166 :** क्यूं कि वोह ह़ाकिमे ह़क़ीक़ी है।

www.dawateislami.net

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ
उस की क़ौम के मुतकब्बिर सरदार बोले ऐ शुऐब क़सम है कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले
اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا
मुसल्मानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आ जाओ कहा[167] क्या अगर्चे हम
كٰرِهِيْنَ ﴿۸۸﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ
बेज़ार हों[168] ज़रूर हम **अल्लाह** पर झूट बांधेंगे अगर तुम्हारे दीन में आ जाएं बा'द इस के कि
نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَاۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ
अल्लाह ने हमें इस से बचाया है[169] और हम मुसल्मानों में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आए मगर येह कि **अल्लाह** चाहे[170]
رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ
जो हमारा रब है हमारे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत़ (घेरे हुए) है हम ने **अल्लाह** ही पर भरोसा किया[171] ऐ रब हमारे हम में
بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿۸۹﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ
और हमारी क़ौम में हक़ फ़ैसला कर[172] और तेरा फ़ैसला सब से बेहतर और उस की क़ौम के
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَىِٕنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۹۰﴾
काफ़िर सरदार बोले कि अगर तुम शुऐब के ताबेअ़ हुए तो ज़रूर तुम नुक़्सान में रहोगे
فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۹۱﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने आ लिया तो सुब्ह़ अपने घरों में औंधे पड़े रह गए[173] शुऐब को झुटलाने

167 : ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने **168 :** ह़ासिले मत़लब येह है कि हम तुम्हारा दीन न क़बूल करेंगे और अगर तुम ने हम पर जब्र किया जब भी न मानेंगे क्यूं कि **169 :** और तुम्हारे दीने बात़िल के क़ुब्ह़ (ऐब) व फ़साद का इल्म दिया है। **170 :** और उस को हलाक करना मन्ज़ूर हो और ऐसा ही मुक़द्दर हो। **171 :** अपने तमाम उमूर में वोही हमें ईमान पर साबित रखेगा वोही ज़ियादते ईक़ान (ईमान व यक़ीन में इज़ाफ़े) की तौफ़ीक़ देगा। **172 :** ज़ज्जाज ने कहा कि इस के येह मा'ना हो सकते हैं कि ऐ रब हमारे अम्र को ज़ाहिर फ़रमा दे, मुराद इस से येह है कि इन पर ऐसा अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा जिस से इन का बात़िल पर होना और ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام और इन के मुत्तबिईन का ह़क़ पर होना ज़ाहिर हो। **173 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उस क़ौम पर जहन्नम का दरवाज़ा खोला और उन पर दोज़ख़ की शदीद गरमी भेजी जिस से सांस बन्द हो गए, अब न उन्हें साया काम देता था न पानी, इस ह़ालत में वोह तहख़ाने में दाख़िल हुए ताकि वहां उन्हें कुछ अम्न मिले लेकिन वहां बाहर से ज़ियादा गरमी थी। वहां से निकल कर जंगल की त़रफ़ भागे **अल्लाह** तआ़ला ने एक अब्र (बादल) भेजा जिस में निहायत सर्द और ख़ुश गवार हवा थी उस के साए में आए और एक ने दूसरे को पुकार पुकार कर जम्अ़ कर लिया, मर्द औरतें बच्चे सब मुज्तमअ़ हो गए तो वोह ब हुक्मे इलाही आग बन कर भड़क उठा और वोह इस त़रह जल गए जैसे भाड़ (भट्टी) में कोई चीज़ भुन जाती है। क़तादा का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام को अस्ह़ाबे ऐका की त़रफ़ भी मब्ऊ़स फ़रमाया था और अहले मद्यन की त़रफ़ भी, अस्ह़ाबे ऐका तो अब्र से हलाक किये गए और अहले मद्यन ज़ल्ज़ले में गिरिफ़्तार हुए और एक होलनाक आवाज़ से हलाक हो गए।

www.dawateislami.net

مع

شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۚ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ

वाले गोया उन घरों में कभी रहे ही न थे शुऐ़ब को झुटलाने वाले वोही

الْخٰسِرِيْنَ ﴿۹۲﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ

तबाही में पड़े तो शुऐ़ब ने उन से मुंह फेरा[174] और कहा ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा चुका

ع ٩ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿۹۳﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ

और तुम्हारे भले को नसीह़त की[175] तो क्यूंकर ग़म करूं काफ़िरों का और न भेजा हम ने किसी बस्ती में

مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿۹۴﴾

कोई नबी[176] मगर येह कि उस के लोगों को सख़्ती और तक्लीफ़ में पकड़ा[177] कि वोह किसी त़रह़ ज़ारी (आ़जिज़ी) करें[178]

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا

फिर हम ने बुराई की जगह भलाई बदल दी[179] यहां तक कि वोह बहुत हो गए[180] और बोले बेशक हमारे बाप दादा को

الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۹۵﴾ وَلَوْ اَنَّ

रन्ज व राह़त पहुंचे थे[181] तो हम ने उन्हें अचानक उन की ग़फ़्लत में पकड़ लिया[182] और अगर

اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ

बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते[183] तो ज़रूर हम उन पर आस्मान और ज़मीन से बरकतें

الْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۶﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ

खोल देते[184] मगर उन्हों ने तो झुटलाया[185] तो हम ने उन्हें उन के किये पर गिरिफ़्तार किया[186] क्या बस्तियों वाले[187]

174 : जब उन पर अ़ज़ाब आया। 175 : मगर तुम किसी त़रह़ ईमान न लाए। 176 : जिस को उस की क़ौम ने न झुटलाया हो। 177 : फ़क़्रो तंगदस्ती और मरज़ व बीमारी में गिरिफ़्तार किया 178 : तकब्बुर छोड़ें, तौबा करें, ह़ुक्मे इलाही के मुत़ीअ़ बनें। 179 : कि सख़्ती व तक्लीफ़ के बा'द राह़तो आसाइश पहुंचना और बदनी व माली ने'मतें मिलना इत़ाअ़त व शुक्र गुज़ारी का मुस्तद्इ (चाहने वाला) है। 180 : उन की ता'दाद भी ज़ियादा हुई और माल भी बढ़े। 181 : या'नी ज़माने का दस्तूर ही येह है कि कभी तक्लीफ़ होती है कभी राह़त, हमारे बाप दादा पर भी ऐसे अह़वाल गुज़र चुके हैं, इस से उन का मुद्आ़ येह था कि पिछला ज़माना जो सख़्तियों में गुज़रा है वोह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से कुछ उ़क़ूबत व सज़ा न था तो अपना दीन तर्क करना न चाहिये। न उन लोगों ने शिद्दत व तक्लीफ़ से कुछ नसीह़त ह़ासिल की न राह़तो आराम से उन में कोई जज़्बए शुक्रो त़ाअ़त पैदा हुवा वोह ग़फ़्लत में सरशार रहे। 182 : जब कि उन्हें अ़ज़ाब का ख़याल भी न था। इन वाक़िआ़त से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये और बन्दों को गुनाह व सरकशी तर्क कर के अपने मालिक का रिज़ा जू (रिज़ा मन्दी चाहने वाला) होना चाहिये। 183 : और ख़ुदा और रसूल की इत़ाअ़त इख़्तियार करते और जिस चीज़ को अल्लाह और रसूल ने मन्अ़ फ़रमाया उस से बाज़ रहते 184 : हर त़रफ़ से उन्हें ख़ैर पहुंचती, वक़्त पर नाफ़ेअ़ और मुफ़ीद बारिशें होतीं, ज़मीन से खेती फल ब कसरत पैदा होते, रिज़्क़ की फ़राख़ी होती, अम्नो सलामती रहती, आफ़तों से महफ़ूज़ रहते 185 : अल्लाह के रसूलों को 186 : और अन्वाए़ अ़ज़ाब में मुब्तला किया 187 : कुफ़्फ़ार ख़्वाह वोह मक्कए मुकर्रमा के रहने वाले हों या गिर्दो पेश के या और कहीं के।

www.dawateislami.net

الْقُرٰۤى اَنْ یَّاْتِیَهُمْ بَاْسُنَا بَیَاتًا وَّ هُمْ نَآىٕمُوْنَؕ(۹۷) اَوَ اَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى

नहीं डरते कि उन पर हमारा अज़ाब रात को आए जब वोह सोते हों या बस्तियों वाले नहीं डरते कि

اَنْ یَّاْتِیَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّ هُمْ یَلْعَبُوْنَ(۹۸) اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِۚ فَلَا یَاْمَنُ

उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आए जब वोह खेल रहे हों[188] क्या **अल्लाह** की ख़ुफ़ी तदबीर से निडर हैं[189] तो **अल्लाह** की ख़ुफ़ी तदबीर

مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ۠(۹۹) اَوَ لَمْ یَهْدِ لِلَّذِیْنَ یَرِثُوْنَ

से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले[190] और क्या वोह जो ज़मीन के मालिकों के बा'द उस के

الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَاۤ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْۚ وَ

वारिस हुए उन्हें इतनी हिदायत न मिली कि हम चाहें तो उन्हें उन के गुनाहों पर आफ़त पहुंचाएं[191] और

نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا یَسْمَعُوْنَ(۱۰۰) تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ

हम उन के दिलों पर मोहर करते हैं कि वोह कुछ नहीं सुनते[192] येह बस्तियां हैं[193] जिन के

عَلَیْكَ مِنْ اَنْۢبَآىٕهَاۚ وَ لَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَیِّنٰتِۚ فَمَا

अह्वाल हम तुम्हें सुनाते हैं[194] और बेशक उन के पास उन के रसूल रोशन दलीलें[195] ले कर आए तो वोह[196]

كَانُوْا لِیُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُؕ كَذٰلِكَ یَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ

इस क़ाबिल न हुए कि वोह उस पर ईमान लाते जिसे पहले झुटला चुके थे[197] **अल्लाह** यूंही छाप (मोहर) लगा देता है काफ़िरों

الْكٰفِرِیْنَ(۱۰۱) وَ مَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍۚ وَ اِنْ وَّجَدْنَاۤ اَكْثَرَهُمْ

के दिलों पर[198] और उन में अक्सर को हम ने क़ौल (वा'दे) का सच्चा न पाया[199] और ज़रूर उन में अक्सर को

لَفٰسِقِیْنَ(۱۰۲) ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰیٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ

बे हुक्म ही पाया फिर उन[200] के बा'द हम ने मूसा को अपनी निशानियों[201] के साथ फ़िरऔन और उस के दरबारियों

188 : और अज़ाब के आने से ग़ाफ़िल हों **189 :** और उस के ढील देने और दुन्यवी ने'मत देने पर मग़रूर हो कर उस के अज़ाब से बे फ़िक्र हो गए हैं **190 :** और उस के मुख़्लिस बन्दे उस का ख़ौफ़ रखते हैं। रबीअ़ बिन ख़ैसम की साहिब ज़ादी ने उन से कहा क्या सबब है मैं देखती हूं सब लोग सोते हैं और आप नहीं सोते हैं ? फ़रमाया ऐ नूरे नज़र तेरा बाप शब को सोने से डरता है। या'नी येह कि ग़ाफ़िल हो कर सो जाना कहीं सबबे अज़ाब न हो। **191 :** जैसा कि हम ने उन के मूरिसों (विरसा छोड़ने वालों) को उन की ना फ़रमानी के सबब हलाक किया। **192 :** और कोई पन्दो नसीहत नहीं मानते। **193 :** क़ौमे हज़रते नूह और आद व समूद और क़ौमे हज़रते लूत व क़ौमे हज़रते शुऐब की। **194 :** ताकि मा'लूम हो कि हम अपने रसूलों की और उन पर ईमान लाने वालों की अपने दुश्मनों या'नी काफ़िरों के मुक़ाबले में मदद किया करते हैं। **195 :** या'नी मो'जिज़ाते बाहिरात (ज़बर दस्त मो'जिज़ात) **196 :** ता दमे मर्ग **197 :** अपने कुफ़्रो तक्ज़ीब पर जमे ही रहे। **198 :** जिन की निस्बत उस के इल्म में है कि कुफ़्र पर क़ाइम रहेंगे और कभी ईमान न लाएंगे। **199 :** उन्हों ने **अल्लाह** के अ़हद पूरे न किये, उन पर जब

مَلَا۠ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَقَالَ

की त़रफ़ भेजा तो उन्हों ने उन निशानियों पर ज़ियादती की[202] तो देखो कैसा अन्जाम हुवा मुफ़्सिदों (फ़साद करने वालों) का और मूसा

مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ حَقِيْقٌ عَلٰۤى اَنْ لَّاۤ

ने कहा ऐ फ़िरऔ़न मैं परवर्दगारे आ़लम का रसूल हूं मुझे सज़ावार (मुनासिब येही) है कि

اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ

अल्लाह पर न कहूं मगर सच्ची बात[203] मैं तुम सब के पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से निशानी ले कर आया हूं[204] तो तू बनी इसराईल को

مَعِيَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۰۵﴾ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَاۤ اِنْ كُنْتَ

मेरे साथ छोड़ दे[205] बोला अगर तुम कोई निशानी ले कर आए हो तो लाओ अगर

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۷﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ

सच्चे हो तो मूसा ने अपना अ़सा डाल दिया वोह फ़ौरन एक ज़ाहिर अज़्दहा हो गया[206] और अपना हाथ गिरेबान में डाल कर निकाला

فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا

तो वोह देखने वालों के सामने जगमगाने लगा[207] क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले येह तो एक

لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۹﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

इ़ल्म वाला जादूगर है[208] तुम्हें तुम्हारे मुल्क[209] से निकाला चाहता है तो तुम्हारा क्या मश्वरा है

قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ

बोले उन्हें और उन के भाई[210] को ठहरा और शहरों में लोग जम्अ़ करने वाले भेज दे कि हर इ़ल्म वाले

कभी कोई मुसीबत आती तो अ़ह्द करते कि या रब ! तू अगर इस से हमें नजात दे तो हम ज़रूर ईमान लाएंगे, फिर जब नजात पाते अ़ह्द से फिर जाते। (مدارک) **200 :** अम्बियाए मज़्कूरीन **201 :** या'नी मो'जिज़ाते वाज़ेह़ात मिस्ले यदे बैज़ा व अ़सा वग़ैरा **202 :** उन्हें झुटलाया और कुफ़्र किया। **203 :** क्यूं कि रसूल की येही शान है, वोह कभी ग़लत़ बात नहीं कहते और तब्लीग़े रिसालत में इन का किज़्ब मुम्किन नहीं। **204 :** जिस से मेरी रिसालत साबित है और वोह निशानी मो'जिज़ात हैं। **205 :** और अपनी क़ैद से आज़ाद कर दे ताकि वोह मेरे साथ अर्ज़े मुक़द्दसा में चले जाएं जो उन का वत़न है। **206 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़सा डाला तो वोह एक बड़ा अज़्दहा बन गया ज़र्द रंग मुंह खोले हुए ज़मीन से एक मील ऊंचा अपनी दुम पर खड़ा हो गया और एक जबड़ा उस ने ज़मीन पर रखा और एक क़स्रे शाही की दीवार पर फिर उस ने फ़िरऔ़न की त़रफ़ रुख़ किया तो फ़िरऔ़न अपने तख़्त से कूद कर भागा और डर से उस की रीह़ निकल गई और लोगों की त़रफ़ रुख़ किया तो ऐसी भाग पड़ी कि हज़ारों आदमी आपस में कुचल कर मर गए फ़िरऔ़न घर में जा कर चीख़ने लगा : ऐ मूसा ! तुम्हें उस की क़सम जिस ने तुम्हें रसूल बनाया इस को पकड़ लो मैं तुम पर ईमान लाता हूं और तुम्हारे साथ बनी इसराईल को भेजे देता हूं। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उस को उठा लिया तो वोह मिस्ले साबिक़ अ़सा था। **207 :** और उस की रोशनी और चमक नूरे आफ़्ताब पर ग़ालिब हो गई। **208 :** जिस ने जादू से नज़र बन्दी की और लोगों को अ़सा अज़्दहा नज़र आने लगा और गन्दुमी रंग का हाथ आफ़्ताब से ज़ियादा रोशन मा'लूम होने लगा। **209 :** मिस्र **210 :** ह़ज़रते हारून।

سِحْرٍ عَلِيْمٍ ﴿۱۱۲﴾ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا

जादूगर को तेरे पास ले आएं[211] और जादूगर फ़िरऔ़न के पास आए बोले कुछ हमें इन्आ़म मिलेगा अगर

نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۳﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى

हम ग़ालिब आएं बोला हां और उस वक़्त तुम मुक़र्रब हो जाओगे बोले ऐ मूसा

اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ

या तो[212] आप डालें या हम डालने वाले हों[213] कहा तुम्हीं डालो[214] जब

اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۱۶﴾ وَ

उन्हों ने डाला[215] लोगों की निगाहों पर जादू कर दिया और उन्हें डरा दिया और बड़ा जादू लाए और

اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ ۚ

हम ने मूसा को वह्य फ़रमाई कि अपना अ़सा डाल तो नागाह वोह उन की बनावटों को निगलने लगा[216]

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ ۚ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا

तो ह़क़ साबित हुवा और उन का काम बात़िल हुवा तो यहां वोह मग़्लूब पड़े और ज़लील

صٰغِرِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ ۚ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ ۚ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۱﴾ ۙ

हो कर पलटे और जादूगर सज्दे में गिरा दिये गए[217] बोले हम ईमान लाए जहान के रब पर

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ

जो रब है मूसा और हारून का फ़िरऔ़न बोला तुम इस पर ईमान ले आए क़ब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं

211 : जो सेह्र में माहिर हो और सब से फ़ाइक़, चुनान्चे लोग रवाना हुए और अत़राफ़ व बिलाद में तलाश कर के जादूगरों को ले आए। **212 :** पहले अपना अ़सा **213 :** जादूगरों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह अदब किया कि आप को मुक़द्दम किया और बिग़ैर आप की इजाज़त के अपने अ़मल में मश्ग़ूल न हुए, इस अदब का इ़वज़ (बदला) उन्हें येह मिला कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ईमान व हिदायत के साथ मुशर्रफ़ किया। **214 :** येह फ़रमाना ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का इस लिये था कि आप उन की कुछ परवाह नहीं करते थे और ए'तिमादे कामिल रखते थे कि उन के मो'जिज़े के सामने सेह्र नाकाम व मग़्लूब होगा। **215 :** अपना सामान जिस में बड़े बड़े रस्से और शहतीर थे तो वोह अज़्दहे नज़र आने लगे और मैदान उन से भरा मा'लूम होने लगा। **216 :** जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना अ़सा डाला तो वोह एक अ़ज़ीमुश्शान अज़्दहा बन गया। इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि येह इस्किमाअ़ इस्कन्दरिया में हुवा था और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के अज़्दहे की दुम समुन्दर के पार पहुंच गई थी वोह जादूगरों की सेह्र कारियों को एक एक कर के निगल गया और तमाम रस्से व लठ्ठे जो उन्हों ने जम्अ़ किये थे जो तीन सो ऊंट का बार थे सब का ख़ातिमा कर दिया, जब मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस को दस्ते मुबारक में लिया तो पहले की त़रह़ अ़सा हो गया और उस का ह़ज्म और वज़्न अपने ह़ाल पर रहा, येह देख कर जादूगरों ने पहचान लिया कि अ़साए मूसा सेह्र नहीं और क़ुदरते बशरी ऐसा करिश्मा नहीं दिखा सकती, ज़रूर येह अम्र समावी है, येह बात समझ कर वोह "اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" (हम ईमान लाए जहान के रब पर) कहते हुए सज्दे में गिर गए। **217 :** या'नी येह मो'जिज़ा देख कर उन पर ऐसा असर हुवा कि वोह बे इख़्तियार सज्दे में गिर गए, मा'लूम होता था कि किसी ने पेशानियां पकड़ कर ज़मीन पर लगा दीं।

www.dawateislami.net

اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ

येह तो बड़ा जा'ल (मक्रो फ़रेब) है जो तुम सब ने[218] शहर में फैलाया है कि शहर वालों को इस से निकाल दो[219] तो अब

تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ

जान जाओगे[220] क़सम है कि मैं तुम्हारे एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काटूंगा फिर तुम सब को

اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ ۚ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ

सूली दूंगा[221] बोले हम अपने रब की त़रफ़ फिरने वाले हैं[222] और तुझे हमारा क्या बुरा लगा येही ना कि

اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا

हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वोह हमारे पास आईं ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे[223] और हमें

مُسْلِمِيْنَ ﴿۱۲۶﴾ ع ۱۸ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ

मुसल्मान उठा[224] और क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदार बोले क्या तू मूसा और उस की क़ौम को इस लिये छोड़ता है

لِيُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ

कि वोह ज़मीन में फ़साद फैलाएं[225] और मूसा तुझे और तेरे ठहराए हुए मा'बूदों को छोड़ दे[226] बोला अब हम इन के बेटों को क़त्ल करेंगे

وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ

और इन की बेटियां ज़िन्दा रखेंगे और हम बेशक इन पर ग़ालिब हैं[227] मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया

218 : या'नी तुम ने और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने सब ने मुत्तफ़िक़ हो कर **219 :** और खुद इस पर मुसल्लत़ हो जाओ। **220 :** कि मैं तुम्हारे साथ किस त़रह़ पेश आता हूं। **221 :** नील के किनारे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि दुन्या में पहला सूली देने वाला पहला हाथ पाउं काटने वाला फ़िरऔ़न है। फ़िरऔ़न की इस गुफ़्तगू पर जादूगरों ने येह जवाब दिया जो अगली आयत में मज़्कूर है **: 222 :** तो हमें मौत का क्या ग़म, क्यूं कि मर कर हमें अपने रब की लिक़ा (मुलाक़ात व दीदार) और उस की रह़मत नसीब होगी और जब सब को उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करना है तो वोह खुद हमारे तेरे दरमियान फ़ैसला फ़रमा देगा। **223 :** या'नी हम को सब्रे कामिल ताम अ़त़ा फ़रमा और इस कसरत से अ़त़ा फ़रमा जैसे पानी किसी पर उंडेल दिया जाता है। **224 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया **:** येह लोग दिन के अव्वल वक़्त में जादूगर थे और उसी रोज़ आख़िर वक़्त में शहीद। **225 :** या'नी मिस्र में तेरी मुख़ालफ़त करें और वहां के बाशिन्दों का दीन बदलें और येह उन्हों ने इस लिये कहा था कि साह़िरों के साथ छ[6] लाख आदमी ईमान ले आए थे। (مدارک) **226 :** कि न तेरी इ़बादत करें न तेरे मुक़र्रर किये हुए मा'बूदों की। सुद्दी का क़ौल है कि फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम के लिये बुत बनवा दिये थे और उन की इ़बादत करने का हुक्म देता था और कहता था कि मैं तुम्हारा भी रब हूं और इन बुतों का भी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न दहरी था या'नी "सानेए़ आलम के वुजूद का मुन्किर" उस का ख़याल था कि आ़लमे सिफ़्ली के मुदब्बिर कवाकिब हैं इसी लिये उस ने सितारों की सूरतों पर बुत बनवाए थे, उन की खुद भी इ़बादत करता था और दूसरों को भी उन की इ़बादत का हुक्म देता था और अपने आप को मुत़ाअ़ व मख़्दूम (सरदार व मालिक) ज़मीन का कहता था इसी लिये "اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰی" (मैं तुम्हारा सब से ऊंचा रब हूं) कहता था। **227 :** क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदारों ने फ़िरऔ़न से येह जो कहा था कि क्या तू मूसा और उस की क़ौम को इस लिये छोड़ता है कि वोह ज़मीन में फ़साद फैलाएं, इस से उन का मत़लब फ़िरऔ़न को ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के और आप की क़ौम के क़त्ल पर उभारना था, जब उन्हों ने ऐसा किया तो मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन को नुज़ूले अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाया और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम की ख़्वाहिश पर क़ुदरत नहीं रखता था क्यूं कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़े की क़ुव्वत से मरऊ़ब हो चुका था इसी लिये उस ने अपनी क़ौम से येह कहा कि हम बनी इसराईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे

www.dawateislami.net

اسْتَعِينُوا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ۫ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ

अल्लाह की मदद चाहो[228] और सब्र करो[229] बेशक ज़मीन का मालिक अल्लाह है[230] अपने बन्दों में जिसे चाहे

عِبَادِهٖ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾ قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَ

वारिस बनाए[231] और आख़िर मैदान परहेज़ गारों के हाथ है[232] बोले हम सताए गए आप के आने से पहले[233] और

مِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ

आप के तशरीफ़ लाने के बा'द[234] कहा क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक करे और उस की जगह

فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ركوع ١٥

ज़मीन का मालिक तुम्हें बनाए फिर देखे कैसे काम करते हो[235] और बेशक हम ने फ़िरऔन वालों को

بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاِذَا جَآءَتْهُمُ

बरसों के क़ह्त़ और फलों के घटाने से पकड़ा[236] कि कहीं वोह नसीहत मानें[237] तो जब उन्हें भलाई

الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ

मिलती[238] कहते येह हमारे लिये है[239] और जब बुराई पहुंचती तो मूसा और उस के साथ वालों से

مَّعَهٗ ؕ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوْا

बद शुगूनी लेते[240] सुन लो उन के नसीबे (मुक़द्दर) की शामत तो अल्लाह के यहां है[241] लेकिन उन में अक्सर को ख़बर नहीं और बोले

लड़कियों को छोड़ देंगे, इस से उस का मत़लब येह था कि इस त़रह़ क़ौमे ह़ज़रत मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ता'दाद घटा कर उन की क़ुव्वत कम करेंगे और अ़वाम में अपना भरम रखने के लिये येह भी कह दिया कि हम बेशक उन पर ग़ालिब हैं, लेकिन फ़िरऔ़न के इस क़ौल से कि हम बनी इसराईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे बनी इसराईल में कुछ परेशानी पैदा हो गई और उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इस की शिकायत की, इस के जवाब में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने येह फ़रमाया (जो इस के बा'द आता है) **228 :** वोह काफ़ी है **229 :** मुसीबतों और बलाओं पर और घबराओ नहीं **230 :** और ज़मीने मिस्र भी इस में दाख़िल है। **231 :** येह फ़रमा कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बनी इसराईल को तवक़्क़ोअ़ (उम्मीद) दिलाई कि फ़िरऔ़न और उस की क़ौम हलाक होगी और बनी इसराईल उन की ज़मीनों और शहरों के मालिक होंगे। **232 :** उन्हीं के लिये फ़त्ह़ो ज़फ़र है और उन्हीं के लिये आ़क़िबते मह़मूदा। **233 :** कि फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों ने त़रह़ त़रह़ की मुसीबतों में मुब्तला कर रखा था और लड़कों को बहुत ज़ियादा क़त्ल किया था **234 :** कि अब वोह फिर हमारी औलाद के क़त्ल का इरादा रखता है तो हमारी मदद कब होगी और येह मुसीबतें कब दफ़्अ़ की जाएंगी। **235 :** और किस त़रह़ शुक्रे ने'मत बजा लाते हो। **236 :** और फ़क़्रो फ़ाक़ा की मुसीबत में गिरिफ़्तार किया **237 :** और कुफ़्रो मा'सियत से बाज़ आएं। फ़िरऔ़न ने अपनी चार सो बरस की उ़म्र में से तीन सो बीस साल तो इस आराम के साथ गुज़ारे थे कि इस मुद्दत में कभी दर्द या बुख़ार या भूक में मुब्तला ही नहीं हुवा अब क़ह्त़ साली की सख़्ती उन पर इस लिये डाली गई कि वोह इस सख़्ती ही से ख़ुदा को याद करें और उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हों, लेकिन वोह कुफ़्र में इस क़दर रासिख़ (पुख़्ता) हो चुके थे कि इन तक्लीफ़ों से भी उन की सरकशी ही बढ़ती रही। **238 :** और अरज़ानी व फ़राख़ी (या'नी फलों की कसरत) व अम्नो आ़फ़िय्यत होती **239 :** या'नी हम इस के मुस्तह़िक़ ही हैं और इस को अल्लाह का फ़ज़्ल न जानते और शुक्रे इलाही न बजा लाते। **240 :** और कहते कि येह बलाएं उन की वज्ह से पहुंचीं अगर येह न होते तो येह मुसीबतें न आतीं। **241 :** जो उस ने मुक़द्दर किया है वोही पहुंचता है और येह उन के कुफ़्र के सबब है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं : मा'ना येह हैं कि बड़ी शामत तो वोह है जो उन के लिये अल्लाह के यहां है या'नी अ़ज़ाबे दोज़ख़।

www.dawateislami.net

مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰیَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳۲﴾

तुम कैसी भी निशानी ले कर हमारे पास आओ कि हम पर उस से जादू करो हम किसी तरह तुम पर ईमान लाने वाले नहीं[242]

فَاَرْسَلْنَا عَلَیْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ

तो भेजा हम ने उन पर तूफ़ान[243] और टीड़ी (टिड्डी) और घुन (किलनी या जूएं) और मेंडक और ख़ून

242 : जब उन की सरकशी यहां तक पहुंची तो हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उन के हक़ में बद दुआ की, आप मुस्तजाबुद्दा'वात थे, दुआ क़बूल हुई। **243 :** जब जादूगरों के ईमान लाने के बा'द भी फ़िरऔनी अपने कुफ़्रो सरकशी पर जमे रहे तो उन पर आयाते इलाहिय्यह पयापै (लगातार) वारिद होने लगीं क्यूं कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दुआ की थी कि या रब फ़िरऔन ज़मीन में बहुत सरकश हो गया और इस की क़ौम ने अ़हद शिकनी की, इन्हें ऐसे अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर जो इन के लिये सज़ा हो और मेरी क़ौम और बा'द वालों के लिये इ़ब्रत, तो **अल्लाह** तआ़ला ने तूफ़ान भेजा अब्र आया, अंधेरा हुवा, कसरत से बारिश होने लगी, क़िब्तियों के घरों में पानी भर गया, यहां तक कि वोह उस में खड़े रह गए और पानी उन की गरदनों की हंस्लियों तक आ गया, उन में से जो बैठा डूब गया, न हिल सकते थे न कुछ काम कर सकते थे। सनीचर से सनीचर (या'नी एक हफ़्ते से अगले हफ़्ते) तक सात रोज़ तक इसी मुसीबत में मुब्तला रहे और बा वुजूद इस के कि बनी इसराईल के घर उन के घरों से मुत्तसिल थे उन के घरों में पानी न आया, जब येह लोग आ़जिज़ हुए तो हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया : हमारे लिये दुआ फ़रमाइये कि येह मुसीबत रफ़्अ़ हो तो हम आप पर ईमान लाएं और बनी इसराईल को आप के साथ भेज दें। हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने दुआ फ़रमाई तूफ़ान की मुसीबत रफ़्अ़ हुई, ज़मीन में वोह सर सब्ज़ी व शादाबी आई जो पहले न देखी थी, खेतियां ख़ूब हुईं, दरख़्त ख़ूब फले तो फ़िरऔनी कहने लगे येह पानी तो ने'मत था और ईमान न लाए। एक महीना तो आ़फ़िय्यत से गुज़रा फिर **अल्लाह** तआ़ला ने टिड्डी भेजी, वोह खेतियां और फल, दरख़्तों के पत्ते, मकानों के दरवाज़े, छतें, तख़्ते, सामान हत्ता कि लोहे की कीलें तक खा गईं और क़िब्तियों के घरों में भर गईं और बनी इसराईल के यहां न गईं, अब क़िब्तियों ने परेशान हो कर फिर हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से दुआ की दरख़्वास्त की, ईमान लाने का वा'दा किया, इस पर अ़हदो पैमान किया, सात रोज़ या'नी शम्बा से शम्बा तक टिड्डी की मुसीबत में मुब्तला रहे, फिर हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ से नजात पाई खेतियां और फल जो कुछ बाक़ी रह गए थे उन्हें देख कर कहने लगे येह हमें काफ़ी हैं, हम अपना दीन नहीं छोड़ते, चुनान्चे ईमान न लाए, अ़हद वफ़ा न किया और अपने आ'माले ख़बीसा में मुब्तला हो गए। एक महीना आ़फ़िय्यत से गुज़रा फिर **अल्लाह** तआ़ला ने कुम्मल भेजे। इस में मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़ है बा'ज़ कहते हैं कुम्मल घुन है, बा'ज़ कहते हैं जूं, बा'ज़ कहते हैं एक और छोटा सा कीड़ा है, उस कीड़े ने जो खेतियां और फल बाक़ी रहे थे वोह खा लिये, कपड़ों में घुस जाता था और जिल्द को काटता था, खाने में भर जाता था, अगर कोई दस बोरी गेहूं चक्की पर ले जाता तो तीन सेर वापस लाता, बाक़ी सब कीड़े खा जाते। येह कीड़े फ़िरऔनियों के बाल, भवें, पलकें चाट गए। जिस्म पर चेचक की तरह भर जाते, सोना दुश्वार कर दिया था, इस मुसीबत से फ़िरऔनी चीख़ पड़े और उन्हों ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया हम तौबा करते हैं, आप इस बला के दफ़्अ़ होने की दुआ फ़रमाइये, चुनान्चे सात रोज़ के बा'द येह मुसीबत भी हज़रत की दुआ से रफ़्अ़ हुई लेकिन फ़िरऔनियों ने फिर अ़हद शिकनी की और पहले से ज़ियादा ख़बीस तर अ़मल शुरूअ़ किये। एक महीना अम्न में गुज़रने के बा'द फिर हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बद दुआ की तो **अल्लाह** तआ़ला ने मेंडक भेजे और येह हाल हुवा कि आदमी बैठता था तो उस की मजलिस में मेंडक भर जाते थे, बात करने के लिये मुंह खोलता तो मेंडक कूद कर मुंह में पहुंचता। हांडियों में मेंडक, खानों में मेंडक, चूल्हों में मेंडक भर जाते थे आग बुझ जाती थी, लैटते थे तो मेंडक ऊपर सुवार होते थे, इस मुसीबत से फ़िरऔनी रो पड़े और हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया अब की बार हम पक्की तौबा करते हैं, हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उन से अ़हदो पैमान ले कर दुआ की तो सात रोज़ के बा'द येह मुसीबत भी दफ़्अ़ हुई और एक महीना आ़फ़िय्यत से गुज़रा लेकिन फिर उन्हों ने अ़हद तोड़ दिया और अपने कुफ़्र की तरफ़ लौटे, फिर हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बद दुआ फ़रमाई तो तमाम कूंओं का पानी नहरों और चश्मों का पानी दरियाए नील का पानी ग़रज़ हर पानी उन के लिये ताज़ा ख़ून बन गया। उन्हों ने फ़िरऔन से इस की शिकायत की तो कहने लगा कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने जादू से तुम्हारी नज़र बन्दी कर दी, उन्हों ने कहा : कैसी नज़र बन्दी ? हमारे बरतनों में ख़ून के सिवा पानी का नामो निशान ही नहीं। फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि क़िब्ती बनी इसराईल के साथ एक ही बरतन से पानी लें तो जब बनी इसराईल निकालते तो पानी निकलता क़िब्ती निकालते तो उसी बरतन से ख़ून निकलता, यहां तक कि फ़िरऔनी औ़रतें प्यास से आ़जिज़ हो कर बनी इसराईल की औ़रतों के पास आईं और उन से पानी मांगा तो वोह पानी उन के बरतन में आते ही ख़ून हो गया। तो फ़िरऔनी औ़रत कहने लगी कि तू पानी अपने मुंह में ले कर मेरे मुंह में कुल्ली कर दे, जब तक वोह पानी इसराईली औ़रत के मुंह में रहा पानी था जब फ़िरऔनी औ़रत के मुंह में पहुंचा ख़ून हो गया। फ़िरऔन ख़ुद प्यास से मुज़्तर (बेचैन) हुवा तो उस ने तर दरख़्तों की रतूबत चूसी वोह रतूबत मुंह में पहुंचते ही ख़ून हो गई। सात रोज़ तक ख़ून के सिवा कोई चीज़ पीने की मुयस्सर न आई तो फिर हज़रते मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से दुआ की दरख़्वास्त की और ईमान लाने

www.dawateislami.net

اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ قف فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿١٣٣﴾ وَلَمَّا وَقَعَ

जुदा जुदा निशानियां[244] तो उन्हों ने तकब्बुर किया[245] और वोह मुजरिम क़ौम थी और जब

عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ج لَئِنْ

उन पर अ़ज़ाब पड़ता कहते ऐ मूसा हमारे लिये अपने रब से दुआ़ करो उस अ़हद के सबब जो उस का तुम्हारे पास है[246] बेशक अगर

كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٣٤﴾ ج

तुम हम पर से अ़ज़ाब उठा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएंगे और बनी इसराईल को तुम्हारे साथ कर देंगे

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿١٣٥﴾

फिर जब हम उन से अ़ज़ाब उठा लेते एक मुद्दत के लिये जिस तक उन्हें पहुंचना है जभी वोह फिर जाते

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا

तो हम ने उन से बदला लिया तो उन्हें दरिया में डुबो दिया[247] इस लिये कि हमारी आयतें झुटलाते और उन से

غٰفِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ

बे ख़बर थे[248] और हम ने उस क़ौम को[249] जो दबा ली (कमज़ोर समझी) गई थी इस ज़मीन[250] के पूरब

الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ط وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى

पश्चिम (मशरिक़ो मग़रिब) का वारिस किया जिस में हम ने बरकत रखी[251] और तेरे रब का अच्छा वा'दा

عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ط وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَ

बनी इसराईल पर पूरा हुवा बदला उन के सब्र का और हम ने बरबाद कर दिया[252] जो कुछ फ़िरऔन और

قَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿١٣٧﴾ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا

उस की क़ौम बनाती और जो चुनाइयां उठाते (ता'मीर करते) थे और हम ने[253] बनी इसराईल को दरिया पार उतारा तो उन का गुज़र

का वा'दा किया। हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ़ फ़रमाई, येह मुसीबत भी रफ़्अ़ हुई मगर ईमान फिर भी न लाए। **244 :** एक के बा'द दूसरी और हर अ़ज़ाब एक हफ़्ता क़ाइम रहता और दूसरे अ़ज़ाब से एक महीने का फ़ासिला होता। **245 :** और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान न लाए। **246 :** कि वोह आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा। **247 :** या'नी दरियाए नील में। जब बार बार उन्हें अ़ज़ाबों से नजात दी गई और वोह किसी अ़हद पर क़ाइम न रहे और ईमान न लाए और कुफ़्र न छोड़ा तो वोह मीआ़द पूरी होने के बा'द जो उन के लिये मुक़र्रर फ़रमाई गई थी उन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने ग़र्क़ कर के हलाक कर दिया। **248 :** अस्लन तदब्बुर व इल्तिफ़ात (अन्जाम पर ग़ौर व तवज्जोह) न करते थे। **249 :** या'नी बनी इसराईल को **250 :** या'नी मिस्र व शाम **251 :** नहरों, दरख़्तों, फलों, खेतियों और पैदावार की कसरत से **252 :** उन तमाम इमारतों और ऐवानों और बाग़ों को **253 :** फ़िरऔन और उस की क़ौम को दसवीं मुहर्रम को ग़र्क़ करने के बा'द।

www.dawateislami.net

عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰۤى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَاۤ اِلٰهًا كَمَا

एक ऐसी क़ौम पर हुवा कि अपने बुतों के आगे आसन मारे (इबादत के लिये जम कर बैठे) थे[254] बोले ऐ मूसा हमें एक ख़ुदा बना दे जैसा

لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ

इन के लिये इतने ख़ुदा हैं बोला तुम ज़रूर जाहिल लोग हो[255] येह हाल तो बरबादी का है जिस में

فِيْهِ وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٩﴾ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّ هُوَ

येह[256] लोग हैं और जो कुछ कर रहे हैं निरा (बिल्कुल) बातिल है कहा क्या अल्लाह के सिवा तुम्हारा और कोई ख़ुदा तलाश करूं हालां कि उस ने

فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَ اِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ

तुम्हें ज़माने भर पर फ़ज़ीलत दी[257] और याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन वालों से नजात बख़्शी कि तुम्हें

سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَ فِيْ ذٰلِكُمْ

बुरी मार देते तुम्हारे बेटे ज़ब्ह करते और तुम्हारी बेटियां बाक़ी रखते और इस में

١٦ ع ١٢ ٢
بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿١٤١﴾ ع وَ وٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّ اَتْمَمْنٰهَا

तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़्ल हुवा[258] और हम ने मूसा से[259] तीस रात का वा'दा फ़रमाया और उन में[260] दस और

بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖۤ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَ قَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ

बढ़ा कर पूरी कीं तो उस के रब का वा'दा पूरी चालीस रात का हुवा[261] और मूसा ने[262] अपने भाई हारून से कहा

اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَ اَصْلِحْ وَ لَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَ لَمَّا جَآءَ

मेरी क़ौम पर मेरे नाइब रहना और इस्लाह़ करना और फ़सादियों की राह को दख़्ल न देना (उन के रास्ते पर न चलना) और जब मूसा हमारे

254 : और उन की इ़बादत करते थे। इब्ने जुरैज ने कहा कि येह बुत गाय की शक्ल के थे, इन को देख कर बनी इसराईल **255 :** कि इतनी निशानियां देख कर भी न समझे कि अल्लाह वाहि़द "لَاشَرِيْكَ لَهٗ" है, उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़े इ़बादत नहीं और किसी की इ़बादत जाइज़ नहीं। **256 :** बुत परस्त **257 :** या'नी ख़ुदा वोह नहीं होता जो तलाश कर के बना लिया जाए बल्कि ख़ुदा वोह है जिस ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी क्यूं कि वोह फ़ज़्लो एह़सान पर क़ादिर है तो वोही इ़बादत का मुस्तह़िक़ है। **258 :** या'नी जब उस ने तुम पर ऐसी अ़ज़ीम ने'मतें फ़रमाईं तो तुम्हें कब शायान है कि तुम उस के सिवा और की इ़बादत करो। **259 :** तौरैत अ़ता फ़रमाने के लिये माहे ज़ुल क़ा'दह की **260 :** ज़िल हिज्जा की **261 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का बनी इसराईल से वा'दा था कि जब अल्लाह तआ़ला उन के दुश्मन फ़िरऔन को हलाक फ़रमा दे तो वोह उन के पास अल्लाह तआ़ला की जानिब से एक किताब लाएंगे जिस में ह़लाल और ह़राम का बयान होगा, जब अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔन को हलाक किया तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने रब से उस किताब के नाज़िल फ़रमाने की दरख़्वास्त की। हुक्म हुवा कि तीस रोज़े रखें, जब वोह रोज़े पूरे कर चुके तो आप को अपने दहन मुबारक में एक त़रह़ की बू मा'लूम हुई। आप ने मिस्वाक की मलाएका ने अ़र्ज़ किया कि हमें आप के दहने मुबारक से बड़ी मह़बूब ख़ुश्बू आया करती थी आप ने मिस्वाक कर के उस को ख़त्म कर दिया। अल्लाह तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया कि माह ज़िल हिज्जा में दस रोज़े और रखें और फ़रमाया कि ऐ मूसा ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि रोज़ेदार के मुंह की ख़ुश्बू मेरे नज़्दीक ख़ुश्बूए मुश्क से ज़ियादा अत़्यब (पसन्द) है। **262 :** पहाड़ पर मुनाजात के लिये जाते वक़्त।

مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْۤ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ

वा'दे पर हाज़िर हुवा और उस से उस के रब ने कलाम फ़रमाया[263] अर्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं फ़रमाया तू मुझे हरगिज़ न

تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ

देख सकेगा[264] हां इस पहाड़ की तरफ़ देख येह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अन्क़रीब तू मुझे देख लेगा[265]

فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّ خَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّاۤ اَفَاقَ

फिर जब उस के रब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे पाश पाश कर दिया और मूसा गिरा बेहोश फिर जब होश हुवा

قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ قَالَ يٰمُوْسٰۤى

बोला पाकी है तुझे मैं तेरी तरफ़ रुजूअ़ लाया और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं[266] फ़रमाया ऐ मूसा

اِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَاۤ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ

मैं ने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों और अपने कलाम से तो ले जो मैं ने तुझे अ़ता फ़रमाया और

مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَكَتَبْنَا لَهٗ فِي الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّ

शुक्र वालों में हो और हम ने उस के लिये तख़्तियों में[267] लिख दी हर चीज़ की नसीहत और

263 : आयत से साबित हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कलाम फ़रमाया, इस पर हमारा ईमान है और हमारी क्या हक़ीक़त है कि हम उस कलाम की हक़ीक़त से बहस कर सकें, अख़्बार (रिवायतों) में वारिद है कि जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कलाम सुनने के लिये हाज़िर हुए तो आप ने तहारत की और पाकीज़ा लिबास पहना और रोज़ा रख कर तूरे सीना में हाज़िर हुए। **अल्लाह** तआ़ला ने एक अब्र नाज़िल फ़रमाया जिस ने पहाड़ को हर तरफ़ से ब क़दर चार फ़रसंग के ढक लिया। शयातीन और ज़मीन के जानवर हत्ता कि साथ रहने वाले फ़िरिश्ते तक वहां से अलाहदा कर दिये गए और आप के लिये आस्मान खोल दिया गया तो आप ने मलाएका को मुलाहज़ा फ़रमाया कि हवा में खड़े हैं और आप ने अ़र्शे इलाही को साफ़ देखा यहां तक कि अल्वाह पर क़लमों की आवाज़ सुनी और **अल्लाह** तआ़ला ने आप से कलाम फ़रमाया। आप ने उस की बारगाह में अपने मा'रूज़ात पेश किये। उस ने अपना कलामे करीम सुना कर नवाज़ा। हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आप के साथ थे लेकिन जो **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया वोह उन्हों ने कुछ न सुना। हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को कलामे रब्बानी की लज़्ज़त ने उस के दीदार का आरज़ू मन्द बनाया। (خازن وغیرہ) **264 :** इन आंखों से, सुवाल कर के। बल्कि दीदारे इलाही बिग़ैर सुवाल के महज़ उस की अ़ता व फ़ज़्ल से हासिल होगा वोह भी इस फ़ानी आंख से नहीं बल्कि बाक़ी आंख से या'नी कोई बशर मुझे दुन्या में देखने की ताक़त नहीं रखता। **अल्लाह** तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया कि मेरा देखना मुम्किन नहीं। इस से साबित हुवा कि दीदारे इलाही मुम्किन है अगर्चे दुन्या में न हो क्यूं कि सहीह हदीसों में है कि रोज़े क़ियामत मोमिनीन अपने रब عَزَّوَجَلَّ के दीदार से फ़ैज़याब किये जाएंगे इलावा बरीं येह कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आरिफ़ बिल्लाह हैं अगर दीदारे इलाही मुम्किन न होता तो आप हरगिज़ सुवाल न फ़रमाते। **265 :** और पहाड़ का साबित रहना अम्रे मुम्किन है क्यूं कि इस की निस्बत फ़रमाया : "جَعَلَهٗ دَكًّا" उस को पाश पाश कर दिया तो जो चीज़ **अल्लाह** तआ़ला की मज्ऊ़ल (बनाई हुई) हो और जिस को वोह मौजूद फ़रमाए, मुम्किन है कि वोह न मौजूद हो अगर उस को न मौजूद करे क्यूं कि वोह अपने फ़े'ल में मुख़्तार है, इस से साबित हुवा कि पहाड़ का इस्तिक़रार अम्रे मुम्किन है मुहाल नहीं और जो चीज़ अम्रे मुम्किन पर मुअ़ल्लक़ की जाए वोह भी मुम्किन ही होती है मुहाल नहीं होती लिहाज़ा दीदारे इलाही जिस को पहाड़ के साबित रहने पर मुअ़ल्लक़ फ़रमाया गया वोह मुम्किन हुवा तो उन का क़ौल बातिल है जो **अल्लाह** तआ़ला का दीदार मुहाल बताते हैं। **266 :** बनी इसराईल में से। **267 :** तौरैत की जो सात या दस थीं ज़बर जद की या ज़ुमुर्रुद की।

www.dawateislami.net

تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ؕ

हर चीज़ की तफ़्सील और फ़रमाया ऐ मूसा इसे मज़बूती से ले और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि इस की अच्छी बातें इख़्तियार करें[268]

سَاُوْرِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ

अन्क़रीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा बे हुक्मों का घर[269] और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में

فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا

नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं[270] और अगर सब निशानियां देखें उन पर ईमान न लाएं और अगर हिदायत

سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ

की राह देखें उस में चलना पसन्द न करें[271] और गुमराही का रास्ता नज़र पड़े तो उस में चलने को

سَبِيْلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَالَّذِيْنَ

मौजूद हो जाएं येह इस लिये कि उन्हों ने हमारी आयतें झुटलाई और उन से बे ख़बर बने और जिन्हों ने

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

हमारी आयतें और आख़िरत के दरबार (आख़िरत की हाज़िरी) को झुटलाया उन का सब किया धरा अकारत गया उन्हें क्या बदला मिलेगा मगर वोही

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۷﴾ ع وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا ع ٧

जो करते थे और मूसा के[272] बा'द उस की क़ौम अपने ज़ेवरों से[273] एक बछड़ा बना बैठी

جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ وقف لازم

बेजान का धड़[274] गाय की तरह आवाज़ करता क्या न देखा कि वोह उन से न बात करता है और न उन्हें कुछ राह बताए[275]

268 : इस के अहकाम पर आमिल हों। 269 : जो आख़िरत में उन का ठिकाना है। हसन व अ़ता ने कहा कि बे हुक्मों के घर से जहन्नम मुराद है। क़तादा का क़ौल है कि मा'ना येह हैं कि मैं तुम्हें शाम में दाख़िल करूंगा और गुज़री हुई उम्मतों के मनाज़िल दिखाऊंगा जिन्हों ने अल्लाह की मुख़ालफ़त की ताकि तुम्हें उस से इ़ब्रत हासिल हो। अ़तिय्या औफ़ी का क़ौल है कि "دارُ الْفَاسِقِين" से फ़िरऔ़न और उस की क़ौम के मकानात मुराद हैं जो मिस्र में हैं। सुद्दी का क़ौल है कि इस से मनाज़िले कुफ़्फ़ार मुराद हैं। कल्बी ने कहा कि आ़द व समूद और हलाक शुदा उम्मतों के मनाज़िल मुराद हैं जिन पर अ़रब के लोग अपने सफ़रों में हो कर गुज़रा करते थे। 270 : जुन्नून قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला हिक्मते क़ुरआन से अहले बातिल के क़ुलूब का इक्राम नहीं फ़रमाता। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मुराद येह है कि जो लोग मेरे बन्दों पर तजब्बुर (तकब्बुर व ज़ियादती की रविश इख़्तियार) करते हैं और मेरे औलिया से लड़ते हैं मैं उन्हें अपनी आयतों के क़बूल और तस्दीक़ से फेर दूंगा ताकि वोह मुझ पर ईमान न लाएं, येह उन के इ़नाद (बुग़्ज़ व दुश्मनी) की सज़ा है कि उन्हें हिदायत से महरूम किया गया। 271 : येही तकब्बुर का समरा मुतकब्बिर का अन्जाम है। 272 : तूर की तरफ़ अपने रब की मुनाजात के लिये जाने के 273 : जो उन्हों ने क़ौमे फ़िरऔ़न से अपनी ईद के लिये आ़रिय्यत लिये थे 274 : और उस के मुंह में हज़रते जिब्रील के घोड़े के क़दम के नीचे की ख़ाक डाली जिस के असर से वोह 275 : नाक़िस है, आ़जिज़ है, जमाद है या हैवान, दोनों तक़्दीरों पर सलाहिय्यत नहीं रखता कि पूजा जाए।

www.dawateislami.net

اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۸﴾ وَلَمَّا سُقِطَ فِيْۤ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ

उसे लिया और वोह ज़ालिम थे[276] और जब पचताए और समझे कि हम

ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾

बहके बोले अगर हमारा रब हम पर मेहर (रहमो करम) न करे और हमें न बख़्शे तो हम तबाह हुए

وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ

और जब मूसा[277] अपनी क़ौम की तरफ़ पलटा ग़ुस्से में भरा झुंजलाया हुवा[278] कहा तुम ने क्या बुरी मेरी जा नशीनी की

مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاْسِ

मेरे बा'द[279] क्या तुम ने अपने रब के हुक्म से जल्दी की[280] और तख़्तियां डाल दीं[281] और अपने भाई के सर के बाल

اَخِيْهِ يَجُرُّهٗۤ اِلَيْهِ ؕ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا

पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगा[282] कहा ऐ मेरे मां जाए[283] क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि

يَقْتُلُوْنَنِيْ ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ

मुझे मार डालें तो मुझ पर दुश्मनों को न हंसा[284] और मुझे ज़ालिमों

الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۵۰﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۖ وَ

में न मिला[285] अर्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे[286] और हमें अपनी रहमत के अन्दर ले ले और

اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۵۱﴾ ع اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ ع ٨

तू सब मेहर (रहम करने) वालों से बढ़ कर मेहर वाला बेशक वोह जो बछड़ा ले बैठे अन्क़रीब उन्हें उन के रब

مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ ﴿۱۵۲﴾

का ग़ज़ब और ज़िल्लत पहुंचना है दुन्या की ज़िन्दगी में और हम ऐसा ही बदला देते हैं बोहतान हायों (बोहतान बांधने वालों) को

276 : कि उन्हों ने अल्लाह तआ़ला की इबादत से ए'राज़ किया और ऐसे आजिज़ो नाक़िस बछड़े को पूजा। 277 : अपने रब की मुनाजात से मुशर्रफ़ हो कर तूर से 278 : इस लिये कि अल्लाह तआ़ला ने उन को ख़बर दे दी थी कि सामरी ने उन की क़ौम को गुमराह कर दिया। 279 : कि लोगों को बछड़ा पूजने से न रोका। 280 : और मेरे तौरैत ले कर आने का इन्तिज़ार न किया। 281 : तौरैत की। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने 282 : क्यूं कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपनी क़ौम का ऐसी बद तरीन मा'सियत में मुब्तला होना निहायत शाक़ और गिरां हुवा तब हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से 283 : मैं ने क़ौम को रोकने और उन को वा'ज़ो नसीहत करने में कमी नहीं की लेकिन 284 : और मेरे साथ ऐसा सुलूक न करो जिस से वोह ख़ुश हों। 285 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने भाई का उ़ज़्र क़बूल कर के बारगाहे इलाही में 286 : अगर हम में से किसी से कोई इफ़रात या तफ़रीत (कमी या बेशी) हो गई। येह दुआ आप ने भाई को राज़ी करने और आ'दा की शमातत रफ़्अ़ (दुश्मन के ख़ुश होने को दूर) करने के लिये फ़रमाई।

www.dawateislami.net

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْۤا ۫ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ

और जिन्हों ने बुराइयां कीं और उन के बा'द तौबा की और ईमान लाए तो इस के बा'द

بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۵۳﴾ وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ

तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहरबान है[287] और जब मूसा का ग़ुस्सा थमा (दूर हुवा) तख़्तियां

الْاَلْوَاحَ ۖۚ وَفِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

उठा लीं और उन की तहरीर में हिदायत और रह़मत है उन के लिये जो अपने रब से डरते हैं

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّاۤ اَخَذَتْهُمُ

और मूसा ने अपनी क़ौम से सत्तर मर्द हमारे वा'दे के लिये चुने[288] फिर जब उन्हें

الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا

ज़ल्ज़ले ने लिया[289] मूसा ने अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे तू चाहता तो पहले ही उन्हें और मुझे हलाक कर देता[290] क्या तू हमें उस काम

بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَ

पर हलाक फ़रमाएगा जो हमारे बे अ़क़्लों ने किया[291] वोह नहीं मगर तेरा आज़्माना तू उस से बहकाए जिसे चाहे और

تَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ

राह दिखाए जिसे चाहे तू हमारा मौला है तो हमें बख़्श दे और हम पर मेहर (रह़मो करम) कर और तू सब से बेहतर

الْغٰفِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَاۤ

बख़्शने वाला है और हमारे लिये इस दुन्या में भलाई लिख[292] और आख़िरत में बेशक हम तेरी त़रफ़

اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْۤ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ

रुजूअ़ लाए फ़रमाया[293] मेरा अ़ज़ाब मैं जिसे चाहूं दूं[294] और मेरी रह़मत हर चीज़ को

287 मस्अला : इस आयत से साबित हुवा कि गुनाह ख़्वाह सग़ीरा हों या कबीरा जब बन्दा उन से तौबा करता है तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने फ़ज़्लो रह़मत से उन सब को मुआ़फ़ फ़रमाता है। **288 :** कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ **अल्लाह** के हुज़ूर में ह़ाज़िर हो कर क़ौम की गौसाला परस्ती की उ़ज़्र ख़्वाही करें चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन्हें ले कर ह़ाज़िर हुए। **289 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ज़ल्ज़ले में मुब्तला होने का सबब येह था कि क़ौम ने जब बछड़ा क़ाइम किया था येह उन से जुदा न हुए थे। (خازن) **290 :** या'नी मीक़ात में ह़ाज़िर होने से पहले ताकि बनी इसराईल उन सब की हलाकत अपनी आंखों से देख लेते और उन्हें मुझ पर क़त्ल की तोहमत लगाने का मौक़अ़ न मिलता। **291 :** या'नी हमें हलाक न कर और अपना लुत्फ़ो करम फ़रमा। **292 :** और हमें तौफ़ीक़े त़ाअ़त मर्ह़मत फ़रमा। **293 : अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से **294 :** मुझे इख़्तियार है सब मेरे मम्लूक और बन्दे हैं किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं।

www.dawateislami.net

شَیْءٍؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ وَ یُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ الَّذِیْنَ هُمْ

घेरे है[295] तो अ़न्क़रीब मैं[296] ने'मतों को उन के लिये लिख दूंगा जो डरते और ज़कात देते हैं और वोह

بِاٰیٰتِنَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ الَّذِیْنَ یَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِیَّ الْاُمِّیَّ الَّذِیْ

हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं वोह जो ग़ुलामी करेंगे उस रसूल बे पढ़े ग़ैब की ख़बरें देने वाले की[297] जिसे

یَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِی التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِیْلِ ۫ یَاْمُرُهُمْ

लिखा हुवा पाएंगे अपने पास तौरैत और इन्जील में[298] वोह उन्हें भलाई

295 : दुन्या में नेक और बद सब को पहुंचती है। **296 :** आख़िरत की **297 :** यहां रसूल से ब इज्माए मुफ़स्सिरीन सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुराद हैं, आप का ज़िक्र वस्फ़े रिसालत से फ़रमाया गया क्यूं कि आप **अल्लाह** और उस की मख़्लूक़ के दरमियान वासित़ा हैं, फ़राइज़े रिसालत अदा फ़रमाते हैं, **अल्लाह** तआ़ला के अवामिर व नह्य व शराएअ़ व अह़काम उस के बन्दों को पहुंचाते हैं, इस के बा'द आप की तौसीफ़ में नबी फ़रमाया गया, इस का तरजमा ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने "ग़ैब की ख़बरें देने वाले" किया है और येह निहायत ही सह़ीह़ तरजमा है क्यूं कि "نَبَأ" (उस) ख़बर को कहते हैं जो मुफ़ीदे इल्म हो और शाइबए किज़्ब से ख़ाली हो। क़ुरआने करीम में येह लफ़्ज़ इस मा'ना में ब कसरत मुस्ता'मल हुवा है, एक जगह इर्शाद हुवा : "قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِیْمٌ" (तुम फ़रमाओ वोह बड़ी ख़बर है), एक जगह फ़रमाया : "تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْهَاۤ اِلَیْكَ" (येह ग़ैब की ख़बरें हम तुम्हारी त़रफ़ वह़्य करते हैं), एक जगह फ़रमाया : "فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآىِٕهِمْ" (जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये) और ब कसरत आयात में येह लफ़्ज़ इस मा'ना में वारिद हुवा है, फिर येह लफ़्ज़ या फ़ाइल के मा'ना में होगा या मफ़्ऊ़ल के मा'ना में, पहली सूरत में इस के मा'ना ग़ैब की ख़बरें देने वाले और दूसरी सूरत में इस के मा'ना होंगे ग़ैब की ख़बरें दिये हुए और दोनों मा'ना को क़ुरआने करीम से ताईद पहुंचती है, पहले मा'ना की ताईद इस आयत से होती है : "نَبِّئْ عِبَادِیْۤ" (ख़बर दो मेरे बन्दों को)", दूसरी आयत में फ़रमाया : "قُلْ اُؤَنَبِّئُكُمْ" (तुम फ़रमाओ ! क्या मैं तुम्हें ख़बर दूं) और इसी क़बील से है ह़ज़रते मसीह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इर्शाद जो क़ुरआन में वारिद हुवा : "اُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ"" (और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो जम्अ़ कर रखते हो) और दूसरी सूरत की ताईद इस आयत से होती है : "نَبَّاَنِیَ الْعَلِیْمُ الْخَبِیْرُ" (मुझे इल्म वाले ख़बरदार ने बताया) और ह़क़ीक़त में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ग़ैब की ख़बरें देने वाले ही होते हैं। तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है कि आप के वस्फ़ में नबी फ़रमाया क्यूं कि नबी होना आ'ला और अशरफ़ मरातिब में से है और येह इस पर दलालत करता है कि आप **अल्लाह** के नज़्दीक बहुत बुलन्द दरजे रखने वाले और उस की त़रफ़ से ख़बर देने वाले हैं। "اُمِّیّ" का तरजमा ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने (बे पढ़े) फ़रमाया, येह तरजमा बिल्कुल ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا के इर्शाद के मुत़ाबिक़ है और यक़ीनन "उम्मी" होना आप के मो'जिज़ात में से एक मो'जिज़ा है कि दुन्या में किसी से पढ़े नहीं और किताब वोह लाए जिस में अव्वलीन व आख़िरीन और ग़ैबों के उ़लूम हैं। (خازن)

خاکی و بر اوجِ عرش منزل اُمّی و کتاب خانہ در دل
बशर ऐसे कि अ़र्श की बुलन्दियों पर आप का मक़ाम है उम्मी ऐसे कि तमाम उ़लूम का ख़ज़ाना आप के दिल में है
دیگر اُمّی و دقیقہ دانِ عالَم بے سایہ و سائبانِ عالم
उम्मी हैं मगर दक़ीक़ा दाने जहां हैं बे साया हैं लेकिन साएबाने जहां हैं (صَلوٰۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ وَ سَلَامُہٗ)

298 : या'नी तौरैत व इन्जील में आप की ना'त व सिफ़त व नुबुव्वत लिखी पाएंगे। **ह़दीस :** ह़ज़रते अ़त़ा इब्ने यसार ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के वोह औसाफ़ दरयाफ़्त किये जो तौरैत में मज़्कूर हैं, उन्हों ने फ़रमाया कि हुज़ूर के जो औसाफ़ क़ुरआने करीम में आए हैं उन्हीं में से बा'ज़ औसाफ़ तौरैत में मज़्कूर हैं, इस के बा'द उन्हों ने पढ़ना शुरूअ़ किया ऐ नबी ! हम ने तुम्हें भेजा शाहिद व मुबश्शिर और नज़ीर और उम्मियों का निगह्बां बना कर, तुम मेरे बन्दे और मेरे रसूल हो, मैं ने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा, न बद ख़ुल्क़ हो न सख़्त मिज़ाज, न बाज़ारों में आवाज़ बुलन्द करने वाले, न बुराई से बुराई को दफ़्अ़ करो, लेकिन ख़त़ाकारों को मुआ़फ़ करते हो और उन पर एह़सान फ़रमाते हो, **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें न उठाएगा जब तक कि तुम्हारी बरकत से ग़ैर मुस्तक़ीम मिल्लत (सीधे रास्ते से भटके हुए लोगों) को इस त़रह़ रास्त (राहे ह़क़ पर) न फ़रमा दे कि लोग सिद्क़ो यक़ीन के साथ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه पुकारने लगें और तुम्हारी बदौलत अन्धी आंखें "बीना" और बहरे कान "शिन्वा" (सुनने वाले) और पर्दों में लिपटे हुए दिल "कुशादा" हो जाएं और ह़ज़रते का'ब अह़बार से हुज़ूर की सिफ़त में तौरैत शरीफ़ का येह मज़्मून भी मन्क़ूल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप की सिफ़त में फ़रमाया कि मैं उन्हें हर ख़ूबी के क़ाबिल करूंगा और हर ख़ुल्क़े करीम अ़त़ा फ़रमाऊंगा और इत्मीनाने क़ल्ब व वक़ार को उन का लिबास बनाऊंगा

www.dawateislami.net

بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَ يُحَرِّمُ

का हुक्म देगा और बुराई से मन्अ़ फ़रमाएगा और सुथरी चीज़ें उन के लिये ह़लाल फ़रमाएगा और गन्दी चीज़ें

عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓىِٕثَ وَ يَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَ الْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ

उन पर ह़राम करेगा और उन पर से वोह बोझ[299] और गले के फन्दे[300] जो उन पर थे उतारेगा

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْۤ اُنْزِلَ

तो वोह जो उस पर[301] ईमान लाएं और उस की ता'ज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के

और त़ाआ़त व एह़सान को उन का शिआ़र करूंगा और तक़्वे को उन का ज़मीर और ह़िक्मत को उन का राज़ और सिद्क़ो वफ़ा को उन की त़बीअ़त और अ़फ़्वो करम को उन की आ़दत और अ़द्ल को उन की सीरत और इज़्हारे ह़क़ को उन की शरीअ़त और हिदायत को उन का इमाम और इस्लाम को उन की मिल्लत बनाऊंगा। अह़मद उन का नाम है, ख़ल्क़ को उन के सदक़े में गुमराही के बा'द हिदायत और जहालत के बा'द इल्मो मा'रिफ़त और गुमनामी के बा'द रिफ़अ़तो मन्ज़िलत अ़त़ा करूंगा और उन्हीं की बरकत से क़िल्लत के बा'द कसरत और फ़क़्र के बा'द दौलत और तफ़्रिक़े के बा'द मह़ब्बत इनायत करूंगा, उन्हीं की बदौलत मुख़्तलिफ़ क़बाइल, ग़ैर मुज्तमअ़ ख़्वाहिशों और इख़्तिलाफ़ रखने वाले दिलों में उल्फ़त पैदा करूंगा और उन की उम्मत को तमाम उम्मतों से बेहतर करूंगा। एक और ह़दीस में तौरैत शरीफ़ से हुज़ूर के येह औसाफ़ मन्क़ूल हैं : मेरे बन्दे अह़मदे मुख़्तार, उन का जाए विलादत मक्कए मुकर्रमा और जाए हिजरत मदीनए त़य्यिबा है, उन की उम्मत हर ह़ाल में **अल्लाह** की कसीर ह़म्द करने वाली है। येह चन्द नुक़ूल अह़ादीस से पेश किये गए। कुतुबे इलाहिय्यह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त से भरी हुई थीं, अहले किताब हर क़र्न (ज़माने) में अपनी किताबों में तराश ख़राश करते रहे और उन की बड़ी कोशिश इस पर मुसल्लत़ रही की हुज़ूर का ज़िक्र अपनी किताबों में नाम को न छोड़ें। तौरैत इन्जील वग़ैरा उन के हाथ में थीं इस लिये उन्हें इस में कुछ दुश्वारी न थी, लेकिन हज़ारों तब्दीलियां करने के बा'द भी मौजूदा ज़माने की बाईबल में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बिशारत का कुछ न कुछ निशान बाक़ी रह ही गया, चुनान्चे ब्रिटिश एन्ड फ़ॉरन बाईबल सोसायटी लाहोर 1931 सि.ई. की छपी हुई बाईबल में यूह़न्ना की इन्जील के बाब चौदह की सोलहवीं आयत में है : "और मैं बाप से दरख़्वास्त करूंगा तो वोह तुम्हें दूसरा मददगार बख़्शेगा कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे।" लफ़्ज़ "मददगार" पर ह़ाशिया है उस में इस के मा'ने वकील या शफ़ीअ़ लिखे (हैं) तो अब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द ऐसा आने वाला जो शफ़ीअ़ हो और अबद तक रहे या'नी उस का दीन कभी मन्सूख़ न हो बजुज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के कौन है ? फिर उन्तीसवीं तीसवीं आयत में है : "और अब मैं ने तुम से उस के होने से पहले कह दिया है ताकि जब हो जाए तो तुम यक़ीन करो इस के बा'द मैं तुम से बहुत सी बातें न करूंगा क्यूं कि दुन्या का सरदार आता है और मुझ में उस का कुछ नहीं।" कैसी साफ़ बिशारत है और ह़ज़रते मसीह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी उम्मत को हुज़ूर की विलादत का कैसा मुन्तज़िर बनाया और शौक़ दिलाया है और दुन्या का सरदार ख़ास सय्यिदे आ़लम का तरजमा है और येह फ़रमाना कि मुझ में उस का कुछ नहीं हुज़ूर की अ़ज़मत का इज़्हार और इस के हुज़ूर अपना कमाले अदब व इन्किसार है फिर इसी किताब के बाब सोलह की सातवीं आयत है : "लेकिन मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये फ़ाएदे मन्द है क्यूं कि अगर मैं न जाऊं तो वोह मददगार तुम्हारे पास न आएगा लेकिन अगर जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।" इस में हुज़ूर की बिशारत के साथ इस का भी साफ़ इज़्हार है कि हुज़ूर ख़ातमुल अम्बिया हैं आप का ज़ुहूर जब ही होगा जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام भी तशरीफ़ ले जाएं। इस की तेरहवीं आयत है : "लेकिन जब वोह या'नी सच्चाई का रूह़ आएगा तो तुम को तमाम सच्चाई की राह दिखाएगा इस लिये कि वोह अपनी त़रफ़ से न कहेगा लेकिन जो कुछ सुनेगा वोही कहेगा और तुम्हें आयिन्दा की ख़बरें देगा।" इस आयत में बताया गया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की आमद पर दीने इलाही की तक्मील हो जाएगी और आप सच्चाई की राह या'नी दीने ह़क़ को मुकम्मल कर देंगे इस से येही नतीजा निकलता है कि उन के बा'द कोई नबी न होगा और येह कलिमे कि अपनी त़रफ़ से न कहेगा जो कुछ सुनेगा वोही कहेगा ख़ास "مَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى" का तरजमा है और येह जुम्ला कि तुम्हें आयिन्दा की ख़बरें देगा इस में साफ़ बयान है कि वोह नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ग़ैबी उ़लूम ता'लीम फ़रमाएंगे जैसा कि क़ुरआने करीम में फ़रमाया : "يُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ" (और तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इ़ल्म न था) और "مَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ" (येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं) **299 :** या'नी सख़्त तक्लीफ़ें जैसे कि तौबा में अपने आप को क़त्ल करना और जिन आ'ज़ा से गुनाह सादिर हों उन को काट डालना। **300 :** या'नी अह़कामे शाक़्क़ा (वोह अह़काम जिन पर अ़मल करना दुश्वार हो) जैसे कि बदन और कपड़े के जिस मक़ाम को नजासत लगे उस को क़ैंची से काट डालना और ग़नीमतों को जलाना और गुनाहों का मकानों के दरवाज़ों पर ज़ाहिर होना वग़ैरा। **301 :** या'नी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर।

www.dawateislami.net

مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ

साथ उतरा[302] वोही बा मुराद हुए तुम फ़रमाओ ऐ लोगो मैं तुम सब की त़रफ़ उस

اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا ۨ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

अल्लाह का रसूल हूं[303] कि आस्मान व ज़मीन की बादशाही उसी को है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं

يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ

जिलाए और मारे (ज़िन्दगी और मौत दे) तो ईमान लाओ **अल्लाह** और उस के रसूल बे पढ़े ग़ैब बताने वाले पर कि **अल्लाह** और उस की

بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ

बातों पर ईमान लाते हैं और उन की ग़ुलामी करो कि तुम राह पाओ और मूसा की क़ौम से एक गुरोह है

يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا

कि ह़क़ की राह बताता और उसी से[304] इन्साफ़ करता और हम ने उन्हें बांट दिया बारह क़बीले

اُمَمًا ؕ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ

गुरोह गुरोह और हम ने वह़्य भेजी मूसा को जब उस से उस की क़ौम ने[305] पानी मांगा कि इस पथ्थर पर अपना

الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ

अ़सा मारो तो उस में से बारह चश्मे फूट निकले[306] हर गुरोह ने अपना घाट

مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَ

पहचान लिया और हम ने उन पर अब्र साएबान किया[307] और उन पर मन्न व सल्वा

السَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا

उतारा खाओ हमारी दी हुई पाक चीज़ें और उन्हों ने[308] हमारा कुछ नुक़्सान न किया लेकिन अपनी ही

302 : इस नूर से क़ुरआन शरीफ़ मुराद है जिस से मोमिन का दिल रोशन होता है और शक व जहालत की तारीकियां दूर होती हैं और इल्मो यक़ीन की ज़िया फैलती है। **303 :** येह आयत सय्यिदे आ़लम ﷺ के उ़मूमे रिसालत की दलील है कि आप तमाम ख़ल्क़ के रसूल हैं और कुल जहां आप की उम्मत। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : हुज़ूर फ़रमाते हैं : पांच चीज़ें मुझे ऐसी अ़त़ा हुईं जो मुझ से पहले किसी को न मिलीं : (1) हर नबी ख़ास क़ौम की त़रफ़ मब्ऊ़स होता था और मैं सुर्ख़ व सियाह की त़रफ़ मब्ऊ़स फ़रमाया गया। (2) मेरे लिये ग़नीमतें ह़लाल की गईं और मुझ से पहले किसी के लिये नहीं हुई थीं। (3) मेरे लिये ज़मीन पाक और पाक करने वाली (क़ाबिले तयम्मुम) और मस्जिद की गई, जिस किसी को कहीं नमाज़ का वक़्त आए वहीं पढ़ ले। (4) दुश्मन पर एक माह की मसाफ़त तक मेरा रो'ब डाल कर मेरी मदद फ़रमाई गई। (5) और मुझे शफ़ाअ़त इनायत की गई। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में येह भी है कि मैं तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बनाया गया और मेरे साथ अम्बिया ख़त्म किये गए। **304 :** या'नी ह़क़ से **305 :** तीह में **306 :** हर गुरोह के लिये एक चश्मा। **307 :** ताकि धूप से अम्न में रहें। **308 :** ना शुक्री कर के।

www.dawateislami.net

أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٦٠﴾ وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا

जानों का बुरा करते थे और याद करो जब उन[309] से फ़रमाया गया उस शहर में बसो[310] और उस में

مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ

जो चाहो खाओ और कहो गुनाह उतरे (ऐ अल्लाह हमारे गुनाह बख़्श दे) और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो हम तुम्हारे गुनाह

خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ۭ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦١﴾ فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا

बख़्श देंगे अ़न्क़रीब नेकों को ज़ियादा अ़ता फ़रमाएंगे तो उन में के ज़ालिमों ने बात बदल दी

غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا

उस के ख़िलाफ़ जिस का उन्हें हुक्म था[311] तो हम ने उन पर आस्मान से अ़ज़ाब भेजा बदला उन के

ع ٢٠ ٥ ١٠ وقف لازم يَظْلِمُونَ ﴿١٦٢﴾ ع وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ إِذْ

ज़ुल्म का[312] और उन से हाल पूछो उस बस्ती का कि दरिया किनारे थी[313] जब

يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا

वोह हफ़्ते के बारे में ह़द से बढ़ते[314] जब हफ़्ते के दिन उन की मछलियां पानी पर तैरती उन के सामने आतीं और जो दिन

309 : बनी इसराईल **310 :** या'नी बैतुल मक़्दिस में **311 :** या'नी हुक्म तो येह था कि "حِطَّةٌ" कहते हुए दरवाज़े में दाख़िल हों "حِطَّةٌ" तौबा और इस्तिग़्फ़ार का कलिमा है लेकिन वोह बजाए इस के बराहे तमस्ख़ुर "حِنْطَةٌ فِيْ شعيرة" कहते हुए दाख़िल हुए। **312 :** या'नी अ़ज़ाब भेजने का सबब उन का ज़ुल्म और हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त करना है। **313 :** ह़ज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़िताब है कि आप अपने क़रीब रहने वाले यहूद से तौबीख़न (मलामत करते हुए) उस बस्ती वालों का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाएं, मक़्सूद इस सुवाल से येह था कि कुफ़्फ़ार पर ज़ाहिर कर दिया जाए कि कुफ़्रो मा'सियत इन का क़दीमी दस्तूर है, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और हुज़ूर के मो'जिज़ात का इन्कार करना येह उन के लिये कोई नई बात नहीं है इन के पहले भी कुफ़्र पर मुसिर रहे हैं। इस के बा'द उन के अस्लाफ़ का ह़ाल बयान फ़रमाया कि वोह हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त के सबब बन्दरों और सुअरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिये गए, उस बस्ती में इख़्तिलाफ़ है कि वोह कौन सी थी ? ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह एक क़र्या मिस्र व मदीने के दरमियान है। एक क़ौल है कि मद्यन व तूर के दरमियान। ज़ोहरी ने कहा कि वोह क़र्या त़बरिया शाम है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا की एक रिवायत में है कि वोह मद्यन है। बा'ज़ ने कहा : ऐला है। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم **314 :** कि बा वुजूद मुमानअ़त के हफ़्ते के रोज़ शिकार करते, उस बस्ती के लोग तीन गुरौह में मुन्क़सिम हो गए थे एक तिहाई ऐसे लोग थे जो शिकार से बाज़ रहे और शिकार करने वालों को मन्अ़ करते थे और एक तिहाई ख़ामोश थे दूसरों को मन्अ़ न करते थे और मन्अ़ करने वालों से कहते थे ऐसी क़ौम को क्यूं नसीह़त करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है, और एक गुरौह वोह ख़त़ाकार लोग थे जिन्हों ने हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त की और शिकार किया और खाया और बेचा और जब वोह इस मा'सियत से बाज़ न आए तो मन्अ़ करने वाले गुरौह ने कहा कि हम तुम्हारे साथ बूदो बाश (रहना सहना इकठ्ठा) न रखेंगे और गाउं को तक़्सीम कर के दरमियान में एक दीवार खींच दी। मन्अ़ करने वालों का एक दरवाज़ा अलग था जिस से आते जाते थे। ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़त़ाकारों पर ला'नत की। एक रोज़ मन्अ़ करने वालों ने देखा कि ख़त़ाकारों में से कोई नहीं निकला तो उन्हों ने ख़याल किया कि शायद आज शराब के नशे में मदहोश हो गए होंगे, उन्हें देखने के लिये दीवार पर चढ़े तो देखा कि वोह बन्दरों की सूरतों में मस्ख़ हो गए थे। अब येह लोग दरवाज़ा खोल कर दाख़िल हुए तो वोह बन्दर अपने रिश्तेदारों को पहचानते थे और उन के पास आ कर उन के कपड़े सूंघते थे और येह लोग उन बन्दर हो जाने वालों को नहीं पहचानते थे उन लोगों ने उन से कहा क्या हम लोगों ने तुम को मन्अ़ नहीं किया था ! उन्हों ने सर के इशारे से कहा : हां। और वोह सब हलाक हो गए और मन्अ़ करने वाले सलामत रहे।

www.dawateislami.net

معانقة ٢ النصف

يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛۚ كَذٰلِكَ ۛۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ وَ اِذْ

हफ़्ते का न होता न आतीं इस त़रह़ हम उन्हें आज़्माते थे उन की बे हु़क्मी के सबब और जब

قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا

उन में से एक गुरौह ने कहा क्यूं नसीह़त करते हो उन लोगों को जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अ़ज़ाब

شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ فَلَمَّا نَسُوْا

देने वाला बोले तुम्हारे रब के ह़ुज़ूर मा'ज़िरत को[315] और शायद उन्हें डर हो[316] फिर जब वोह भुला बैठे

مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ

जो नसीह़त उन्हें हुई थी हम ने बचा लिये वोह जो बुराई से मन्अ़ करते थे और ज़ालिमों को

ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَـِٕيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۵﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا

बुरे अ़ज़ाब में पकड़ा बदला उन की ना फ़रमानी का फिर जब उन्हों ने मुमानअ़त के हुक्म से सरकशी की

عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿۱۶۶﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ

हम ने उन से फ़रमाया हो जाओ बन्दर दुत्कारे (धुत्कारे) हुए[317] और जब तुम्हारे रब ने हुक्म सुना दिया कि ज़रूर

عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ

क़ियामत के दिन तक उन[318] पर ऐसे को भेजता रहूंगा जो उन्हें बुरी मार चखाए[319] बेशक तुम्हारा रब ज़रूर जल्द

الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۷﴾ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ

अ़ज़ाब वाला है[320] और बेशक वोह बख़्शने वाला मेहरबान है[321] और उन्हें हम ने ज़मीन में मुतफ़र्रिक़ कर दिया गुरौह गुरौह उन में कुछ

الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ

नेक हैं[322] और कुछ और त़रह़ के[323] और हम ने उन्हें भलाइयों और बुराइयों से आज़्माया कि कहीं

يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۶۸﴾ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ

वोह रुजूअ़ लाएं[324] फिर उन की जगह उन के बा'द वोह[325] ना ख़लफ़ आए कि किताब के वारिस हुए[326] इस दुन्या

---

315 : ताकि हम पर "नही अ़निल मुन्कर" तर्क करने का इल्ज़ाम न रहे। **316 :** और वोह नसीह़त से नफ़्अ़ उठा सकें। **317 :** वोह बन्दर हो गए और तीन रोज़ इसी ह़ाल में मुब्तला रह कर हलाक हो गए। **318 :** यहूद **319 :** चुनान्चे उन पर अल्लाह तआ़ला ने बुख़्ते नस्सर और सिन्जारीब और शाहाने रूम को भेजा जिन्हों ने उन्हें सख़्त ईज़ाएं और तक्लीफ़ें दीं और क़ियामत तक के लिये उन पर जिज़्या और ज़िल्लत लाज़िम हुई। **320 :** उन के लिये जो कुफ़्र पर क़ाइम रहें। इस आयत से साबित हुवा कि उन पर अ़ज़ाब मुस्तमिर (हमेशा) रहेगा दुन्या में भी और आख़िरत में भी। **321 :** उन को जो अल्लाह की इत़ाअ़त करें और ईमान लाएं। **322 :** जो अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और दीन पर साबित रहे। **323 :** जिन्हों ने ना फ़रमानी

عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ

का माल लेते हैं[327] और कहते अब हमारी बख़्शिश होगी[328] और अगर वैसा ही माल उन के पास और आए

يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ

तो ले लें[329] क्या उन पर किताब में अ़हद न लिया गया कि अल्लाह की त़रफ़ निस्बत न करें

اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ

मगर ह़क़ और उन्हों ने उसे पढ़ा[330] और बेशक पिछला घर (आख़िरत) बेहतर है परहेज़ गारों को[331]

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا

तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं और वोह जो किताब को मज़बूत़ थामते हैं[332] और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम रखी हम

لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۷۰﴾ وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّ

नेकों का नेग (सवाब) नहीं गंवाते (ज़ाएअ़ नहीं करते) और जब हम ने पहाड़ उन पर उठाया गोया वोह साएबान है और

ظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ

समझे कि वोह उन पर गिर पड़ेगा[333] लो जो हम ने तुम्हें दिया ज़ोर से[334] और याद करो जो उस में है कि कहीं

की और जिन्हों ने कुफ़्र किया और दीन को बदला और मुतग़य्यर किया। **324 :** भलाइयों से ने'मतो राह़त और बुराइयों से शिद्दतो तक्लीफ़ मुराद है। **325 :** जिन की दो क़िस्में बयान फ़रमाई गईं। **326 :** या'नी तौरैत के, जो उन्हों ने अपने अस्लाफ़ से पाई और उस के अवामिर व नवाही और तह़लील व तह़रीम वग़ैरा मज़ामीन पर मुत्त़लअ़ हुए। मदारिक में है कि येह वोह लोग हैं जो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने में थे उन की ह़ालत येह है कि **327 :** बत़ौर रिश्वत के अह़काम की तब्दील और कलाम की तग़्यीर पर और वोह जानते भी हैं कि येह ह़राम है लेकिन फिर भी इस गुनाहे अ़ज़ीम पर मुसिर हैं। **328 :** और इन गुनाहों पर हम से कुछ मुआख़ज़ा न होगा। **329 :** और आयिन्दा भी गुनाह करते चले जाएं। सुद्दी ने कहा कि बनी इसराईल में कोई क़ाज़ी ऐसा न होता था जो रिश्वत न ले, जब उस से कहा जाता था कि तुम रिश्वत लेते हो तो कहता था कि येह गुनाह बख़्श दिया जाएगा। उस के ज़माने में दूसरे उस पर त़ा'न करते थे लेकिन जब वोह मर जाता या मा'ज़ूल कर दिया जाता और वोही त़ा'न करने वाले उस की जगह ह़ाकिम व क़ाज़ी होते तो वोह भी इसी त़रह़ रिश्वत लेते। **330 :** लेकिन बा वुजूद इस के उन्हों ने उस के ख़िलाफ़ किया। तौरैत में गुनाह पर इसरार करने वाले के लिये मग़्फ़िरत का वा'दा न था तो उन का गुनाह किये जाना तौबा न करना और इस पर येह कहना कि हम से मुआख़ज़ा न होगा येह अल्लाह पर इफ़्तिरा है। **331 :** जो अल्लाह के अ़ज़ाब से डरें और रिश्वत व ह़राम से बचें और उस की फ़रमां बरदारी करें **332 :** और उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हैं और उस के तमाम अह़काम को मानते हैं और उस में तग़्यीर व तब्दील रवा (जाइज़) नहीं रखते। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले किताब में से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरा ऐसे अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने पहली किताब का इत्तिबाअ़ किया उस की तह़रीफ़ न की, उस के मज़ामीन को न छुपाया और उस किताब के इत्तिबाअ़ की बदौलत उन्हें क़ुरआने पाक पर ईमान नसीब हुवा। (خازن ومدارک) **333 :** जब बनी इसराईल ने तकालीफ़े शाक़्क़ा की वज्ह से अह़काम तौरैत को क़बूल करने से इन्कार किया तो ह़ज़रते जिब्रील ने ब हुक्मे इलाही एक पहाड़ जिस की मिक़्दार उन के लश्कर के बराबर एक फ़रसंग त़वील एक फ़रसंग अ़रीज़ थी उठा कर साएबान की त़रह़ उन के सरों के क़रीब कर दिया और उन से कहा गया कि अह़काम तौरैत क़बूल करो वरना येह तुम पर गिरा दिया जाएगा, पहाड़ को सरों पर देख कर सब के सब सज्दे में गिर गए मगर इस त़रह़ कि बायां रुख़्सारा व अब्रू तो उन्हों ने सज्दे में रख दी और दाहनी आंख से पहाड़ को देखते रहे कि कहीं गिर न पड़े चुनान्चे अब तक यहूदियों के सज्दे की शान येही है। **334 :** अ़ज़्म व कोशिश से।

www.dawateislami.net

تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۱﴾ وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِیْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَ

तुम परहेज़ गार हो और ऐ महबूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली और

اَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ شَهِدْنَا ۛۚ اَنْ تَقُوْلُوْا

उन्हें खुद उन पर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं[335] सब बोले क्यूं नहीं हम गवाह हुए[336] कि कहीं

یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِیْنَ ﴿۱۷۲﴾ۙ اَوْ تَقُوْلُوْۤا اِنَّمَاۤ اَشْرَكَ

क़ियामत के दिन कहो कि हमें इस की ख़बर न थी[337] या कहो कि शिर्क तो पहले

اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَ كُنَّا ذُرِّیَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

हमारे बाप दादा ने किया और हम उन के बा'द बच्चे हुए[338] तो क्या तू हमें उस पर हलाक फ़रमाएगा जो

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۱۷۳﴾ وَ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ وَ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۱۷۴﴾ وَ اتْلُ

अहले बातिल ने किया[339] और हम इसी तरह आयतें रंग रंग (तफ़्सील) से बयान करते हैं[340] और इस लिये कि कहीं वोह फिर आएं[341] और ऐ महबूब

عَلَیْهِمْ نَبَاَ الَّذِیْۤ اٰتَیْنٰهُ اٰیٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّیْطٰنُ فَكَانَ

उन्हें उस का अहवाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं[342] तो वोह उन से साफ़ निकल गया[343] तो शैतान उस के पीछे लगा तो

335 : हदीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पुश्त से उन की ज़ुर्रिय्यत निकाली और उन से अहद लिया। आयात व हदीस दोनों पर नज़र करने से येह मा'लूम होता है कि ज़ुर्रिय्यत का निकालना उस सिल्सिले के साथ था जिस तरह कि दुन्या में एक दूसरे से पैदा होंगे और उन के लिये रबूबिय्यत और वहदानिय्यत के दलाइल क़ाइम फ़रमा कर और अक़्ल दे कर उन से अपनी रबूबिय्यत की शहादत तलब फ़रमाई **336 :** अपने ऊपर और हम ने तेरी रबूबिय्यत और वहदानिय्यत का इक़रार किया। येह शाहिद करना इस लिये है **337 :** हमें कोई तम्बीह नहीं की गई थी। **338 :** जैसा उन्हें देखा उन के इत्तिबाअ व इक़्तिदा में वैसा ही करते रहे। **339 :** येह उज़्र करने का मौक़अ न रहा जब कि उन से अहद ले लिया गया और उन के पास रसूल आए और उन्हों ने उस अहद को याद दिलाया और तौहीद पर दलाइल क़ाइम हुए। **340 :** ताकि बन्दे तदब्बुर व तफ़क्कुर कर के हक़ व ईमान क़बूल करें **341 :** शिर्को कुफ़्र से तौहीदो ईमान की तरफ़ और नबी साहिबे मो'जिज़ात के बताने से अपने अहदे मीसाक़ को याद करें और उस के मुताबिक़ अमल करें। **342 :** या'नी बल्अम बाऊर जिस का वाक़िआ मुफ़स्सिरीन ने इस तरह बयान किया है कि जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने जब्बारीन से जंग का क़स्द किया और सर ज़मीने शाम में नुज़ूल फ़रमाया तो बल्अम बाऊर की क़ौम उस के पास आई और उस से कहने लगी कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बहुत तेज़ मिज़ाज हैं और उन के साथ कसीर लश्कर है वोह यहां आए हैं, हमें हमारे बिलाद से निकालेंगे और क़त्ल करेंगे और बजाए हमारे बनी इसराईल को इस सर ज़मीन में आबाद करेंगे, तेरे पास इस्मे आ'ज़म है और तेरी दुआ क़बूल होती है तू निकल और **अल्लाह** तआला से दुआ कर कि **अल्लाह** तआला उन्हें यहां से हटा दे। बल्अम बाऊर ने कहा : तुम्हारा बुरा हो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं और उन के साथ फ़िरिश्ते हैं और ईमानदार लोग हैं मैं कैसे उन पर दुआ करूं, मैं जानता हूं जो **अल्लाह** तआला के नज़्दीक उन का मर्तबा है, अगर मैं ऐसा करूं तो मेरी दुन्या व आख़िरत बरबाद हो जाएगी, मगर क़ौम उस से इसरार करती रही और बहुत इल्हाहो ज़ारी (रोने पीटने) के साथ उन्हों ने अपना येह सुवाल जारी रखा तो बल्अम बाऊर ने कहा कि मैं अपने रब की मरज़ी मा'लूम कर लूं और इस का येही तरीक़ा था कि जब कभी कोई दुआ करता पहले मरज़िये इलाही मा'लूम कर लेता और ख़्वाब में उस का जवाब मिल जाता, चुनान्चे इस मरतबा भी उस को येही जवाब मिला कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन के हमराहियों के ख़िलाफ़ दुआ न करना उस ने क़ौम से कह दिया कि मैं ने अपने रब से इजाज़त चाही थी मगर मेरे रब ने उन पर दुआ करने की मुमानअत फ़रमा दी, तब क़ौम ने उस को हदिये और नज़राने दिये जो उस ने क़बूल किये और क़ौम ने अपना सुवाल जारी रखा तो फिर दूसरी मरतबा बल्अम बाऊर ने रब तबारक व तआला से इजाज़त चाही उस का कुछ जवाब न मिला उस ने क़ौम से कह दिया कि मुझे इस मरतबा कुछ जवाब ही न मिला तो क़ौम के लोग कहने लगे कि अगर **अल्लाह** को मन्ज़ूर न होता तो वोह पहले की तरह दोबारा

www.dawateislami.net

مِنَ الْغٰوِیْنَ ﴿۱۷۵﴾ وَ لَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَ لٰكِنَّهٗۤ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَ

गुमराहों में हो गया और हम चाहते तो आयतों के सबब उसे उठा लेते[344] मगर वोह तो ज़मीन पकड़ गया[345] और

اتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَیْهِ یَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ

अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हुवा तो उस का ह़ाल कुत्ते की त़रह़ है तू उस पर ह़म्ला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो

یَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ

ज़बान निकाले[346] येह ह़ाल है उन का जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं तो तुम नसीह़त

الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ یَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۶﴾ سَآءَ مَثَلًا ۨ الْقَوْمُ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا

सुनाओ कि कहीं वोह ध्यान करें क्या बुरी कहावत है उन की जिन्हों ने हमारी आयतें

بِاٰیٰتِنَا وَ اَنْفُسَهُمْ كَانُوْا یَظْلِمُوْنَ ﴿۱۷۷﴾ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِیْ ۚ وَ

झुटलाईं और अपनी ही जान का बुरा करते थे जिसे अल्लाह राह दिखाए तो वोही राह पर है और

مَنْ یُّضْلِلْ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۷۸﴾ وَ لَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِیْرًا مِّنَ

जिसे गुमराह करे तो वोही नुक़्सान में रहे और बेशक हम ने जहन्नम के लिये पैदा किये बहुत

الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۖۗ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا یَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اَعْیُنٌ لَّا یُبْصِرُوْنَ

जिन्न और आदमी[347] वोह दिल रखते हैं जिन में समझ नहीं[348] और वोह आंखें जिन से देखते नहीं[349]

بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اٰذَانٌ لَّا یَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓىِٕكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ

और वोह कान जिन से सुनते नहीं[350] वोह चौपायों की त़रह़ हैं[351] बल्कि उन से बढ़ कर गुमराह[352]

भी मन्अ़ फ़रमाता और क़ौम का इल्हाह़ व इसरार और भी ज़ियादा हुवा, ह़त्ता कि उन्हों ने उस को फ़ितने में डाल दिया और आख़िर कार वोह बद दुआ़ करने के लिये पहाड़ पर चढ़ा तो जो बद दुआ़ करता था अल्लाह तआ़ला उस की ज़बान को उस की क़ौम की त़रफ़ फेर देता था और अपनी क़ौम के लिये जो दुआ़ए ख़ैर करता था बजाए क़ौम के बनी इसराईल का नाम उस की ज़बान पर आता था। क़ौम ने कहा : ऐ बल्अ़म ! येह क्या कर रहा है ? बनी इसराईल के लिये दुआ़ करता है हमारे लिये बद दुआ़। कहा : येह मेरे इख़्तियार की बात नहीं, मेरी ज़बान मेरे क़ब्ज़े में नहीं है और उस की ज़बान बाहर निकल पड़ी तो उस ने अपनी क़ौम से कहा : मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद हो गईं। इस आयत में इस का बयान है। **343 :** और उन का इत्तिबाअ़ न किया। **344 :** और बुलन्द दरजा अ़त़ा फ़रमा कर अबरार (फ़रमां बरदारों) की मनाज़िल में पहुंचाते **345 :** और दुन्या का मफ़्तूं हो गया **346 :** येह एक ज़लील जानवर के साथ तश्बीह है कि दुन्या की ह़िर्स रखने वाला अगर उस को नसीह़त करो तो मुफ़ीद नहीं, मुब्तलाए ह़िर्स रहता है, छोड़ दो तो उसी ह़िर्स का गिरिफ़्तार। जिस त़रह़ ज़बान निकालना कुत्ते की लाज़िमी त़बीअ़त है ऐसी ही ह़िर्स उन के लिये लाज़िम हो गई है। **347 :** या'नी कुफ़्फ़ार जो आयाते इलाहिय्यह में तदब्बुर से ए'राज़ करते हैं और उन का काफ़िर होना अल्लाह के इ़ल्मे अज़ली में है। **348 :** या'नी ह़क़ से ए'राज़ कर के आयाते इलाहिय्यह में तदब्बुर करने से मह़रूम हो गए और येही दिल का ख़ास काम था। **349 :** राहे ह़क़ व हिदायत और आयाते इलाहिय्यह और दलाइले तौह़ीद। **350 :** मौइ़ज़त व नसीह़त को बगोश (वा'ज़ नसीह़त को ग़ौर व तवज्जोह से सुन कर) क़बूल और बा वुजूद क़ल्बो ह़वास रखने के वोह उमूरे दीन में उन से नफ़्अ़ नहीं उठाते लिहाज़ा **351 :** कि अपने क़ल्बो ह़वास से मदारिके इल्मिय्या व मआ़रिफ़े रब्बानिया का इदराक नहीं करते हैं। खाने पीने के दुन्यवी कामों में तमाम ह़ैवानात भी अपने ह़वास से काम लेते हैं, इन्सान भी इतना ही करता रहा तो इस को बहाइम पर क्या फ़ज़ीलत।

www.dawateislami.net

أُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ وَ لِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ص وَ ذَرُوا

वोही ग़फ़्लत में पड़े हैं और **अल्लाह** ही के हैं बहुत अच्छे नाम[353] तो उसे उन से पुकारो और उन्हें छोड़ दो

الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ط سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ

जो उस के नामों में हक़ से निकलते हैं[354] वोह जल्द अपना किया पाएंगे और

مِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ يَعْدِلُوْنَ ع ﴿۱۸۱﴾ وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا ع ۲۲ ۱۲

हमारे बनाए हुओं में एक गुरौह वोह है कि हक़ बताएं और उस पर इन्साफ़ करें[355] और जिन्हों ने हमारी आयतें

بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ج ﴿۱۸۲﴾ وَ اُمْلِيْ لَهُمْ ط قف اِنَّ

झुटलाईं जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता[356] अ़ज़ाब की त़रफ़ ले जाएंगे जहां से उन्हें ख़बर न होगी और मैं उन्हें ढील दूंगा[357] बेशक

كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿۱۸۳﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا سكتة مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ط اِنْ هُوَ

मेरी खु़फ़्या तदबीर बहुत पक्की है[358] क्या सोचते नहीं कि उन के साहिब को जुनून से कुछ अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) नहीं वोह तो साफ़

اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸۴﴾ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا

डर सुनाने वाले हैं[359] क्या उन्हों ने निगाह न की आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत में और जो जो

---

352 : क्यूं कि चौपाया भी अपने नफ़्अ़ की त़रफ़ बढ़ता है और ज़रर से बचता और उस से पीछे हटता है और काफ़िर जहन्नम की राह चल कर अपना ज़रर इख़्तियार करता है तो इस से बदतर हुवा। आदमी रूहानी, शहवानी, समावी, अर्ज़ी है जब इस की रूह़ शहवात पर ग़ालिब हो जाती है तो मलाएका से फ़ाइक़ हो जाता है और जब शहवात रूह़ पर ग़लबा पा जाती हैं तो ज़मीन के जानवरों से बदतर हो जाता है। **353 :** ह़दीस शरीफ़ में है **अल्लाह** तआ़ला के निनानवे99 नाम जिस किसी ने याद कर लिये जन्नती हुवा। उ़लमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि अस्माए इलाहिय्यह निनानवे में मुन्ह़सर नहीं हैं, ह़दीस का मक़्सूद सिर्फ़ येह है कि इतने नामों के याद करने से इन्सान जन्नती हो जाता है। **शाने नुज़ूल :** अबू जहल ने कहा था कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) का दा'वा तो येह है कि वोह एक परवर्दगार की इ़बादत करते हैं फिर वोह **अल्लाह** और रह़मान दो को क्यूं पुकारते हैं ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उस जाहिले बे ख़िरद (बे अ़क़्ल) को बताया गया कि मा'बूद तो एक ही है नाम उस के बहुत हैं। **354 :** उस के नामों में ह़क़ व इस्तिक़ामत से निकलना कई त़रह़ पर है। **मसाइल : एक** तो येह कि उस के नामों को कुछ बिगाड़ कर ग़ैरों पर इत़्लाक़ करना जैसा कि मुश्रिकीन ने ''इलाह'' का ''लात'' और ''अ़ज़ीज़'' का ''उ़ज़्ज़ा'' और ''मन्नान'' का ''मनात'' कर के अपने बुतों के नाम रखे थे, येह नामों में ह़क़ से तजावुज़ और ना जाइज़ है। **दूसरे** येह कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाए जो क़ुरआन व ह़दीस में न आया हो येह भी जाइज़ नहीं, जैसे कि सख़ी या रफ़ीक़ कहना क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला के अस्माए तौक़ीफ़िया (या'नी शरीअ़त से ही मा'लूम हो सकते) हैं। **तीसरे** ह़ुस्ने अदब की रिआ़यत करना, तो फ़क़त़ يَاضَارُّ يَامَانِعُ يَاخَالِقَ الْقِرَدَةِ कहना जाइज़ नहीं बल्कि दूसरे अस्मा के साथ मिला कर कहा जाएगा يَا ضَارُّ يَانَافِعُ يَامُعْطِي يَاخَالِقَ الْخَلْقِ। **चौथे** येह कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये कोई ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाए जिस के मा'ना फ़ासिद हों, येह भी बहुत सख़्त ना जाइज़ है जैसे कि लफ़्ज़ ''राम'' और ''परमात्मा'' वग़ैरा। **पन्जुम** ऐसे अस्मा का इत़्लाक़ जिन के मा'ना मा'लूम नहीं हैं और येह नहीं जाना जा सकता कि वोह जलाले इलाही के लाइक़ हैं या नहीं **355 :** येह गुरौह ह़क़ पज़ोह (अहले ह़क़) उ़लमा और हादियाने दीन का है। इस आयत से येह मस्अला साबित हुवा कि हर ज़माने के अहले ह़क़ का इज्माअ़ ह़ुज्जत है और येह भी साबित हुवा कि कोई ज़माना ह़क़ परस्तों और दीन के हादियों से ख़ाली न होगा जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है कि एक गुरौह मेरी उम्मत का ता क़ियामत दीने ह़क़ पर क़ाइम रहेगा, उस को किसी की अ़दावत व मुख़ालफ़त ज़रर न पहुंचा सकेगी। **356 :** या'नी तदरीजी **357 :** उन की उ़म्रें दराज़ कर के **358 :** और मेरी गिरिफ़्त सख़्त। **359 शाने नुज़ूल :** जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कोहे सफ़ा पर चढ़ कर शब के वक़्त क़बीले क़बीले को पुकारा और फ़रमाया कि मैं तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही से डराने वाला हूं और आप ने उन्हें **अल्लाह** का ख़ौफ़ दिलाया और पेश आने वाले ह़वादिस का ज़िक्र किया तो उन में से किसी ने आप की त़रफ़ जुनून की निस्बत की इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया क्या उन्हों ने फ़िक्रो तअम्मुल से काम न लिया

خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَیْءٍ ۙ وَّ اَنْ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ

चीज़ अल्लाह ने बनाई[360] और येह कि शायद उन का वा'दा नज़्दीक आ गया हो[361]

فَبِاَیِّ حَدِیْثٍ بَعْدَهٗ یُؤْمِنُوْنَ ۝۱۸۵ مَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ ؕ وَ

तो इस के बा'द और कौन सी बात पर यक़ीन लाएंगे[362] जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं और

یَذَرُهُمْ فِیْ طُغْیَانِهِمْ یَعْمَهُوْنَ ۝۱۸۶ یَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَیَّانَ

उन्हें छोड़ता है कि अपनी सरकशी में भटका करें तुम से क़ियामत को पूछते हैं[363] कि वोह कब को ठहरी है

مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّیْ ۚ لَا یُجَلِّیْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ ثَقُلَتْ

(कब आएगी) तुम फ़रमाओ उस का इल्म तो मेरे रब के पास है उसे वोही उस के वक़्त पर ज़ाहिर करेगा[364] भारी पड़ रही है

فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِیْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ یَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِیٌّ

आस्मानों और ज़मीन में तुम पर न आएगी मगर अचानक तुम से ऐसा पूछते हैं गोया तुम ने उसे ख़ूब तह़क़ीक़

عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝۱۸۷ قُلْ

कर रखा है तुम फ़रमाओ उस का इल्म तो अल्लाह ही के पास है लेकिन बहुत लोग जानते नहीं[365] तुम फ़रमाओ

لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِیْ نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ

मैं अपनी जान के भले बुरे का ख़ुद मुख़्तार नहीं[366] मगर जो अल्लाह चाहे[367] और अगर मैं ग़ैब जान

और आक़िबत अन्देशी व दूरबीनी बिल्कुल बालाए ताक़ रख दी और येह देख कर कि सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अक़्वाल व अफ़्आल में उन के मुख़ालिफ़ हैं और दुन्या और इस की लज़्ज़तों से आप ने मुंह फेर लिया है, आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जेह हैं और अल्लाह तआला की तरफ़ दा'वत देने और उस का ख़ौफ़ दिलाने में शबो रोज़ मश्ग़ूल हैं, उन लोगों ने आप की तरफ़ जुनून की निस्बत कर दी, येह उन की ग़लती है। **360 :** उन सब में उस की वह्दानिय्यत और कमाले हिक्मतो क़ुदरत की रोशन दलीलें हैं। **361 :** और वोह कुफ़्र पर मर जाएं और हमेशा के लिये जहन्नमी हो जाएं, ऐसे ह़ाल में आक़िल पर ज़रूरी है कि वोह सोचे समझे दलाइल पर नज़र करे। **362 :** या'नी क़ुरआने पाक के बा'द और कोई किताब और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के बा'द और कोई रसूल आने वाला नहीं जिस का इन्तिज़ार हो क्यूं कि आप ख़ातमुल अम्बिया हैं। **363 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि यहूदियों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो हमें बताइये कि क़ियामत कब क़ाइम होगी ? क्यूं कि हमें इस का वक़्त मा'लूम है, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **364 :** क़ियामत के वक़्त का बताना रिसालत के लवाज़िम से नहीं है जैसा कि तुम ने क़रार दिया और ऐ यहूद ! तुम ने जो इस का वक़्त जानने का दा'वा किया येह भी ग़लत है, अल्लाह तआला ने इस को मख़्फ़ी किया है और इस में उस की ह़िक्मत है। **365 :** इस के इख़्फ़ा की ह़िक्मत तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि बा'ज़ मशाइख़ इस तरफ़ गए हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ब ए'लामे इलाही (अल्लाह तआला की अ़त़ा से) वक़्ते क़ियामत का इल्म है और येह ह़स्र आयत के मुनाफ़ी नहीं। **366 शाने नुज़ूल :** ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़ से वापसी के वक़्त राह में तेज़ हवा चली चौपाए भागे तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़बर दी कि मदीनए त़य्यिबा में रिफ़ाआ का इन्तिक़ाल हो गया और येह भी फ़रमाया कि देखो मेरा नाक़ा कहां है, अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ अपनी क़ौम से कहने लगा इन का कैसा अ़जीब ह़ाल है कि मदीने में मरने वाले की तो ख़बर दे रहे हैं और अपनी नाक़ा मा'लूम ही नहीं कि कहां है, सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर उस का येह क़ौल भी मख़्फ़ी न रहा, हुज़ूर ने फ़रमाया मुनाफ़िक़ लोग ऐसा ऐसा कहते हैं और मेरा नाक़ा उस घाटी में है उस की नकेल एक दरख़्त में उलझ गई है। चुनान्चे जैसा फ़रमाया था उसी शान से वोह नाक़ा पाया गया इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (تفسیر کبیر) **367 :** वोह मालिके ह़क़ीक़ी है जो कुछ है उस की

www.dawateislami.net

الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ

लिया करता तो यूं होता कि मैं ने बहुत भलाई जम्अ़ कर ली और मुझे कोई बुराई न पहुंची[368] मैं तो येही डर[369]

وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ

और ख़ुशी सुनाने वाला हूं उन्हें जो ईमान रखते हैं वोही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया[370] और

جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا

उसी में से उस का जोड़ा बनाया[371] कि उस से चैन (आराम) पाए फिर जब मर्द उस पर छाया उसे एक हलका सा पेट रह गया[372] तो उसे लिये

فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ

फिरा की (चलती फिरती रही) फिर जब बोझल पड़ी दोनों ने अपने रब अल्लाह से दुआ़ की ज़रूर अगर तू हमें जैसा चाहिये बच्चा देगा तो बेशक हम

مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۸۹﴾ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ

शुक्र गुज़ार होंगे फिर जब उस ने उन्हें जैसा चाहिये बच्चा अ़ता फ़रमाया उन्हों ने उस की अ़ता में उस के साझी (शरीक) ठहराए

فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹۰﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ

तो अल्लाह को बरतरी है उन के शिर्क से[373] क्या उसे शरीक करते हैं जो कुछ न बनाए[374] और वोह

अ़ता से है। **368 :** येह कलाम बराहे अदब व तवाज़ोअ़ है, मा'ना येह हैं कि मैं अपनी ज़ात से ग़ैब नहीं जानता जो जानता हूं वोह अल्लाह तआ़ला की इ़त्तिलाअ़ और उस की अ़ता से। (خازن) हज़रते मुर्तजिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया भलाई जम्अ़ करना और बुराई न पहुंचना उसी के इख़्तियार में हो सकता है जो ज़ाती क़ुदरत रखे और ज़ाती क़ुदरत वोही रखेगा जिस का इ़ल्म भी ज़ाती हो क्यूं कि जिस की एक सिफ़त ज़ाती है उस के तमाम सिफ़ात ज़ाती, तो मा'ना येह हुए कि अगर मुझे ग़ैब का इ़ल्म ज़ाती होता तो क़ुदरत भी ज़ाती होती और मैं भलाई जम्अ़ कर लेता और बुराई न पहुंचने देता, भलाई से मुराद राहतें और काम्याबियां और दुश्मनों पर ग़लबा है और बुराइयों से तंगी व तक्लीफ़ और दुश्मनों का ग़ालिब आना है। येह भी हो सकता है कि भलाई से मुराद सरकशों का मुतीअ़ और ना फ़रमानों का फ़रमां बरदार और काफ़िरों का मोमिन कर लेना हो और बुराई से बद बख़्त लोगों का बा वुजूद दा'वत के महरूम रह जाना, तो हासिले कलाम येह होगा कि अगर मैं नफ़्अ़ व ज़रर का ज़ाती इख़्तियार रखता तो ऐ मुनाफ़िक़ीन व काफ़िरीन ! तुम्हें सब को मोमिन कर डालता और तुम्हारी कुफ़्री हालत देखने की तक्लीफ़ मुझे न पहुंचती। **369 :** सुनाने वाला हूं काफ़िरों को **370 :** इ़क्रिमा का क़ौल है कि इस आयत में ख़िताब आ़म है हर एक शख़्स को और मा'ना येह हैं कि अल्लाह वोही है जिस ने तुम में से हर एक को एक जान से या'नी उस के बाप से पैदा किया और उस की जिन्स से उस की बीबी को बनाया फिर जब वोह दोनों जम्अ़ हुए और ह़म्ल ज़ाहिर हुवा और उन दोनों ने तन्दुरुस्त बच्चे की दुआ़ की और ऐसा बच्चा मिलने पर अदाए शुक्र का अ़ह्द किया फिर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें वैसा ही बच्चा इ़नायत फ़रमाया। उन की हालत येह हुई कि कभी तो वोह उस बच्चे को त़बाएअ़ की त़रफ़ निस्बत करते हैं जैसे दह्रियों का हाल है, कभी सितारों की त़रफ़ जैसा कवाकिब परस्तों का त़रीक़ा है, कभी बुतों की त़रफ़ जैसा बुत परस्तों का दस्तूर है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वोह उन के इस शिर्क से बरतर है। (کبیر) **371 :** या'नी उस के बाप की जिन्स से उस की बीबी बनाई। **372 :** मर्द का छाना किनाया है जिमाअ़ करने से और हलका सा पेट रहना इब्तिदाए ह़म्ल की हालत का बयान है। **373 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस आयत में क़ुरैश को ख़िताब है जो क़ुसय की औलाद हैं उन से फ़रमाया गया कि तुम्हें एक शख़्स क़ुसय से पैदा किया और उस की बीबी उसी की जिन्स से अ़रबी क़ुरशी की ताकि उस से चैन व आराम पाए फिर जब उन की दरख़्वास्त के मुताबिक़ उन्हें तन्दुरुस्त बच्चा इ़नायत किया तो उन्हों ने अल्लाह की इस अ़ता में दूसरों को शरीक बनाया और अपने चारों बेटों का नाम अ़ब्दे मनाफ़, अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा, अ़ब्दे क़ुसय और अ़ब्दुद्दार रखा। **374 :** या'नी बुतों को जिन्हों ने कुछ नहीं बनाया।

www.dawateislami.net

يُخْلَقُوْنَ ﴿۱۹۱﴾ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَاۤ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۲﴾ وَاِنْ

खुद बनाए हुए हैं और न वोह उन को कोई मदद पहुंचा सकें और न अपनी जानों की मदद करें[375] और अगर

تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ

तुम उन्हें[376] राह की त़रफ़ बुलाओ तो तुम्हारे पीछे न आएं[377] तुम पर एक सा है चाहे उन्हें पुकारो या

صَامِتُوْنَ ﴿۱۹۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ

चुप रहो[378] बेशक वोह जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी त़रह़ बन्दे हैं[379] तो उन्हें पुकारो

فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَاۤ

फिर वोह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो क्या उन के पाउं हैं जिन से चलें

اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَاۤ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَاۤ اَمْ لَهُمْ

या उन के हाथ हैं जिन से गिरिफ़्त करें या उन के आंखें हैं जिन से देखें या उन के

اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۱۹۵﴾

कान हैं जिन से सुनें[380] तुम फ़रमाओ कि अपने शरीकों को पुकारो और मुझ पर दाउं चलो और मुझे मोहलत न दो[381]

اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖۗ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۹۶﴾ وَالَّذِيْنَ

बेशक मेरा वाली अल्लाह है जिस ने किताब उतारी[382] और वोह नेकों को दोस्त रखता है[383] और जिन्हें

375 : इस में बुतों की बे क़द्री और बुत्लाने शिर्क का बयान और मुश्रिकीन के कमाले जह्ल का इज़्हार है और बताया गया है कि इ़बादत का मुस्तह़िक़ वोही हो सकता है जो आ़बिद को नफ़्अ़ पहुंचाने और उस का ज़रर दफ़्अ़ करने की क़ुदरत रखता हो। मुश्रिकीन जिन बुतों को पूजते हैं उन की बे क़ुदरती इस दरजे की है कि वोह किसी चीज़ के बनाने वाले नहीं किसी चीज़ के बनाने वाले तो क्या होते ख़ुद अपनी ज़ात में दूसरे से बे नियाज़ नहीं, आप मख़्लूक़ हैं, बनाने वाले के मोह़ताज हैं, इस से बढ़ कर बे इख़्तियारी येह है कि वोह किसी की मदद नहीं कर सकते और किसी की क्या मदद करें ख़ुद उन्हें ज़रर पहुंचे तो दफ़्अ़ नहीं कर सकते, कोई उन्हें तोड़ दे, गिरा दे, जो चाहे करे, वोह उस से अपनी ह़िफ़ाज़त नहीं कर सकते ऐसे मजबूर बे इख़्तियार को पूजना इन्तिहा दरजे का जह्ल है। **376 :** या'नी बुतों को **377 :** क्यूं कि वोह न सुन सकते हैं न समझ सकते हैं **378 :** वोह बहर ह़ाल आ़जिज़ हैं, ऐसे को पूजना और मा'बूद बनाना बड़ी बे ख़िरदी (बे अ़क़्ली) है **379 :** और अल्लाह के मम्लूक व मख़्लूक़, किसी त़रह़ पूजने के क़ाबिल नहीं, इस पर भी अगर तुम उन्हें मा'बूद कहते हो **380 :** येह कुछ भी नहीं, तो फिर अपने से कमतर को पूज कर क्यूं ज़लील होते हो। **381 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब बुत परस्ती की मज़म्मत की और बुतों की आ़जिज़ी और बे इख़्तियारी का बयान फ़रमाया तो मुश्रिकीन ने धम्काया और कहा कि बुतों को बुरा कहने वाले तबाह हो जाते हैं, बरबाद हो जाते हैं, येह बुत उन्हें हलाक कर देते हैं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई कि अगर बुतों में कुछ क़ुदरत समझते हो तो उन्हें पुकारो ! और मेरी नुक़्सान रसानी में उन से मदद लो और तुम भी जो मक्रो फ़रेब कर सकते हो वोह मेरे मुक़ाबले में करो और इस में देर न करो, मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मा'बूदों की कुछ भी परवाह नहीं और तुम सब मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। **382 :** और मेरी त़रफ़ वह्य भेजी और मेरी इ़ज़्ज़त की। **383 :** और उन का ह़ाफ़िज़ो नासिर है, उस पर भरोसा रखने वालों को मुश्रिकीन वग़ैरा का क्या अन्देशा तुम और तुम्हारे मा'बूद मुझे कुछ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते।

www.dawateislami.net

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَ لَاۤ اَنْفُسَهُمْ یَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۷﴾ وَ

उस के सिवा पूजते हो वोह तुम्हारी मदद नहीं कर सकते और न ख़ुद अपनी मदद करें[384] और

اِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا یَسْمَعُوْا ؕ وَ تَرٰىهُمْ یَنْظُرُوْنَ اِلَیْكَ وَ هُمْ

अगर उन्हें राह की तरफ़ बुलाओ तो न सुनें और तू उन्हें देखे कि वोह तेरी तरफ़ देख रहे हैं[385] और उन्हें

لَا یُبْصِرُوْنَ ﴿۱۹۸﴾ خُذِ الْعَفْوَ وَ اْمُرْ بِالْعُرْفِ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۱۹۹﴾

कुछ भी नहीं सूझता ऐ महबूब मुआफ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो

وَ اِمَّا یَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۰۰﴾

और ऐ सुनने वाले अगर शैतान तुझे कोई कोंचा दे (किसी बुरे काम पर उक्साए)[386] तो अल्लाह की पनाह मांग बेशक वोही सुनता जानता है

اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓىٕفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ

बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी ख़याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की

مُّبْصِرُوْنَ ﴿۲۰۱﴾ۚ وَ اِخْوَانُهُمْ یَمُدُّوْنَهُمْ فِی الْغَیِّ ثُمَّ لَا یُقْصِرُوْنَ ﴿۲۰۲﴾ وَ اِذَا

आंखें खुल जाती हैं[387] और वोह जो शैतानों के भाई हैं[388] शैतान उन्हें गुमराही में खींचते हैं फिर गई (कोताही) नहीं करते और ऐ महबूब

لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰیَةٍ قَالُوْا لَوْ لَا اجْتَبَیْتَهَا ؕ قُلْ اِنَّمَاۤ اَتَّبِعُ مَا یُوْحٰۤى اِلَیَّ مِنْ

जब तुम उन के पास कोई आयत न लाओ तो कहते हैं तुम ने दिल से क्यूं न बनाई तुम फ़रमाओ मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरी तरफ़ मेरे रब से

رَّبِّیْ ۚ هٰذَا بَصَآىٕرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰۳﴾ وَ

वह्य होती है येह तुम्हारे रब की तरफ़ से आंखें खोलना है और हिदायत और रहमत मुसल्मानों के लिये और

اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۲۰۴﴾ وَ اذْكُرْ

जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रहम हो[389] और अपने रब

384 : तो मेरा क्या बिगाड़ सकेंगे। **385 :** क्यूं कि बुतों की तस्वीरें इस शक्ल की बनाई जाती थीं जैसे कोई देख रहा है। **386 :** कोई वस्वसा डाले **387 :** और वोह उस वस्वसे को दूर कर देते हैं और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजूअ़ करते हैं। **388 :** या'नी कुफ़्फ़ार। **389 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जिस वक़्त कुरआने करीम पढ़ा जाए ख़्वाह नमाज़ में या ख़ारिजे नमाज़ उस वक़्त सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब है, जुम्हूर सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم इस तरफ़ हैं कि येह आयत मुक़्तदी के सुनने और ख़ामोश रहने के बाब में है और एक क़ौल येह है कि इस में ख़ुत्बा सुनने के लिये गोश बर आवाज़ होने (ख़ुत्बा बग़ैर सुनने) और ख़ामोश रहने का हुक्म है और एक क़ौल येह है कि इस से नमाज़ व ख़ुत्बा दोनों में बग़ौर सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब साबित होता है। हज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की हदीस में है आप ने कुछ लोगों को सुना कि वोह नमाज़ में इमाम के साथ क़िराअत करते हैं तो नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फ़रमाया क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुम इस आयत के मा'ना समझो। ग़रज़ इस आयत से क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम (नमाज़े बा जमाअ़त में इमाम के पीछे क़िराअत) की मुमानअ़त साबित होती है और कोई हदीस ऐसी नहीं है जिस को इस के मुक़ाबिल हुज्जत क़रार दिया जा सके। क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम की ताईद में सब से ज़ियादा

www.dawateislami.net

رَبَّكَ فِیْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّ خِیْفَةً وَّ دُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ

को अपने दिल में याद करो[390] ज़ारी (आजिज़ी) और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुब्ह

وَ الْاٰصَالِ وَ لَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِیْنَ ﴿۲۰۵﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا

और शाम[391] और ग़ाफ़िलों में न होना बेशक वोह जो तेरे रब के पास हैं[392]

یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ یُسَبِّحُوْنَهٗ وَ لَهٗ یَسْجُدُوْنَ ﴿۲۰۶﴾ السجدة

उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और उस की पाकी बोलते और उसी को सज्दा करते हैं[393]

اٰیاتها ۷۵ | ۸ سُوْرَةُ الْاَنْفَال مَدَنِیَّةٌ ۸۸ | رکوعاتها ۱۰

सूरए अन्फ़ाल मदनिय्या है, इस में पछत्तर आयतें और दस रुकूअ़ हैं[1]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला

یَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ

ऐ महबूब तुम से ग़नीमतों को पूछते हैं[2] तुम फ़रमाओ ग़नीमतों के मालिक अल्लाह व रसूल हैं[3] तो अल्लाह से डरो[4] और

ए'तिमाद जिस ह़दीस पर किया जाता है वोह येह है : "لَاصَلٰوةَ اِلَّا بِفَاتِحَةِ الْكِتَاب" मगर इस ह़दीस से क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम का वुजूब तो साबित नहीं होता सिर्फ़ इतना साबित होता है कि बिग़ैर फ़ातिह़ा के नमाज़ कामिल नहीं होती तो जब कि ह़दीस : "قِرَاءَةُ الْاِمَامِ لَهٗ قِرَاءَةٌ" से साबित है कि इमाम का क़िराअत करना ही मुक़्तदी का क़िराअत करना है तो जब इमाम ने क़िराअत की और मुक़्तदी साकित रहा तो उस की क़िराअत हुक्मिया हुई उस की नमाज़ बे क़िराअत कहां रही, येह क़िराअत हुक्मिया है तो इमाम के पीछे क़िराअत न करने से क़ुरआन व ह़दीस दोनों पर अ़मल हो जाता है और क़िराअत करने से आयत का इत्तिबाअ़ तर्क होता है, लिहाज़ा ज़रूरी है कि इमाम के पीछे फ़ातिह़ा वग़ैरा कुछ न पढ़े। **390 :** ऊपर की आयत के बा'द इस आयत के देखने से मा'लूम होता है कि क़ुरआन शरीफ़ सुनने वाले को ख़ामोश रहना और बे आवाज़ निकाले दिल में ज़िक्र करना या'नी अ़ज़मतो जलाले इलाही का इस्तिह़ज़ार (मौजूद होना) लाज़िम है كَذَافِیْ تَفْسِیر ابن جَرِیْر । इस से इमाम के पीछे बुलन्द या पस्त आवाज़ से क़िराअत की मुमानअ़त साबित होती है और दिल में अ़ज़मतो जलाले ह़क़ का इस्तिह़ज़ार ज़िक्रे क़ल्बी है। **मस्अला :** ज़िक्र बिल जह्र और ज़िक्र बिल इख़्फ़ा दोनों में नुसूस वारिद हैं जिस शख़्स को जिस क़िस्म के ज़िक्र में ज़ौक़ो शौक़े ताम व इख़्लासे कामिल मुयस्सर हो उस के लिये वोही अफ़्ज़ल है, كذافی ردالمحتار वग़ैरा। **391 :** शाम अ़स्र व मग़रिब के दरमियान का वक़्त है, इन दोनों वक़्तों में ज़िक्र अफ़्ज़ल है क्यूं कि नमाज़े फ़ज्र के बा'द तुलूए आफ़्ताब तक और इसी त़रह़ नमाज़े अ़स्र के बा'द ग़ुरूबे आफ़्ताब तक नमाज़ मम्नूअ़ है इस लिये इन वक़्तों में ज़िक्र मुस्तह़ब हुवा ताकि बन्दे के तमाम अवक़ात क़ुरबत व त़ाअ़त में मश्ग़ूल रहें। **392 :** या'नी मलाइकए मुक़र्रबीन **393 :** येह आयत आयाते सज्दा में से है, इन के पढ़ने और सुनने वाले दोनों पर सज्दा लाज़िम हो जाता है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : जब आदमी आयते सज्दा पढ़ कर सज्दा करता है तो शैत़ान रोता है और कहता है अफ़्सोस बनी आदम को सज्दे का हुक्म दिया गया वोह सज्दा कर के जन्नती हुवा और मुझे सज्दे का हुक्म दिया गया तो मैं इन्कार कर के जहन्नमी हो गया। **1 :** येह सूरत मदनी है बजुज़ सात आयतों के जो मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुईं और "اِذْ یَمْكُرُ بِكَ الَّذِیْنَ" से शुरूअ़ होती हैं, इस में पछत्तर आयतें और एक हज़ार पछत्तर कलिमे और पांच हज़ार अस्सी हुरूफ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : उन्हों ने फ़रमाया कि येह आयत हम अहले बद्र के ह़क़ में नाज़िल हुई जब ग़नीमत के मुआ़मले में हमारे दरमियान इख़्तिलाफ़ पैदा हुवा और बद मज़गी की नौबत आ गई तो अल्लाह तआ़ला ने मुआ़मला हमारे हाथ से निकाल कर अपने रसूल صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के सिपुर्द किया। आप ने वोह माल बराबर तक़्सीम कर दिया। **3 :** जैसे चाहें तक़्सीम फ़रमाएं। **4 :** और बाहम इख़्तिलाफ़ न करो।

www.dawateislami.net